श्रीमर्तः

भूमिका ।

संवत् १९०८ (१८५१ ईसवी) में संस्कृत व्याकरण की उपक्रमणिका बङ्गभाषा में पहलेपहल प्रकाशित हुई थी। पण्डितप्रवर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महोदय ने संस्कृतशिक्षार्थी कोमलमति बालकों को सुगमता के साथ संस्कृत व्याकरण की मुख्य मुख्य बातें सिखलाने के लिए ही इस व्याकरण की रचना की थी। जिनका हृदय किसी का कष्ट देखने से सदा पिघल जाता था, दूसरे के उपकार के लिए अपना सर्व्वस्व देने में जो कभी हिचकते न थे और दूसरों का कष्ट दूर करना जिनके जीवन का प्रधान व्रत था, उन्हीं दयार्णव संस्कृत काव्य, व्याकरण, दर्शनादि के परमज्ञाता विद्यावारिधि पण्डित ईश्वरचन्द्रजी ने अल्पवयस्क बालकों के संस्कृत व्याकरण सीखने का कष्टलाघव करने के लिए मानों दैवबल से बली होकर यह व्याकरण लिखा था। संस्कृतशिक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक परम-उपयोगी है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

हिन्दीभाषाभाषी संस्कृतशिक्षार्थी बालकों के लिए और विशेषकर जो लड़के मैट्रिक्युलेशन परीक्षा में संस्कृत लेते हैं, उनके लिए संस्कृत व्याकरण सीखने के निमित्त यह बड़ी ही उपयोगी पुस्तक समझी जाती है। हिन्दी-भाषा में इसका अनुवाद भी हो चुका है, किन्तु आजकल की परीक्षा के उपयोग की दृष्टि से इसका अनुवाद या संस्करण अबतक किसी ने भी नहीं निकाला। यह अभाव दूरकरने की इच्छा से ही हमने इसका नया संस्करण किया है। इस व्याकरण को अँगरेज़ी विद्यालयों के छात्रों में उपयोगी बनाने के निमित्त बहुत चेष्टा की गई है और उपक्रमणिका पढ़कर व्याकरण कौमुदी का प्रथम भाग पढ़ने की आवश्यकता न रहे, इस उद्देश्य से कौमुदी प्रथम भाग की आवश्यक ज्ञातव्य बातें प्रायः सभी इसमें दी गई हैं—कुछ पाद टिप्पणी (Foot notes) में और कुछ परिशिष्ट में। अँगरेज़ी से संस्कृत अनुवाद करने में सहायता मिलने के लिए प्रत्येक धातु के साथ अनुशीलनी (Exercise) भी दी गई हैं। अँगरेज़ी विद्यालय की तृतीय और चतुर्थ श्रेणियों में इसको सम्पूर्ण पढ़ा देने से प्रथम और द्वितीय श्रेणियों में कौमुदी के द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ भाग सुगमता के साथ सिखाये जा सकते हैं।

जिनके लिए यह पुस्तक बनाई गई है यदि इससे उनका कुछ भी उपकार हुआ तो मैं अपने को कृतार्थ समझूँगा। शुभमिति।

कलकत्ता । श्रीनारायणचन्द्र चट्टोपाध्याय ।

तृतीयावृत्ति की विज्ञप्ति।



पण्डितवर विद्यासागरजी की उपक्रमणिका की सरलता तथा सुगमता को ज्यों की त्यों रखकर हमने इस आवृत्ति में संस्कृतशिक्षार्थियों के अवश्य ज्ञातव्य बहुतसी नयी बातें दी हैं। प्रथम शिक्षार्थियों को घबड़ाना न पड़े इस अभिप्राय से अतिरिक्त विषयों के कुछ पादटीकाओं (Foot notes) में और अधिकांश परिशिष्ट में दिये गये हैं। अभ्यास की सुगमता के लिए इस संस्करण में पहले से अधिक, सरल संस्कृत पाणिनीय-सूत्र दिये गये हैं और उनकी व्याख्या पादटिप्पणी में दी गई है। पहले से अनुशीलनी की संख्या भी बढ़ गई है और आत्मनेपदी विभक्ति और धातुरूप ऐसे प्रबन्ध से दिये गये हैं जिसमें बालकों को कष्ट झेलना न पड़े। परिशिष्ट में अतिरिक्त सन्धि आदि और नये शब्दों के उपरान्त कईएक परस्मैपदी, आत्मनेपदी तथा उभयपदी धातुओं के रूप बढ़ा दिये गये हैं और संस्कृत शिक्षार्थियों के दिग्दर्शन के निमित्त धातुरूपादर्श दिया गया है जिसमें बहुतसे प्रचलित धातु अँगरेज़ी अर्थ तथा लटादि छः लकारों के रूपादि सहित हैं। इतनी नयी बातें देने पर भी मैंने विद्यासागरजी की सरलता और सुगमता की हानि नहीं की है, यही इस उपक्रमणिका की सबसे अधिक विशिष्टता है।

यह पुस्तक सभी संस्कृतशिक्षार्थियों के तथा परीक्षार्थियों के लिए परम-उपयोगी है। अँगरेज़ी विद्यालयों की तृतीय तथा चतुर्थ अथवा उनके सम-श्रेणियों में इसको पढ़ा देने से मैट्रिक्यूलेशन की संस्कृत-परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन नहीं होगा। शुभमिति।

गाज़ीपुर,
संवत् १९८४

श्री नारायणचन्द्रदेव शर्म्मा।

सूचीपत्र।

॥ ओ३म् ॥

संस्कृत-व्याकरण की

उपक्रमणिका ।



वर्ण-निर्णय

(Distinction of Letters.)

१। अ इ उ, क् ख् ग् इत्यादि एक-एक को वर्ण (Letter) कहते हैं। वर्ण दो प्रकार के हैं, स्वर (Vowel) और व्यञ्जन (Consonant)।

स्वरवर्ण (अच्, Vowels)।

२। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ, ये तेरह स्वरवर्ण (अच्) हैं (१)। स्वर दो प्रकार के हैं, ह्रस्व अथवा लघु (Short), और दीर्घ अथवा गुरु (Long)। अ इ उ ऋ ऌ, ये पाँच ह्रस्व (लघु) स्वर (Short Vowels) हैं। आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ, ये आठ दीर्घ (गुरु) स्वर (Long Vowels) हैं। ऌ दीर्घ नहीं होता (२)।

---

(१) "स्वयं राजन्ते इति स्वराः"। जो वर्ण दूसरे वर्ण का सहारा न लेकर स्वयं उच्चारित होते हैं उनको स्वर-वर्ण कहते हैं। (२) मुग्धबोध-कर्त्ता वोपदेव के अनुसार (दीर्घ) ॡ होता है। यथा, शक्ॡदन्तैः। वास्तव में ऐसा पाणिनि के मत में नहीं होता।

व्यञ्जन-वर्ण (हल्, Consonants) ।

३ । क् ख् ग् घ् ङ्, च् छ् ज् झ् ञ्, ट् ठ् ड् ढ् ण्, त् थ् द् ध् न्, प् फ् ब् भ् म्, य् र् ल् व्, श् ष् स् ह्, (ं), (ः), ये तेंतीस व्यञ्जन-वर्ण (१) (हल्) हैं। इनमें से क् से लेकर म् तक पचीस वर्णों को स्पर्शवर्ण (Mutes) (२) कहते हैं। स्पर्शवर्ण पाँच वर्गों (Groups) में विभक्त हैं। क् ख् ग् घ् ङ्, ये पाँच कवर्ग (कु) हैं। च् छ् ज् झ् ञ्, ये पाँच चवर्ग (चु) हैं। ट् ठ् ड् ढ् ण्, ये पाँच टवर्ग (टु) हैं। त् थ् द् ध् न्, ये पाँच तवर्ग (तु) हैं। प् फ् ब् भ् म्, ये पाँच पवर्ग (पु) हैं। य् र् ल् व्, ये चार अन्तःस्थ वर्ण (Intermediates, Semi-Vowels) (३) और श् ष् स् ह्, ये चार ऊष्मवर्ण (Sibilants) (४) कहलाते हैं। (ं) अनुस्वार, (ः) विसर्ग, इन दोनों वर्णों को और ᳵक ᳵख, यह जिह्वामूलीय और ᳶप ᳶफ, इस उपध्मानीय को भी अयोगवाह (५) कहते हैं।

---

(१) जो वर्ण स्वर-वर्ण की सहायता के विना स्वयं उच्चारित नहीं हो सकते उन्हें व्यञ्जनवर्ण कहते हैं। (२) "कादयो मावसानाः स्पर्शाः।" जिह्वा के अग्र, उपाग्र, मध्य तथा मूल, इन स्थानों को स्पर्श करके उच्चारित होते हैं, इसलिए इनको स्पर्शवर्ण कहते हैं। (३) "यरलवा अन्तःस्थाः।" स्पर्शवर्ण और ऊष्मवर्ण के बीच में हैं, इसलिए इनको अन्तःस्थवर्ण कहते हैं। (४) श् ष् स् ह्, इनको उच्चारण करने में मुँह से विशेष करके ऊष्मा (वायु) निकलती है, इसलिए इन्हें ऊष्मवर्ण कहते हैं। (५) पाणिनि ने स्वर और व्यञ्जन के विषय में जो सब संज्ञा की हैं, उनमें इन दोनों का और जिह्वामूलीय, उपध्मानीय का योग (उल्लेख) नहीं है, इसलिए 'अयोग' और उल्लेख न रहने पर भी ये प्रयोग को निर्वाह करते हैं, इसलिए 'वाह' है। इन दोनों से धर्म्माक्रान्त होने के कारण अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय और उपध्मानीय, ये चारों अयोगवाह नाम को प्राप्त हुए हैं।

वर्णों का उच्चारणस्थान।

(Seats of Utterance of Letters.)

४। अ आ ह् क ख् ग् घ् ङ् (ः) विसर्ग, इनके उच्चारण का स्थान कण्ठ (Throat) है, इसलिए इनको कण्ठ्यवर्ण (Gutturals) कहते हैं (१)।

५। ᳵक् ᳵख्, इनका उच्चारण स्थान जिह्वामूल (Root of the tongue) है, इसलिए इनको जिह्वामूलीयवर्ण (Linguæ-radicals) कहते हैं (२)।

६। इ ई च् छ् ज् झ् ञ् य् श्, इनका उच्चारणस्थान तालु (Palate) है, इसलिए इनको तालव्यवर्ण (Palatals) कहते हैं (३)।

७। ऋ ॠ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्, इनका उच्चारणस्थान मूर्द्धा (Cerebellum) है, इसलिए इन्हें मूर्द्धन्यवर्ण (Cerebrals) कहते हैं (४)।

८। ऌ त् थ् द् ध् न् ल् स्, इनका उच्चारणस्थान दन्त (Teeth) है, इसलिए इन्हें दन्त्यवर्ण (Dentals) कहते हैं (५)।

९। उ ऊ प् फ् ब् भ् म्, और ᳵप् ᳵफ्, यह उपध्मानीय हैं। इनका उच्चारणस्थान ओष्ठ (Lips) है, इसलिए इन्हें ओष्ठ्य-वर्ण (Labials) कहते हैं (६)।

१०। ए ऐ, इनका उच्चारणस्थान कण्ठ और तालु है, इसलिए

---

(१) अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः, इस सूत्र के अनुसार अ आ ह् क् ख् ग् घ् ङ्, इनके उच्चारण का स्थान कण्ठ है। किन्तु शिक्षाग्रन्थ का निर्देष समीचीन बोध होने के कारण विद्यासागरजी ने अ आ ह्, इनके उच्चारण का स्थान कण्ठ, और कवर्ग का जिह्वामूल निर्देष किया है। (२) जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्। (३) इचुयशानां तालुः। (४) ऋटुरषाणां मूर्द्धा। (५) ऌतुलसानां दन्ताः। (६) उपूपध्मानीयानामोष्ठौ।

इनको कण्ठ्यतालव्यवर्ण (Gutturo-palatals) कहते हैं (१)।

११। ओ औ, इनका उच्चारणस्थान कण्ठ और ओष्ठ है, इसलिए इसको कण्ठ्यौष्ठ्यवर्ण (Gutturo-labials) कहते हैं (२) ।

१२। (अन्तःस्थ) व् का उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ है, इसलिए इसको दन्त्यौष्ठ्यवर्ण (Dento-labials) कहते हैं (३)।

१३। (ं) अनुस्वार का उच्चारणस्थान नासिका (Nose) है, इसलिए इसको अनुनासिक (Nasal) वर्ण कहते हैं (४) ।

१४। (ः) विसर्ग आश्रयस्थानभागी है अर्थात् यह जिस स्वरवर्ण के आगे रहता है, उस स्वरवर्ण का उच्चारणस्थान ही उसका उच्चारणस्थान होता है। परन्तु पाणिनि मत में इसका कण्ठ ही स्थान है, और दीक्षित मत में भी ।

१५। ङ् ञ् ण् न् म्, ये सब जिह्वामूल, तालु आदि जैसे नासिका से भी उच्चरित होते हैं, इसलिए इन्हें अनुनासिकवर्ण (Nasals) भी कहते हैं (५) ।

Exercise 1. (अनुशीलनी, अभ्यासार्थ प्रश्न)

(१) स्वरवर्ण जब व्यञ्जनवर्ण में मिलते हैं उनके हर एक का रूप कैसा होता है दिखलाओ। व्यञ्जनवर्ण में अकार का योग कैसे जाना जाता है ? स्वरवर्ण कितने हैं ?

---

(१) एदैतोः कण्ठतालुः । (२) ओदौतोः कण्ठोष्ठम् । (३) वकारस्य दन्तोष्ठम् । (४) नासिका अनुस्वारस्य । (५) यमङ्णनानां नासिका च ।

(२) व्यञ्जनवर्ण का स्वरूप कैसा है, लिखो। व्यञ्जनवर्णों में प्रायः अकार लगाकर लिखा जाता है, क्यों ? ऐसा लिखना ठीक है या नहीं ? कारण दिखाकर बतलाओ।

(३) स्वरवर्ण कै प्रकार के होते हैं ? हर एक प्रकार का नाम बताओ और उसमें कौन कौन स्वर हैं, कहो। स्वरवर्ण का लक्षण क्या है ?

(४) व्यञ्जनवर्ण कितने हैं ? वे कै प्रकार के होते हैं ? उनके नाम बताओ और उनमें से किसी का कोई विभाग हो तो नाम सहित वर्णन करो। व्यञ्जन का लक्षण क्या है ? यदि अ आ आदि को व्यञ्जन और क् ख् आदि को स्वर कहा जाता तो क्या दोष होता ?

(५) अयोगवाहवर्ण कौनसे हैं ? उन्हें क्यों अयोगवाहवर्ण कहते हैं ! अन्तःस्थ, ऊष्म तथा स्पर्शवर्णों को अँगरेज़ी में क्या कहा जाता है ?

(६) आ, ई, ऊ, ए, ओ, ऋ, स्, ष्, श्, य्, र्, ल्, व्, व्, ह्, घ्, उच्चारण के स्थान के अनुसार इनके हर एक का संस्कृत तथा अँगरेज़ी नाम बताओ।

(७) अनुनासिकवर्ण कौन-कौन हैं ? वे क्यों अनुनासिक कहलाते हैं ? विसर्ग के उच्चारण का स्थान क्या है ? उदाहरण देकर समझाओ।

(८) राम, हरि, विष्णु, गणेश, इन शब्दों का वर्ण-विश्लेषण करो। (्) इस चिह्न का नाम क्या है ?

(९) युक्ताक्षर किसे कहते हैं ? स्वरवर्ण में युक्ताक्षर है या नहीं ? (र् म् म् अ), (र् द् ध् अ), (क् ष् अ), (ज् न् अ), (क् ष् म् ई), (र् क् इ), (द् य् उ), पूर्ववर्ती हर एक बन्धनीस्थित वर्णों से एक-एक युक्ताक्षर बनाकर लिखो।

N. B.:—स्वरवर्ण का व्यवधान नहीं रहने पर दो वा दो से अधिक व्यञ्जनवर्ण एकसाथ संयुक्त होने से (अर्थात् मिल जाने से) उसे संयुक्त-वर्ण अथवा युक्ताक्षर कहते हैं। यथा, क्+व्+अ=क्व, ग्+म्+ई=ग्मी, त्+र्+इ=त्रि, र्+क्+ओ=र्को इत्यादि। क्व, ग्मी, त्रि, र्को संयुक्तवर्ण वा युक्ताक्षर हैं।

(१०) अनुस्वार, विसर्ग और ऌ स्वर हैं अथवा व्यञ्जन ? क्ष एक स्वतन्त्र वर्ण है या नहीं ? कारण दिखलाकर बताओ।

सन्धि-प्रकरण।

(Combination of Final and Initial Letters.)

सन्धि।

दो वर्ण परस्पर अत्यन्त सन्निहित (निकटस्थ) होने पर मिल जाते हैं। वर्णों के इस मिलने को सन्धि कहते हैं। सन्धि तीन प्रकार की हैं; स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि और विसर्गसन्धि। स्वरवर्ण के साथ स्वरवर्ण की जो सन्धि होती है उसको स्वर-सन्धि (Combination of Vowels) कहते हैं। व्यञ्जनवर्ण के साथ व्यञ्जनवर्ण की, व्यञ्जनवर्ण के साथ स्वरवर्ण की अथवा स्वरवर्ण के साथ व्यञ्जनवर्ण की जो सन्धि होती है उसको व्यञ्जन-सन्धि (Combination of Consonants) कहते हैं। विसर्ग के साथ स्वरवर्ण अथवा व्यञ्जनवर्ण की जो सन्धि होती है उसे विसर्गसन्धि (Combination of Visargas) कहते हैं।

N. B.:—सन्धि होने से कभी दो वर्ण मिल जाते हैं, कभी पूर्ववर्ण विकृत होता है, कभी परवर्ण विकृत होता है, कभी दोनों वर्ण विकृत होते हैं, कभी पूर्ववर्ण का लोप होता है, कभी परवर्ण का लोप होता है। यथा; महान्+आग्रहः=महानाग्रहः; उत्+चारयति=उच्चारयति; याच्+ना=याच्ञा; महान्+शब्दः=महाञ्छब्दः; सः+आगतः=स आगतः; गुरो+अनुमन्यस्व=गुरोऽनुमन्यस्व। प्रकृत प्रस्ताव में विसर्गसन्धि व्यञ्जनसन्धि के ही अन्तर्गत है।

स्वरसन्धि ।

(Combination of Vowels.)

१। "अकः सवर्णे दीर्घः" (१)। अ के परे अ अथवा आ होवे तो दोनों मिलकर आ होता है; यथा, शश + अङ्कः = शशाङ्कः; उत्तम + अङ्गम् = उत्तमाङ्गम्; अद्य + अवधि = अद्यावधि; रत्न+ आकरः = रत्नाकरः; देव+आलयः = देवालयः; कुश+आसनम् = कुशासनम् (२)।

२। "अकः सवर्णे दीर्घः"। आ के परे अ अथवा आ होवे तो

---

(१) दो सवर्ण स्वर (समान स्वर) अत्यन्त सन्निहित होने से दोनों मिलकर दीर्घ हो जाता है। अर्थात् अ+अ वा आ=आ (नियम १), आ+अ वा आ=आ (नियम २); इ+इ वा ई=ई (नियम ३), ई+इ वा ई=ई (नियम ४); उ+उ वा ऊ=ऊ (नियम ५), ऊ+उ वा ऊ=ऊ (नियम ६); ऋ+ऋ=ॠ (नियम ७); ऋ+ऌ=ॠ (नियम ७ की पादटीका)। प्रयोजनवश ऋ, ऌ सवर्ण माने जाते हैं।

(२) निम्नलिखित कई एक शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं अर्थात् सन्धि के नियम के अनुसार सिद्ध नहीं होते—सार+अङ्गः=सारङ्गः (चातकादि, a kind of bird; किन्तु साराङ्गः वाद्ययन्त्र विशेष); सीम+अन्तः= सीमन्तः (केशविन्यासः, the white line left by the parting of the hair of the head किन्तु सीमान्तः सीमा का शेष boundary); कुल+अटा =कुलटा (an ill-famed woman); मार्त्त+अण्डः=मार्त्तण्डः(the sun); शक+ अन्धुः=शकन्धुः (कुआँ, a well); कर्क+अन्धुः=कर्कन्धुः; सम+अर्थः=समर्थः; सम+अशनम्=समशनम्; अर्द्ध+अशनम्=अर्द्धशनम्; पर+अक्षः=परोक्षः; अन्य+अन्यः=अन्योन्यः। यहाँ अ+अ=आ नहीं हुआ।

दोनों मिलकर आ होता है; यथा दया+अर्णवः=दयार्णवः; महा+अर्घः=महार्घः; लता + अन्तः = लतान्तः; महा + आशयः= महाशयः; गदा+आघातः = गदाघातः; विद्या + आलयः= विद्यालयः ।

३ । "अकः सवर्णे दीर्घः" । इ के परे इ अथवा ई होवे तो दोनों मिलकर ई होता है; यथा, गिरि+इन्द्रः=गिरीन्द्रः; अति + इव=अतीव; प्रति + इतिः = प्रतीतिः; कवि + ईश्वरः = कवीश्वरः; क्षिति + ईशः = क्षितीशः; प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा ।

४ । "अकः सवर्णे दीर्घः" । ई के परे इ अथवा ई होवे तो दोनों मिलकर ई होता है; यथा, मही+इन्द्रः=महीन्द्रः; महती+ इच्छा=महतीच्छा; लक्ष्मी+ईशः=लक्ष्मीशः; पृथ्वी + ईश्वरः =पृथ्वीश्वरः ।

५ । 'अकः सवर्णे दीर्घः" । उ के परे उ अथवा ऊ होवे तो दोनों मिलकर ऊ होता है; यथा, विधु + उदयः = विधूदयः; मधु+ उत्सवः = मधूत्सवः; स्वादु + उदकम् = स्वादूदकम्; साधु + उक्तम्= साधूक्तम्; लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः; गुरु + ऊहः = गुरूहः ।

६ । "अकः सवर्णे दीर्घः" । ऊ के परे उ वा ऊ होवे तो दोनों मिलकर ऊ होता है; यथा, वधू + उत्सवः = वधूत्सवः; स्वयम्भू+ उदयः = स्वयम्भूदयः; भू + ऊर्द्धम् = भूर्द्धम्; वधू + ऊहनम् = वधूहनम् ।

७ । "अकः सवर्णे दीर्घः" । ऋ के परे ऋ होवे तो दोनों मिल-

कर (दीर्घ) ॠ होता है; यथा पितृ+ऋणम्=पितॄणम्; मातृ+ऋद्धिः=मातॄद्धिः (१)।

८। "आद्गुणः"। (२)। अ के परे इ वा ई रहे तो दोनों मिलकर ए होता है; यथा, देव+इन्द्रः=देवेन्द्रः; पूर्ण+इन्दुः=पूर्णेन्दुः; गण+ईशः=गणेशः; परम+ईश्वरः=परमेश्वरः; अव+ईक्षणम्=अवेक्षणम् (३)।

९। "आद्गुणः"। आ के परे इ वा ई रहे तो दोनों मिलकर ए होता है; यथा, महा+इन्द्रः=महेन्द्रः; लता+इव=लतेव; रमा+ईशः=रमेशः; महा+ईश्वरः=महेश्वरः।

१०। "आद्गुणः"। अ से परे उ वा ऊ रहे तो दोनों मिलकर ओ होता है; यथा, नील+उत्पलम्=नीलोत्पलम्; सूर्य्य+उदयः=

---

(१) ऋ से परे ऌ रहने से दोनों मिलकर (दीर्घ) ॠ होता है। यथा, होतृ+ऌकारः=होतॄकारः। मुग्धबोध के अनुसार ऌ+ऌ=(दीर्घ) ॡ होता है। यथा शक्ऌ+ऌदन्तः=शक्ॡदन्तः। (२) अ अथवा आ के परे इ ई रहने से दोनों मिलकर ए, उ ऊ रहने से दोनों मिलकर ओ और ऋ रहने से दोनों मिलकर अर् होता है। अर्थात् अ+इ वा ई=ए (नियम ८); आ+इ वा ई=ए (नियम ९); अ+उ वा ऊ=ओ (नियम १०); आ+उ वा ऊ=ओ (नियम ११); अ+ऋ=अर् (नियम १२); आ+ऋ=अर् (नियम १३)। इ ई का गुण ए; उ ऊ का ओ; ऋ का अर्; ऌ का अल् होता है। (३) परन्तु स्व+इरः=स्वैरः (Self-willed)। यहाँ अ+इ=ए न होकर ऐ हुआ है। (स्वादीरेरिणोः)। हल+ईषा=हलीषा, लाङ्गल+ईषा=लाङ्गलीषा, मनस्+ईषा=मनीषा (बुद्धि Intellect), ये तीन पद निपातन से सिद्ध हैं।

सूर्य्योदयः; एक + ऊनविंशतिः = एकोनविंशतिः; गृह + ऊर्द्धम = गृहोर्द्धम् (१)।

११। "आद्गुणः"। आ से परे उ वा ऊ होवे तो दोनों मिलकर ओ होता है। यथा, महा + उदयः = महोदयः; गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्; गङ्गा+ऊर्म्मिः = गङ्गोर्म्मिः; महा+ऊर्म्मिः = महोर्म्मिः।

१२। "आद्गुणः"। अ के परे ऋ रहे तो ऋ के स्थान में र होता है, और र् पर वर्ण के मस्तक पर चला जाता है। यथा, देव + ऋषिः = देवर्षिः; हिम + ऋतुः = हिमर्तुः (२)।

१३। "आद्गुणः।" आ के परे ऋ होवे तो आ के स्थान में अ, और ऋ के स्थान में र् होता है; र् पर वर्ण के मस्तक पर चला जाता है। यथा, महा + ऋषिः = महर्षिः (३); देवता + ऋषभः = देवतर्षभः।

१४। "वृद्धिरेचि" (४)। अ से परे ए अथवा ऐ होवे तो

---

(१) परन्तु अक्ष+ऊहिणी = अक्षौहिणी; प्र+ऊहः = प्रौहः (Principal reasoning); प्र+ऊढः = प्रौढः (Full-grown); प्र+ऊढिः = प्रौढिः (Audacity)। इन सबों में अ+ऊ=ओ न होकर औ हुआ है। (२) किन्तु तृतीया तत्पुरुष समास में अ वा आ के परे ऋत शब्द के ऋ रहे तो दोनों मिलकर आर् होता है। यथा, शीत+ऋतः=शीतार्त्तः; भय+ऋतः= भयार्त्तः; तृष्णा+ऋतः=तृष्णार्त्तः। तृतीया तत्पुरुष समास न होने से ऐसा नहीं होता। (३) महा + ऋषिः=महर्षिः, महाऋषिः, महऋषिः भी होता है। ब्रह्मा+ऋषिः=ब्रह्मर्षिः, ब्रह्माऋषिः, ब्रह्मऋषिः होता है। किन्तु परा + ऋच्छति = परार्च्छति होता है। (४) अ वा आ के परे ए वा ऐ रहे तो दोनों मिलकर ऐ और ओ वा औ रहे

दोनों मिलकर ऐ होता है; यथा, अद्य + एव = अद्यैव (१); एक + एकम् = एकैकम्; मत + ऐक्यम् = मतैक्यम्; तव + ऐश्वर्य्यम् = तवैश्वर्य्यम् (२)।

१५। "वृद्धिरेचि"। आ के परे ए वा ऐ होवे तो दोनों मिलकर ऐ होता है; यथा, सदा + एव = सदैव; (३) तथा + एतत् = तथैतत्; महा + ऐरावतः = महैरावतः; महा + ऐश्वर्य्यम् = महैश्वर्य्यम्।

१६। "वृद्धिरेचि"। अ के परे ओ अथवा औ होवे तो दोनों मिलकर औ होता है; यथा जल + ओघः = जलौघः; ग्राम + ओकः = ग्रामौकः; चित्त + औदार्य्यम् = चित्तौदार्य्यम्; गत + औत्सुक्यः = गतौत्सुक्यः (४)।

तो दोनों मिलकर औ होता है; अर्थात्, अ + ए वा ऐ = ऐ (१४), आ + ए वा ऐ = ऐ (१५); अ + ओ वा औ = औ (१६); आ + ओ वा औ = औ (१७)। अ की वृद्धि आ, इ ई की वृद्धि ऐ, उ ऊ की वृद्धि औ, ऋ ॠ की वृद्धि आर् हैं।

(१) यहाँ एव निश्चयार्थक है। निश्चयार्थक भिन्न अन्य अर्थबोधक एव शब्द परे रहने से अवर्ण का लोप होता है; यथा, सम्भावना अर्थ में—अद्य + एव = अद्येव। सादृश्य अर्थ में—चर्म्म + एव = चर्म्मेव। अनिश्चय अर्थ में—क + एव = क्वेव। किन्तु निश्चय अर्थ में १४ नियम के अनुसार अ + ए = ऐ होता है; यथा, इह + एव = इहैव; तव + एव = तवैव; मम + एव = ममैव इत्यादि। (२) परन्तु प्र + एषः = प्रेषः, प्रैषः (Sending); प्र + एष्यः = प्रेष्यः, प्रैष्यः (a servant)। (३) नियम १४ की पादटीका (१) देखो। (४) समास में अ अथवा आ के परे ओष्ठ और ओतु (a cat) शब्द का ओ रहने से दोनों मिलकर विकल्प से ओ और औ होता है; यथा, विम्ब + ओष्ठः = विम्बोष्ठः; विम्बौष्ठः; उमा + ओष्ठः = उमोष्ठः, उमौष्ठः; स्थूल + ओतुः = स्थूलोतुः, स्थूलौतुः; महा + ओतुः = महोतुः, महौतुः। समास न होने से ऐसा नहीं होता; यथा,

१७। "वृद्धिरेचि"। आ के परे ओ अथवा औ होवे तो दोनों मिलकर औ होता है; यथा, महा + ओषधिः=महौषधिः; सदा + ओदनम्=सदौदनम्; महा + औदार्य्यम्; महौदार्य्यम्; सदा + औत्सुक्यम्=सदौत्सुक्यम्।

१८। "इकोऽयणचि" (१)। इ ई भिन्न स्वरवर्ण परे रहने से इ के स्थान में य् होता है; य् और उसका पूर्ववर्ण भी आगे के स्वर में मिल जाता है; यथा, यदि + अपि=यद्यपि; अति + आचारः=अत्याचारः; अभि+उदयः=अभ्युदयः; प्रति + ऊहः= प्रत्यूहः; मुनि + ऋषभः=मुन्यृषभः; प्रति + एकम्=प्रत्येकम्; अति + ऐश्वर्य्यम्=अत्यैश्वर्य्यम्; पचति + ओदनम्=पचत्योदनम्: अति + औदार्य्यम्=अत्यौदार्य्यम् (२)।

१९। "इकोऽयणचि"। इ ई को छोड़कर दूसरा स्वरवर्ण परे रहने से ई के स्थान में य् होता है; य् और पूर्ववर्ण आगे के स्वर में युक्त होता है। यथा, नदी + अम्बु=नद्यम्बु; देवी + आगता= देव्यागता; सखी + उक्तम्=सख्युक्तम्; शशी + ऊर्ध्वगः=शश्यूर्ध्वगः; वली + ऋषभः=वल्यृषभः; गोपी + एषा=गोप्येषा;

तव+ओष्ठः=तवौष्ठः; मम+ ओष्ठः=ममौष्ठः; तव+ओतुः=तवौतुः।

(१) असवर्ण अर्थात् असमान स्वरवर्ण परे रहने से इ ई के स्थान में य् (१८, १९), उ ऊ के स्थान में व् (२०, २१), ऋ के स्थान में र् (२२) और ऌ के स्थान में ल् होता है (पादटीका १ नियम २२)। (२) किन्तु चक्री अत्र, चक्रिअत्र, चक्रयत्र ई पद के अन्त में हो और उसके परे इ ई को छोड़ कर दूसरा स्वरवर्ण हो तो ऐसा होता है। दधि+ऋच्छति=दधिऋच्छति, दध्यृच्छति।

वली + ऐरावतः = वल्यैरावतः; सरस्वती + ओघः = सरस्वत्योघः; वाणी + औचित्यम् = वाण्यौचित्यम् (१) ।

२० । "इकोऽयणचि" । उ ऊ को छोड़कर दूसरा स्वरवर्ण परे रहने से उ के स्थान में व् होता है; व् और उसका पूर्ववर्ण आगे के स्वर में युक्त होता है । यथा, अनु + अयः = अन्वयः; सु + आगतम् = स्वागतम्; मधु + इदम् = मध्विदम्; साधु + ईहितम् = साध्वीहितम्; मधु + ऋते = मध्वृते; अनु + एषणम् = अन्वेषणम्; अनु + ऐक्षिष्ट = अन्वैक्षिष्ट; पचतु + ओदनम् = पचत्वोदनम्; ददातु + औषधम् = ददात्वौषधम् (२) ।

२१ । "इकोऽयणचि" । उ ऊ को छोड़कर दूसरा स्वरवर्ण परे रहने से ऊ के स्थान में व् होता है; व् और उसका पूर्ववर्ण आगे के स्वर में युक्त होता है । यथा, सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु; वधू + आदिः = वध्वादिः; तनू + इन्द्रियम् = तन्विन्द्रियम्; तनू + ईश्वरः = तन्वीश्वरः; सरयू + एधितम् = सरय्वेधितम्; वधू + ऐश्वर्य्यम् = वध्वैश्वर्य्यम्; सरयू + ओघः = सरय्वोघः; वधू + औदार्य्यम् = वध्वौदार्य्यम् (३) ।

---

(१) शार्ङ्गी + अत्र = शार्ङ्गी अत्र, शार्ङ्गिअत्र, शार्ङ्गय॑त्र । ई पद के अन्त में रहे और उसके परे इ ई भिन्न स्वरवर्ण होवे तो ऐसा होता है । नदी + अम्बु = नद्यम्बु (समास होने से), नदी + अम्बु = नदिअम्बु, नद्यम्बु भी (समास नहीं होने से) । (२) मधु + ऋते = मधुऋते, मध्वृते भी होता है; कारण यहाँ उ पद के अन्त में है और उसके परे उ ऊ से भिन्न अन्य स्वरवर्ण है । (३) सरयू + अम्बु = सरयुअम्बु, सरय्वम्बु; सरयू + ओघः = सरयु

२२। "इकोऽयणचि"। ऋ को छोड़कर दूसरा स्वरवर्ण (१) परे रहने से ऋ के स्थान में र् होता है; र् और उसका पूर्व्ववर्ण आगे के स्वर में युक्त होता है। यथा, पितृ + अनुमतिः = पित्रनुमतिः; पितृ + आदेशः = पित्रादेशः; पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा; पितृ + ईहितम् = पित्रीहितम्; पितृ + उपदेशः = पित्रुपदेशः; पितृ + ऊहः = पित्रूहः; पितृ + एषणा = पित्रेषणा; पितृ + ऐश्वर्य्यम् = पित्रैश्वर्य्यम्; पितृ + ओकः = पित्रोकः; पितृ + औदार्य्यम् = पित्रौदार्य्यम् (२)।

२३। "एचोऽयवायावः" (३)। स्वरवर्ण परे रहने से ए के स्थान में अय् होता है (४); अ पूर्व्ववर्ण में युक्त होता है और आगे के स्वर में य् युक्त होता है। यथा, शे + अनम् = शयनम्; ने + अनम् = नयनम्; जे + अति = जयति; सख्ये + अः = सख्ययः; शे + आते = शयाते; अशे + आताम् = अशयाताम्; शे + इतम् = शयितम्; अशे + इष्ट = अशयिष्ट; शे + ईत = शयीत, शे + ईरन् = शयीरन्; शे + ए = शये; शे + ऐ = शयै।

ओघः, सरय्वोघः; ऐसे भी हो सकते हैं; कारण ऊ यहाँ पद के अन्त में है और उसके परे उ ऊ से भिन्न स्वरवर्ण है। परन्तु समास न होने पर समास में एक ही रूप सरय्वम्बु, सरय्वोघ होगा।

(१) ऋ और लृ को छोड़कर। (२) असवर्ण (असमान) स्वर परे रहने से लृ के स्थान में ल् होता है। यथा, लृ+आकृतिः=लाकृतिः। (३) स्वरवर्ण परे रहने से ए के स्थान में अय् (नियम २३), ओ के स्थान में अव् (नियम २५), ऐ के स्थान में आय् (नियम २४) और औ के स्थान में आव् (नियम २६) होता है। (४) अ भिन्न स्वरवर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित ए के स्थान में अ और अय् होते हैं। अ होने पर और सन्धि नहीं होती। यथा, सखे+आगच्छ=सख आगच्छ, सखयागच्छ; ते+एव

२४। "एचोऽयवायावः"। स्वरवर्ण परे रहने से ऐ के स्थान में आय् होता है (१); आ पूर्ववर्ण में युक्त होता है और आगे के स्वर में य् प्रयुक्त होता है। यथा, विनै + अकः = विनायकः; सश्रै + अकः + सश्रायकः; रै + आ = राया; रै + इ = रायि; रै + ए = राये; रै + ओः = रायोः।

२५। "एचोऽयवायावः"। स्वरवर्ण परे रहने से ओ के स्थान में अव् होता है (२); अ पूर्ववर्ण में युक्त होता है और आगे के स्वर में व युक्त होता है। यथा, भो + अनम् = भवनम्; पो + अनः = पवनः; श्रो + अनम् = श्रवणम्; गो + आ = गवा; भो + इता = भविता; पो + इत्रम् = पवित्रम्; गो + ए = गवे; गो + ओः = गवोः (३)।

२६। "एचोऽयवायावः"। स्वरवर्ण परे रहने से औ के स्थान

त एव, तयेव; सर्व्वे + एते = सर्व्व एते, सर्व्वयेते।

(१) स्वरवर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित ऐ के स्थान में आ और आय् होते हैं। आ होने पर और सन्धि नहीं होती। यथा, श्रियै + अर्थः = श्रिया अर्थः, श्रियायर्थः; भुक्त्यै + ओदनम् = भुक्त्या ओदनम्, भुक्त्यायोदनम्। (२) अ भिन्न स्वर वर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित ओ के स्थान में अ और अव् होते हैं। अ होने पर और सन्धि नहीं होती। यथा, प्रभो + आगच्छ = प्रभ आगच्छ, प्रभवागच्छ; शम्भो + एहि = शम्भ एहि, शम्भवेहि। (३) स्वरवर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित गो शब्द के ओ के स्थान में अव और अव् होते हैं; अव् होने पर फिर सन्धि होती है। यथा, गो + ईशः = गव + ईशः = गवेशः, गो + ईशः = गव् + ईशः = गवीशः। अक्ष और इन्द्र शब्द परे होने से गो के ओकार के स्थान में केवल अव ही होता है। यथा, गो + अक्षः = गवाक्षः (Window); गो + इन्द्रः = गवेन्द्रः (Lord of Kine)। किन्तु गो + अग्रम् = गवाग्रम्, गोऽग्रम् (आगे के अ का लोप होकर), गो अग्रम् (सन्धि न होकर)।

में आव् होता है (१); आ पूर्ववर्ण में युक्त होता है और आगे के स्वर में व् युक्त होता है । यथा, पौ + अकः = पावकः; नौ + आ = नावा; भौ + इनी = भाविनी; भौ + उकः = भावुकः; नौ + ए = नावे; नौ + ओः = नावोः; नौ + औ = नावौ (२) ।

२७ । "एङः पदान्तादति" । पद के अन्त में स्थित ए अथवा ओ से परे जो अ रहता है उसका लोप होता है । लोप होने पर अ का जो चिह्न (ऽ) रहता है उसे लुप्त अकार कहते हैं । यथा, कवे + अवेहि = कवेऽवेहि; सखे + अर्पय = सखेऽर्पय; प्रभो + अनुगृहाण = प्रभोऽनुगृहाण; गुरो + अनुमन्यस्व = गुरोऽनुमन्यस्व । पद के अन्त में स्थित नहीं होने से नहीं होता । यथा, ने + अनम् = नयनम्; भो + अनम् = भवनम् ।

(स्वरसन्धि के अतिरिक्त नियम परिशिष्ट में देखो ।)

---

(१) स्वरवर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित औ के स्थान में आ और आव् होता है; आ होने पर सन्धि नहीं होती । यथा, रवौ + अस्तमिते = रवा अस्तमिते, रवावस्तमिते; तौ + इमौ = ता इमौ, ताविमौ; गतौ + औत्सुक्यम् = गता औत्सुक्यम्, गतावौत्सुक्यम् । (२) यकारादि प्रत्यय परे रहने से ओ के स्थान में अव् और औ के स्थान में आव् होता है । यथा, गो + यम् = गव्यम्; नौ + यम् = नाव्यम् । पथ परिमाण बोध होने पर गो + यूतिः = गव्यूतिः (A distance of four miles) होता है; अन्यथा गोयूतिः (A yoke of oxen) ।

व्यञ्जनसन्धि ।

(Combination of Consonants.)

१ । "स्तोः श्चुनाश्चुः" (१) । च् अथवा छ् परे रहने से त् और द् के स्थान में च् होता है । यथा, महत् + चक्रम् = महच्चक्रम्; भवत्+चरणम्=भवच्चरणम्; उत्+चारणम्=उच्चारणम्; एतत्+चन्द्रमण्डलम् = एतच्चन्द्रमण्डलम्; विपद् + चयः = विपच्चयः; तद् + चलनम्=तच्चलनम्; महत् + छत्रम् = महच्छत्रम्; भवत् + छलम् = भवच्छलम्; उत् = छिनत्ति=उच्छिनत्ति; तद् + छविः=तच्छविः; एतद् + छाया = एतच्छाया ।

२ । "स्तोः श्चुनाश्चुः" । ज् अथवा झ् परे रहने से त् और द् के स्थान में ज् होता है । यथा, भवत् + जीवनम् = भवज्जीवनम् ; उत् + ज्वलः = उज्ज्वलः; सरित् + जलम्=सरिज्जलम्; तद् + जन्म= तज्जन्म; एतद् + जननम् = एतज्जननम्; विपद्+जालम्=विपज्जालम्; महत् + झञ्झनम्=महज्झञ्झनम्; तत्+झनत्कारः=तज्झनत्कारः ।

३ । "ष्टुनाष्टुः" (२) । ट् अथवा ठ् परे रहने से त् और द् के स्थान में ट् होता है । यथा, उत् + टलति=उट्टलति (३);

---

(१) शकार और चवर्ग के योग में सकार और तवर्ग के स्थान में क्रम से शकार और चवर्ग होता है । यथा, रामस्+शेते=रामश्शेते, सत्+चित्=सच्चित् । (२) षकार और टवर्ग के योग में सकार और तवर्ग के स्थान में क्रम से षकार और टवर्ग होता है । यथा, रामस्+षष्ठः= रामष्षष्ठः; पेष्+ता=पेष्टा । (३) टवर्ग के परे तवर्ग रहने से भी तवर्ग के स्थान में टवर्ग होता है । यथा, ईट्+ते=ईट्टे । किन्तु टवर्ग पद के अन्त में रहने से तवर्ग के स्थान में टवर्ग और स् के स्थान में ष् नहीं होता । यथा, षट्+ते=षट्ते, षट्सन्तः । परन्तु षट्+नाम्=षण्णाम्, षट्+ नवतिः=षण्णवतिः; षट्+नगर्यः=षण्णगर्यः, इन तीन पदों में निषेध नहीं है किन्तु विधान है ।

महत्+टङ्कनम्=महट्टङ्कनम्; तद्+टीका=तट्टीका; एतद्+टङ्कारः=एतट्टङ्कारः; सत्+ठकारः=सट्ठकारः; एतद्+ठक्कुरः=एतट्ठक्कुरः।

४। "ष्टुनाष्टुः"। ड् अथवा ढ् परे रहने से त् और द् के स्थान में ड् होता है। यथा; उत+डीनः=उड्डीनः; भवत्+डमरुः=भवड्डमरुः; तद+डिण्डिमः=तड्डिण्डिमः; एतद्+डामरः=एतड्डामरः; उत्+ढौकते=उड्ढौकते; महत्+ढालम्=महड्ढालम्; एतद्+ढक्का=एतड्ढक्का; तद्+ढुण्ढनम्=तड्ढुण्ढनम्।

५। "स्तोः श्चुनाश्चुः"। ज् अथवा झ् और श् परे रहने से न् के स्थान में ञ् होता है। यथा, महान्+जयः=महाञ्जयः; राजन्+जागृहि=राजञ्जागृहि; भवान्+जीवतु=भवाञ्जीवतु; उद्यन्+झङ्कारः=उद्यञ्झङ्कारः; विरमन्+झनत्कारः=विरमञ्झनत्कारः; गच्छन्+झटिति=गच्छञ्झटिति; भवान्+शूरः=भवाञ्शूरः।

६। "शश्छोऽटि"। पद के अन्त में स्थित त् अथवा द् से परे श् होवे तो त् द् के स्थान में च् और श् के स्थान में छ् होता है। यथा, जगत्+शरण्यः=जगच्छरण्यः; महत्+शकटम्=महच्छकटम; तद्+शरीरम्=तच्छरीरम्; एतद्+शकाब्दीयम्=एतच्छकाब्दीयम् (१)।

(१) वैयाकरण लोग श् के स्थान में विकल्प से च् कहते हैं; इसलिए जगच्शरण्यः, महच्शकटम्, तच्शरीरम्, एतच्शकाब्दीयम् भी होते हैं। पद के अन्तस्थित क्, ट् और प् के परे श् रहने से भी श् के स्थान में विकल्प से छ् होता है। यथा, वाक्+शतम्=वाक्छतम्, वाक्शतम्; परिव्राट्+शेते=परिव्राट्छेते, परिव्राट्शेते; अप्+शब्दः=अप्छब्दः, अप्शब्दः। किन्तु च् युक्त श् के स्थान में छ् नहीं होता। यथा, उत्+श्च्योतति=उत्श्च्योतति; वाक्+श्च्योतति=वाक्श्च्योतति।

७। "शि तुक्"। पद के अन्त में स्थित न् से परे श होवे तो न् के स्थान में सदा ञ् और श के स्थान में विकल्प से छ् होता है। यथा, महान्+शब्दः=महाञ्छब्दः, महाञ्शब्दः; धावन्+शशः=धावञ्छशः, धावञ्शशः; निन्दन्+शठः=निन्दञ्छठः, निन्दञ्शठः (१)।

८। "झयो होऽन्यतरस्याम्" (२)। पद के अन्त में स्थित त् अथवा द् के परे ह् होवे तो त् के स्थान में द् और ह् के स्थान में ध् होता है। यथा, उत्+हतः=उद्धतः; उत्+हरणम्=उद्धरणम्; महत्+हसनम्=महद्धसनम्; तद्+हितम्=तद्धितम्; तद्+हेयम्=तद्धेयम्; विपद्+हेतुः=विपद्धेतुः (३)।

९। "स्तोः श्चुनाश्चुः"। च अथवा ज् के परे न् होवे तो न् के स्थान में ञ् होता है। यथा, याच्+ना=याञ्चा, यज्+नः=यज्ञः; जज्+नाते=जज्ञाते; जज्+निपे=जज्ञिपे; जज्+निध्वे=जज्ञिध्वे; जज्+ने=जज्ञे; राज+ना=राज्ञा; राज्+नी=राज्ञी।

१०। "ष्टुनाष्टुः"। ड् अथवा ढ् परे रहने से न् के स्थान में ण् होता है। यथा, महान्+डामरः=महाण्डामरः; रुवन्+डिण्डिमः=

---

(१) वैयाकरण लोग यहाँ चार पद सिद्ध करते हैं। यथा, महाञ्छब्दः, महाल्ँशब्दः, महाञ्च्छब्दः, महाञ्च्शब्दः। (२) झय् प्रत्याहार से परे ह् के स्थान में विकल्प से पूर्व का सवर्ण होता है। यथा, वाक्+हरिः=वाग्घरिः, वाग्हरिः। झ भ घ ढ ध, ज ब ग ड द; ख फ छ ठ थ, च ट त क प, ये बीस वर्ण झय् प्रत्याहार के अन्तर्गत हैं। प्रत्येक वर्ग का चौथा चौथा वर्ण ह् का सवर्ण है। (३) वैयाकरण लोग ह् के स्थान में विकल्प से ध् करके उद्हतः विपद्हेतुः इत्यादि भी करते हैं।

स्वगिड्डिमः; भवान् + ढुण्ढति = भवाण्ढुण्ढति; राजन् + ढौकसे = राजण्ढौकसे।

११। "ष्टुनाष्टुः"। ष् के परे न के स्थान में ट् और थ् के स्थान में ठ् होता है। यथा, आकृष् + तः = आकृष्टः; सृष्+ता= स्रष्टा; दृष् + ता = द्रष्टा; निविष् + तः = निविष्टः; प्रविष्+तः = प्रविष्टः; उत्कृष् + तः = उत्कृष्टः; षष् + थः = षष्ठः (१)।

१२। "तोर्लिः" (२)। ल् परे रहने से त्, द् और न् के स्थान में ल् होता है; और न् के स्थान में जात ल् अनुनासिक उच्चारित होता है, इसलिए पूर्व वर्ण चन्द्रविन्दु संयुक्त होता है (३)। यथा, वृहत् + ललाटम् = वृहल्ललाटम्; उन + लेखः = उल्लेखः; तद्+लीलायितम् = तल्लीलायितम्; एतद् + लीलोद्यानम् = एतल्लीलोद्यानम्; महान + लाभः = महांल्लाभः; भवान् + लभते = भवांल्लभते।

१३। "ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्डिनत्यम" (४)। स्वरवर्ण परे रहने से और ह्रस्व स्वर से परे पद के अन्त में स्थित न को द्वित्व होता है। यथा, धावन् + अश्वः=धावन्नश्वः; हसन+आगतः=हसन्नागतः; चिन्तयन्+इह = चिन्तयन्निह; सृजन्+ईश्वरः=सृजन्नीश्वरः; स्मरन्+उवाच=

---

(१) किन्तु "तोःषि" इस सूत्र के अनुसार ष् परे रहने से तवर्ग के स्थान में टवर्ग नहीं होता। यथा, सन्+षष्ठः=सन्षष्ठः। (२) ल् परे रहने से तवर्ग के स्थान में ल् होता है। (३) किसी किसी के मत में न् के स्थान में जात ल् ही चन्द्रविन्दु संयुक्त होता है। यथा, महांल्लाभः, भवांल्लभते। (४) ङमः+ ह्रस्वात्+अचि, ङमुट्+नित्यम्। (ह्रस्वात् परो यो ङम् तदन्तं यत् पदं तस्मात् परस्य अचः ङमुट्)। ह्रस्व स्वर से परे जो ङम् (ङ्, ण्, न्) वह जिसके अन्त में हो ऐसा जो पद उससे परे अच् हो तो उसे ङमुट् (अर्थात्

स्मरन्नुवाच (१)। परन्तु दीर्घ स्वर के परे न् रहने से अथवा दीर्घ से परे न् को द्वित्त्व नहीं होता। यथा, महान् + आग्रहः = महानाग्रहः; कवीन् + आह्वय = कवीनाह्वय; साधून् + आद्रियस्व = साधूनाद्रियस्व; भ्रातॄन् + अनुगृह्णीष्व = भ्रातॄननुगृह्णीष्व।

१४। "नश्छव्यप्रशान्" (२)। च् अथवा छ् परे रहने से पूर्व्वपद के अन्त में स्थित न् के स्थान मे अनुस्वार और अनुनासिक (ँ) होता है और च् के स्थान में श्च् और छ् के स्थान में श्छ् होता है। यथा, पश्यन् + चकितः = पश्यंश्चकितः; पश्यँश्चकितः इत्यादि क्रम से। हसन् + चलितः = हसंश्चलितः; नृत्यन् + चकोरः = नृत्यंश्चकोरः; धावन् + छागः = धावंश्छागः; महान् + छेदः = महांश्छेदः; विराजन् + छायापथः = विराजंश्छायापथः।

ङुट्, णुट् और नुट्) का आगम क्रम से होता है। उट्, इत्, ङ्, ण्, न् रह जाते हैं, अर्थात् स्वरवर्ण परे रहने से पद के अन्त में स्थित ह्रस्व स्वर के परवर्त्ती ङ् ण् न् को द्वित्त्व होता है। यथा, प्रत्यङ्+आत्मा=प्रत्यङ्ङात्मा, सुगण्+ईशः=सुगण्णीशः; सन्+अच्युतः=सन्नच्युतः। किन्तु तिङ्+अन्तः=तिङन्तः यण्+अचि=यणचि।

(१) परन्तु समास होने पर किसी किसी स्थानों में विकल्प से न् द्वित्त्व होता है। यथा, सन्+आदिः = सन्नादिः; सनादिः; सन्+अन्तः=सन्नन्तः, सनन्तः। किन्तु अन्+अन्तः=अनन्तः (अन्नन्तः नहीं) किन्तु तिङन्त इत्यादि और अन्नन्त नहीं; परन्तु पाठ पाणिनी से विरुद्ध है। (२) नः+छवि+अप्रशान् (अम्परे छवि नान्तस्य पदस्य रुः) अम् प्रत्याहार (अर्थात् स्वरवर्ण, य्, र्, ल्, व् तथा वर्ग के पञ्चम वर्ण) के पूर्व्ववर्त्ती छव् प्रत्याहार (अर्थात् च छ, ट ठ, त थ) परे रहने से नकारान्त पद न् के स्थान में रु (अर्थात् अनुस्वार तथा स्) और अनुनासिक स् भी होता है, अर्थात् न् के स्थान में अनुस्वार और च् छ के स्थान में श्च् श्छ् (१४) ट् ठ् के स्थान में ष्ट् ष्ठ् (१५) और त् थ् के स्थान में स्त् स्थ् (१६) होता है। प्रशान् शब्द के न् के स्थान में नहीं होता।

१५ । "नश्छव्यप्रशान्" । ट् अथवा ठ् परे रहने से पद के अन्त में स्थित न् के स्थान में अनुस्वार तथा अनुनासिक (ँ) भी होता है और ट के स्थान में ष्ट् और ठ् के स्थान में ष्ठ् होता है । यथा, चलन् + टिट्टिभः=चलंष्टिट्टिभः; चलँष्टिट्टिभः इत्यादि क्रम से उद्यन् + टङ्कारः = उद्यंष्टङ्कारः; महान् + ठाकुरः = महांष्ठकुरः ।

१६ । "नश्छव्यप्रशान्" । त् अथवा थ् परे रहने से पद के अन्त में स्थित न् के स्थान में अनुस्वार तथा अनुनासिक (ँ) भी होता है और त् के स्थान में स्त् और थ् के स्थान में स्थ् होता है । यथा, पतन् + तरुः = पतंस्तरुः; महान् + तडागः = महांस्तडागः; महाँस्तडागः; उत्तिष्ठन् + तरङ्गः = उत्तिष्ठंस्तरङ्गः; उत्तिष्ठँस्तरङ्गः; शाम्यन् + तापः=शाम्यंस्तापः; शाम्यँस्तापः; क्षिपन् + थुत्कारः = क्षिपंस्थुत्कारः ; क्षिपँस्थुत्कारः; स्पृशन् + थुध्यति = स्पृशंस्थुध्यतिः; स्पृशँस्थुध्यति (१) ।

१७ । "मोऽनुस्वारः" (२) । व्यंजन (हल्) परे रहने से पद के अन्त में स्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है । यथा, सत्वरम् + याति = सत्वरं याति; करुणम् + रोदिति=करुणं रोदिति; विद्याम्+लभते = विद्यां लभते; भारम्+वहति = भारं वहति; शय्यायाम् + शेते = शय्यायां शेते; कष्टम् + सहते = कष्टं सहते; मधुरम्+ हसति = मधुरं हसति (३) ।

यथा, प्रशान् + तनोति = प्रशान्तनोति । न् पद के अन्त में नहीं रहने से भी नहीं होता । यथा, हन् + ति = हन्ति ।

(१) कान्+कान् = कांस्कान्, कॉँस्कान् (मुग्धबोध के मत में) कान्कान्; नॄन्+पाहि = नॄं पाहि, नॄँ पाहि । (२) मः अनुस्वारः (मान्तस्य पदस्य अनुस्वारः हलि) । हल् (व्यञ्जनवर्ण) परे रहने से पद के अन्तस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है । (३) "मो

१८। "मोऽनुस्वारः वा पदान्तस्य" (१)। स्पर्शवर्ण अथवा य, र, ल, व, परे रहने से पद के अन्त में स्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है अथवा जिस वर्ग का वर्ण परे रहता है उसी वर्ग का पञ्चम वर्ण होता है। यथा, किम्+करोषि=किंकरोषि, किङ्करोषि; गृहम्+गच्छ=गृहं गच्छ, गृहङ्गच्छ; क्षिप्रम्+चलति=क्षिप्रं चलति, क्षिप्रञ्चलति; शत्रुम्+जहि=शत्रुं जहि, शत्रुञ्जहि; नदीम्+तरति=नदीं तरति, नदीन्तरति; धनम्+ददाति=धनं ददाति, धनन्ददाति; स्तनम्+धयति=स्तनंधयति, स्तनन्धयति; गुरुम्+नमति=गुरुं नमति, गुरुन्नमति; चन्द्रम्+पश्यति=चन्द्रं पश्यति, चन्द्रम्पश्यति; किम्+फलम्=किंफलम्, किम्फलम्; सत्यम्+ब्रूयात्=सत्यं ब्रूयात्, सत्यम्ब्रूयात्; मधुरम्+भाषते=मधुरं भाषते, मधुरम्भाषते; शास्त्रम्+मीमांसते=शास्त्रं मीमांसते, शास्त्रम्मीमांसते (२)। सय्यँन्ता संयन्ता, सव्वँत्सरः संवत्सरः, पल्लोकं, पंलोकम् इत्यादि।

राज्ञि समः क्वौ"। क्विबन्त राज् धातु परे रहने से सम् के म् के स्थान में अनुस्वार नहीं होता। यथा, सम्+राट्=सम्राट् (अधिराज Emperor अर्थ में); दूसरे अर्थ में म् के स्थान में अनुस्वार होता है। यथा, सम्+राट्=संराट् (चन्द्रमा Moon)। य् व् ल् परे रहने से पद के अन्त में स्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है। यथा, वशम्+वदः=वशंवदः; सम्+वत्सरः=संवत्सरः; किम्+वा=किंवा, इसलिये वशम्वदः, सम्वत्सरः, किम्वा ऐसे अशुद्ध पद नहीं हो सकते।

(१) स्पर्श वर्ण और अन्तःस्थ वर्ण परे रहने से पद के अन्तस्थित म् के स्थान में विकल्प से अनुस्वार होता है। (२) "पुमः खय्यम्परे"। स्वरवर्ण, वर्ग के पञ्चमवर्ण और य् र् ल् व् ह्, इन सब वर्णों के पूर्ववर्ती वर्ग के प्रथम किंवा द्वितीय वर्ण परे रहने से और उनसे स्वरवर्ण, ह् य् व् र् ल् और वर्ग के पञ्चम वर्ण परे रहने से पुम् के म् के स्थान में अनुस्वार और अनुनासिक (ँ) भी होता है और उन दोनों के परे स् होता है। यथा, पुम्+कोकिलः=पुंस्कोकिलः; पुँस्कोकिलः इत्यादि क्रम से

१९। "छे च"। छ् परे रहने से स्वरवर्ण के (१) परे च् आता है (२) और च् छ् मिलकर च्छ् होता है। यथा, सित+छत्रम्=सितच्छत्रम्; परि+छदः=परिच्छदः; अव+छेदः=अवच्छेदः; वृक्ष+छाया वृक्षच्छाया; गृह+छिद्रम्=गृहच्छिद्रम्; चे+छिद्यते=चेच्छिद्यते।

२०। "झलां जशोऽन्ते" (३)। स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थवर्ण अथवा य् र् ल् व् ह् परे रहने पर पद के अन्तस्थित क् के स्थान में ग्, च् के स्थान में ज्, ट् के स्थान में ड्, और प् के स्थान में ब् होता है। यथा, दिक्+अन्तः=दिगन्तः; वाक्+आडम्बरः=वागाडम्बरः; त्वक्+इन्द्रियम्=त्वगिन्द्रियम्; वाक्+ईशः=वागीशः;सम्यक्+उक्तम्=सम्यगुक्तम्; धिक्+ऋणकारिणम्=धिगृणकारिणम्; प्राक्+एव=प्रागेव; धिक्+ऐश्वर्य्यमतम्=धिगैश्वर्य्यमतम्; सम्यक्+ओजः=सम्यगोजः; वाक्+औचित्यम्=वागौचित्यम्; दिक्+गजः=दिग्गजः; प्राक्+घनोदयः=

अनुनासिक का उदाहरण होता है। पुम्+काकः=पुंस्काकः; पुम्+पुत्रः=पुंस्पुत्रः। पुम्+चली=पुंश्चली (यहाँ च् परे रहने के कारण स् के स्थान में श् हुआ है)। किन्तु पुम्+क्षीरम्=पुंक्षीरम्; पुम्+ख्यातः=पुंख्यातः। यहाँ स् नहीं होता क से प् और य परे रहने से। प्रथम द्वितीय भिन्नवर्ग का अन्य वर्ण परे रहने से स् नहीं होता। यथा, पुम्+गवः=पुंगवः; पुम्+दासः=पुंदासः।

(१) स्वरवर्ण यहाँ ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर भी है। (२) "पदान्ताद्वा"। छ् परे रहने से पद के अन्त में स्थित दीर्घ स्वर के परे विकल्प से च् आता है। यथा, लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया। परन्तु छ् परे रहने से मा और आ के परे च् नित्य आता है। यथा, मा+छादयति=माच्छादयति; आ+छादयति=आच्छादयति। (३) झलां जशः अन्ते। पदान्त झल

प्राग्घनोदयः; वाक्+जालम्=वाग्जालम्; सम्यक्+झङ्कारः=सम्यग्झङ्कारः; सम्यक् + डयते=सम्यग्डयते; सम्यक् + ढौकते=सम्यग्ढौकते; वाक् + दानम् = वाग्दानम् ; धिक् + धनगर्वितम्=धिग्धनगर्वितम् ; वाक् + बाहुल्यम्=वाग्बाहुल्यम्; दिक् + भागः=दिग्भागः; धिक् + याचकम्=धिग्याचकम् ; वाक् + रोधः=वाग्रोधः; धिक् + लोभिनम्=धिग्लोभिनम्; सम्यक् + वदति=सम्यग्वदति; दिक् + हस्ती=दिग्हस्ती (१); अच् + अन्तः=अजन्तः; अच् + हीनः=अज्हीनः (१); सम्राट+अयम्=सम्राडयम्; सम्राट् + आगतः=सम्राडागतः; सम्राट्+गच्छति =सम्राड्गच्छति; सम्राट + हसति = सम्राड्हसति (१); अप् + इन्धनः=अबिन्धनः; अप + घटः=अब्घटः; अप् + जम्=अब्जम् ; अप + हरणम्=अब्हरणम् (१) ।

२१ । "झलां जशोऽन्ते"। स्वरवर्ण अथवा ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र्, व् और ह् परे रहने से पद के अन्तस्थित त् के स्थान में द् होता है । यथा, जगत् + अन्तः=जगदन्तः; जगत् + आदिः=जगदादिः;

प्रत्याहार के स्थान में (अर्थात् झल् प्रत्याहार के अन्तर्गत केवल क् च् ट् त् प् इन वर्णों के स्थान में) जश् प्रत्याहार होता है (अर्थात् क्रम से ग् ज् ड् द् ब् होता है)।

(१) "झयो होऽन्यतरस्याम्" वर्ग के प्रथम वर्ण से परे ह् रहने से प्रथम वर्ण के स्थान में उस वर्ग का तृतीय वर्ण होता है और ह् के स्थान में विकल्प से उसी वर्ग का चतुर्थ वर्ण होता है । इस सूत्र के अनुसार वैयाकरण लोग क् च् ट् प् के परस्थित ह् के स्थान में विकल्प से यथा क्रम घ् झ् ढ् भ् करते हैं। यथा, दिक्+हस्ती=दिग्हस्ती, दिग्घस्ती; अच्+हीनः=अज्हीनः, अज्झीनः; सम्राट्+हसति=सम्राड्हसति, सम्राड्ढसति; अप्+हरणम्=अब्हरणम्, अब्भरणम् ।

जगत् + इन्द्रः=जगदिन्द्रः; जगत् + ईशः=जगदीशः; भवत् + उक्तम्=भवदुक्तम्; भवत् + ऊहनम्=भवदूहनम्; तत् + ऋणम्=तदृणम्; जगत् + एतत्=जगदेतत्; महत् + ऐश्वर्य्यम्=महदैश्वर्य्यम्; महत् + ओजः=महदोजः; महत् + औषधम्=महदौषधम्; बृहत् + गहनम् = बृहद्गहनम्; बृहत् + घटः=बृहद्घटः; भवत् + दर्शनम्=भवद्दर्शनम्; महत् + धनुः = महद्धनुः; जगत् + बन्धुः = जगद्बन्धुः; महत् + भयम् = महद्भयम्; बृहत् + यानम् = बृहद्यानम्; बृहत् + रथः = बृहद्रथः; महत् + वनम्=महद्वनम्; जगत् + हितम्=जगद्धितम्।

२२। न् अथवा म परे रहने से पद के अन्तस्थित क् के स्थान में ङ् और त्, द् के स्थान में न् विकल्प से होता है (१)। यथा दिक् + नागः = दिङ्नागः, दिग्नागः; जगत् + नाथः = जगन्नाथः, जगद्नाथः; तत् + नीरम् = तन्नीरम्, तद्नीरम्; प्राक् + मुखः = प्राङ्मुखः, प्राग्मुखः; भवत् + मतम् = भवन्मतम्, भवद्मतम्; एतद् + मानसम् = एतन्मानसम्, एतद्मानसम्।

(व्यञ्जनसन्धि का अतिरिक्त नियम परिशिष्ट में देखो)

---

(१) "यरोऽनुनासिके अनुनासिको वा"। न् अथवा म् परे रहने से पद के अन्तस्थित वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान में उस वर्ग का पञ्चम वा तृतीय वर्ण होता है। यथा, दिक्+नागः=दिङ्नागः, दिग्नागः; अच्+नास्ति=अञ्नास्ति, अज्नास्ति; मधुलिट्+नर्द्दति=मधुलिण्नर्द्दति, मधुलिड्नर्द्दति; जगत्+नाथः=जगन्नाथः, जगद्नाथः; अप्+नदी=अम्नदी, अब्नदी; प्राक्+मुखः=प्राङ्मुखः, प्राग्मुखः; अच्+मध्यम्=अञ्मध्यम्, अज्मध्यम्; मधुलिट्+मत्तः=मधुलिण्मत्तः, मधुलिड्मत्तः; भवत्+मतम्=भवन्मतम्, भवद्मतम्; अप्+मानम्=अम्मानम्, अब्मानम्। किन्तु "प्रत्यये भाषायां नित्यम्" अर्थात् मात्र किंवा मय प्रत्यय का म् परे होने से पद के अन्तस्थित वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान में उस वर्ग का केवल पञ्चम वर्ण होता है। यथा, अच्+मात्रम्=अञ् मात्रम्; मधुलिट्+मात्रम्=मधुलिण्मात्रम्; वाक्+मयम्=वाङ्मयम्; चित्+मयम्=चिन्मयम्; अप्+मयम्=अम्मयम्।

विसर्ग सन्धि।

(Combination of Visargas with Vowels or Consonants.)

१। "स्तोः श्चुनाश्चुः"। च् वा छ् परे रहने से विसर्ग के स्थान में श् होता है। यथा, पूर्णः + चन्द्रः = पूर्णश्चन्द्रः; ज्योतिः + चक्रम् = ज्योतिश्चक्रम्; निः + चयः = निश्चयः; वायुः + चलति = वायुश्चलति; रवेः + छविः = रवेश्छविः; तरोः + छाया = तरोश्छाया; रज्जुः + छिद्यते = रज्जुश्छिद्यते (१)।

२। "ष्टुनाष्टुः"। ट् वा ठ् परे रहने से विसर्ग के स्थान में ष् होता है। यथा भीतः + टलति=भीतष्टलति; उड्डीनः + टिट्टिभः= उड्डीनष्टिट्टिभः; धनुः + टङ्कारः=धनुष्टङ्कारः; स्थिरः + ठक्कुरः=स्थिरष्ठक्कुरः; भग्नः + ठक्कुरः=भग्नष्ठक्कुरः (१)।

३। "विसर्जनीयस्य सः" (२)। त् वा थ् परे रहने से विसर्ग के स्थान में स् होता है। यथा, उन्नतः + तरुः=उन्नतस्तरुः; नद्याः +

---

(१) "वा शरि" (शर् प्रत्याहार) अर्थात् श् ष् स् परे रहने से विसर्ग के स्थान में विकल्प से क्रमानुसार श्, ष्, स् होता है। यथा, सुप्तः+शिशुः=सुप्तश्शिशुः, सुप्तःशिशुः; मत्तः+षट्पदः=मत्तष्षट्पदः, मत्तः षट्पदः; प्रथमः+सर्गः=प्रथमस्सर्गः, प्रथमः सर्गः। किन्तु श्, ष्, स् के परे वर्ग का प्रथम अथवा द्वितीय वर्ण रहने पर विकल्प से विसर्ग का लोप होता है। यथा, कः+श्च्योतति=कश्च्योतति, कः श्च्योतति; कः+ष्ठीवति=कष्ठीवति, कःष्ठीवति; कः+स्तौति=कस्तौति, कःस्तौति; यहाँ राम स्थाता, हरिस्फुरति इत्यादि उदाहरण भी जानने चाहिए। (२) खर् प्रत्याहार (अर्थात् वर्ग के प्रथम तथा द्वितीय वर्ण और श् ष् स्) परे रहने से विसर्ग के स्थान में स् भी होता है। यथा, रामस्स्थाता, हरिस्स्फुरति इत्यादि होता है।

तीरम् = नद्यास्तीरम्, भूमेः + तलम् = भूमेस्तलम्; छिन्नः + थुत्कारः =छिन्नस्थुत्कारः; लुप्तः + थकारः=लुप्तस्थकारः (१)।

४। "ससजुषो रुः (२); अतो रोरप्लुतादप्लुते (३)" अ के परे विसर्ग अथवा विसर्गार्थ र् और उससे परे अ हो तो अ और उसके परस्थित विसर्ग के स्थान में ओ होता है; ओ पूर्ववर्ण में युक्त होता है और परिवर्त्ती अ का लोप होता है। यथा, नरः + अयम्=नरोऽयम्; नवः + अङ्कुरः = नवोऽङ्कुरः; तीक्ष्णः + अङ्कुशः = तीक्ष्णोऽङ्कुशः; ज्वलितः + अङ्गारः = ज्वलितोऽङ्गारः; वेदः + अधीतः = वेदोऽधीतः।

५। "हशि च" (४)। वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् परे रहने से अ और उसके परस्थित विसर्ग दोनों के स्थान में ओ होता है। ओ पूर्ववर्ण में युक्त होता है। यथा, शोभनः + गन्धः = शोभनोगन्धः; नूतनः + घटः = नूतनोघटः; सद्यः + जातः = सद्योजातः; मधुरः + झङ्कारः = मधुरो झङ्कारः; नवः + डमरुः = नवो डमरुः; गजः + ढौकते=गजोढौकते; मूर्द्धन्यः + नकारः = मूर्द्धन्योनकारः निर्व्वाणः + दीपः = निर्व्वाणो दीपः; अश्वः + धावति = अश्वो धावति; उन्नतः + नगः = उन्नतो नगः; दृढ़ः + बन्धः = दृढ़ो बन्धः; अकुतः + भयः = अकुतोभयः;

---

(१) पृष्ठ २७ की पाद टीका (१) देखो। (२) पद के अन्त में स्थित स् और सजुष् शब्द के ष् को रु (र्) होता है। (३) अप्लुत अकार परे रहने से अप्लुत अकार के परस्थित रु (र्) के स्थान में उ होता है। तब "आद्गुणः" इस सूत्र से पूर्ववर्त्ती अ+उ इन दोनों का ओ होता है और परवर्त्ती अ का लोप होता है। (४) हश् प्रत्याहार (वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण और य्, र्, ल, व्, ह्) परे रहने से अप्लुत अकार के

अतीतः + मासः = अतीतो मासः; कृतः + यत्नः=कृतो यत्नः; शान्तः + रोषः = शान्तो रोषः; कुतः + लोभः = कुतो लोभः; शीतः + वायुः = शीतो वायुः; वामः + हस्तः = वामो हस्तः।

६। "भोभगोअघोअपूर्व्वस्य योऽशि" (१)। अ को छोड़कर कोई दूसरा स्वरवर्ण परे रहने से अ के परस्थित विसर्ग का लोप होजाता है (२); लोप होने पर और सन्धि नहीं होती। यथा, कुतः + आगतः = कुत आगतः; नरः + इव = नर इव; कः + ईहते = क ईहते; चन्द्रः + उदेति = चन्द्र उदेति; इतः + ऊर्द्धम् = इत ऊर्द्धम्; देवः + ऋषिः = देव ऋषिः; उच्चारितः + ऌकारः = उच्चारित ऌकारः; कः + एषः = क एषः; कुतः + ऐक्यम् = कुत ऐक्यम्; रक्तः+ओष्ठः = रक्त ओष्ठः; राज्ञः+औदार्य्यम् = राज्ञ औदार्य्यम्।

७। "भोभगोअघोअपूर्व्वस्य योऽशि"। स्वरवर्ण वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् परे रहने से आ के परस्थित विसर्ग का लोप होता है (३); लोप होने पर और सन्धि नहीं होती। यथा, अश्वाः + अमी=अश्वा अमी; गजाः+इमे= गजा इमे; ताराः + उदिताः = तारा उदिताः; गताः + ऋषयः=गता ऋषयः; नराः + एते=नरा एते; हृताः+गजाः=हृता गजाः; क्रीता+

परस्थित रु (र्) के स्थान में उ होता है। तब अ+उ इन दोनों को ओ हो जाता है।

(१) भोस्, भगोस्, अघोस्, इन अव्ययों को स् को और अ और आ के परस्थित स् को जो रु होता है उस रु को य् आदेश होता है। तब "लोपःशाकल्यस्य" इस सूत्र के अनुसार विकल्प से य् का लोप होता है। (२) वैयाकरण लोग विसर्ग का लोप अथवा विसर्ग के स्थान में य् करते हैं। यथा, कुतः+आगतः=कुत आगतः; कुतयागतः; कः+एषः=क एषः; कयेषः इत्यादि। (३) स्वरवर्ण परे रहने से वैयाकरण लोग आ के परस्थित विसर्ग के स्थान में य् भी करते हैं। यथा, गजाः+इमे=गजा इमे, गजायिमे; नराः+एते=नरा एते, नरायेते इत्यादि।

घटाः=क्रीता घटाः; पुत्राः + जाताः=पुत्रा जाताः; मधुराः + झङ्काराः =मधुरा झङ्काराः; नवाः + डमरवः=नवा डमरवः; गजाः+ढौकन्ते= गजा ढौकन्ते; निर्माणाः+दीपाः=निर्माणा दीपाः; अश्वाः+धावन्ति =अश्वा धावन्ति, उन्नताः + नगाः = उन्नता नगाः; दृढाः + बन्धाः =दृढा बन्धाः; नराः + भीताः = नरा भीताः; अतीताः+ मासाः= अतीता मासाः; छात्राः+यतन्ते=छात्रा यतन्ते; एताः+रथ्याः=एता रथ्याः; नराः+लभन्ते=नरा लभन्ते; वाताः+वान्ति=वाता वान्ति; बालकाः + हसन्ति = बालका हसन्ति ।

८ । "ससजुषो रुः" । स्वरवर्ण वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् परे रहने से अ आ भिन्न स्वरवर्ण के परस्थित विसर्ग के स्थान में तथा सजुष् शब्द के षकार को र् होता है। यथा, कविः + अयम्=कविरयम्; गतिः + इयम् = गतिरियम्; रविः + उदेति = रविरुदेति; श्रीः + असौ = श्रीरसौ; सुधीः + एषः=सुधीरेषः; बन्धुः + आगतः = बन्धुरागतः; गुरु + उवाच=गुरुरुवाच ; वधूः + एषा = वधूरेषा; भूः + इयम् = भूरियम्; मातृः + अर्चय=मातृरर्चय; दुहितृः + आह्वय=दुहितृराह्वय; रवेः + उदयः=रवेरुदयः; तैः + उक्तम्=तैरुक्तम्; विधोः+अस्तगमनम्=विधोरस्तगमनम्; प्रभोः+आदेशः = प्रभोरादेशः; गौः+अयम्=गौरयम्; अपिः + गच्छति=अपिर्गच्छति; हविः + घ्राणम्=हविर्घ्राणम्; गुरुः + जयति=गुरुर्जयति; कृतैः+झङ्कारैः = कृतैर्झङ्कारैः; नवैः+डमरुभिः=नवैर्डमरुभिः; गौः+ढौकते=गौर्ढौकते; रवेः + दर्शनम्=रवेर्दर्शनम्; निः + धनम् = निर्धनम्; दुः + नीतिः = दुर्नीतिः; निः + बन्धः=निर्बन्धः; निः + भयः=निर्भयः; मुहुः+मुहुः= मुहुर्मुहुः; वहिः + योगः = वहिर्योगः; विधुः + लीयते=विधुर्लीयते; वायुः + वाति = वायुर्वाति; शिशुः + हसति=शिशुर्हसति; सजूर्लीयते, सजूर्हसति इत्यादि ।

९। "हशि च"। स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ वा पञ्चम-वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् परे रहने से अ के परस्थित र्-जात विसर्ग (१) स्थान में र् होता है। यथा, पुनः + अपि = पुनरपि; पुनः + आगतः = पुनरागतः; प्रातः + इहागतः = प्रातरिहागतः; प्रातः + एव = प्रातरेव; अन्तः + धानम् = अन्तर्धानम्; स्वः + गतः = स्वर्गतः; भ्रातः + आगच्छ = भ्रातरागच्छ; पितः + अनुमन्यस्व = पितरनुमन्यस्व; मातः + देहि = मातर्देहि; जामातः + वद = जामातर्वद; दुहितः + याहि = दुहितर्याहि (२)।

१०। "रोरि (३); ढ्लोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः" (४)। र परे रहने

---

(१) विसर्ग दो प्रकार के होते हैं, र्-जात और स्-जात। शब्द के अन्त में स्थित र् के स्थान में जो विसर्ग होता है उसे र्-जात और स् के स्थान में जो विसर्ग होता है उसे स्-जात विसर्ग कहते हैं। जिन शब्दों के अन्त में र् रहता है उनके र् के स्थान में आया हुआ विसर्ग, मातृ, पितृ आदि ऋकारान्त शब्दों के सम्बोधन के एकवचन का विसर्ग और अहन् शब्द के न् के स्थान में आया हुआ विसर्ग र्-जात है। जैसे, गीः, धूः, पुनः, प्रातः, अन्तः, स्वः, पितः, मातः, भ्रातः, अहः आदि के विसर्ग र्-जात हैं। जिन शब्दों के अन्त में स् रहता है उनके स् के स्थान में आया हुआ विसर्ग और प्रथमा एकवचन का विसर्ग स्-जात है। जैसे, मनः, वचः, पयः, वेधाः, गजः, नरः, मुनिः, विभुः इत्यादि के विसर्ग स्-जात हैं। (२) अहः + पतिः = अहर्पतिः, अहस्पतिः, अहः पतिः; गीः + पतिः = गीर्पतिः, गीष्पतिः, गीः पतिः; धूः + पतिः = धूर्पतिः, धूष्पतिः, धूः पतिः; अहः + अहः = अहरहः; अहः + गणः = अहर्गणः। किन्तु र्, रु वा विभक्ति परे रहने से अहः के विसर्ग के स्थान में र् नहीं होता। यथा, अहः + रात्रः = अहोरात्रः, अहः + रूपम् = अहोरूपम्, अहः + रजनी = अहोरजनी (पाणिनि के अनुसार अहोरजनी); अहः + करः = अहस्करः; अहः + भ्याम् = अहोभ्याम्। (३) र् परे रहने से विसर्ग के स्थान में जात र् का लोप होता है। (४) ढरेफयोः लोपनिमित्तयोः पूर्वस्य अणः दीर्घः। ढ् के परे ढ् और र् के परे र् रहने से

से विसर्ग के स्थान में जो र होता है उसका लोप होता है और पूर्वस्वर दीर्घ हो जाता है। यथा, पितः + रक्ष = पितारक्ष; निः + रसः = नीरसः; निः + रोगः = नीरोगः; विधुः + राजते = विधूराजते; मातुः + रोदनम् = मातूरोदनम्।

११। "एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि" (१)। अ को छोड़कर कोई स्वर अथवा व्यञ्जनवर्ण परे रहने से सः और एषः, इन दोनों पदों के विसर्ग का लोप हो जाता है; लोप होने पर और सन्धि नहीं होती (२)। यथा, सः + आगतः = स आगतः; सः + इच्छति = स इच्छति; सः + ईहते = स ईहते; सः + उवाच = स उवाच; सः + करोति = स करोति; सः + गच्छति = स गच्छति; सः + चलति = स चलति; सः + हसति = स हसति; एषः + आयाति = एष आयाति; एषः + एति = एष एति; एषः + धावति = एष धावति; एषः + रोदिति = एष रोदिति; एषः + वदति = एष वदति; एषः + शेते = एष शेते; एषः + सहते = एष सहते।

पूर्ववर्त्ती ढ् व र् का लोप होने पर उस ढ् या र् के पूर्व में स्थित अण् (अर्थात् अ, इ, उ) दीर्घ हो जाता है। ढ् लोप का उदाहरण लिढ्+ढः= लीढः, मुढ्+ढः=मूढः इत्यादि।

(१) एतद् तदोः सु लोपः अकोः अनञ् समासे हलि (अक्कारयोः एतत्तदोः यः सुः तस्य लोपः हलि न तु नञ् समासे)। ककार-रहित एतद् तथा तद् शब्दों की प्रथमा विभक्ति सु का लोप होता है हल् परे रहने से। सः तथा एषः का विसर्ग-लोप का उदाहरण ११ वें नियम में है। क-युक्त एतद् तद् के विसर्ग का लोप नहीं होता। यथा, एषकः+रुद्रः= एषकोरुद्रः। नञ् समास में भी नहीं। यथा, असः+शिवः=असशिवः
(२) "सोऽचि लोपे चेत् पादपूरणम्"। श्लोक के पादपूरण की आवश्यकता होने पर सः तथा एषः के विसर्ग का लोप होने के पश्चात् सन्धि हो सकती है। यथा, सैष दाशरथी रामः, सैष राजा युधिष्ठिरः। एषैष रथमारुह्य मथुरां प्रयाति माधवः।

१२ । "भोभगोअघोऽपूर्वस्य योऽशि" । स्वरवर्ण, वर्ग का तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम वर्ण, अथवा य् र् ल् व् ह् परे रहने से भोः इस पद के विसर्ग का लोप होता है; लोप होने पर और सन्धि नहीं होती । यथा, भोः + अम्बरीष=भो अम्बरीष; भोः + ईशान=भो ईशान; भोः + उमापते=भो उमापते; भोः + गदाधर=भो गदाधर; भोः + जनमेजय=भो जनमेजय; भोः + दामोदर =भो दामोदर; भोः + माधव=भो माधव; भोः + यदुपते=भो यदुपते (१) ।

(विसर्गसन्धि के अतिरिक्त नियम परिशिष्ट में देखो ।)

Exercise II (अनुशीलनी, अभ्यासार्थ प्रश्न) ।

१ । सन्धि किसको कहते हैं (What is Sandhi)? सन्धि क प्रकार की हैं (How many kinds of Sandhis are there)? व्यञ्जनसन्धि किसे कहते हैं (What is Euphonic Combination of Consonants-व्यञ्जनसन्धि)?

२ । नियम बताकर सन्धि करो (Join the following citing rules):- रत्न+आकरः, परम+ईश्वरः, गौरी+आगता, रवौ+उदिते, महा+ऋषिः, प्रति+इतिः, मही+इन्द्रः, महा+इन्द्रः, कपि+ईश्वरः, स्व+ईरम्, अद्य+एव, तव+ओष्ठः, रमा+ओष्ठः, स्थूल+ओतुः, भू+आदिः, गो+एषणा, सखे+अधुना, साधो+अत्र, तद्+चलनम्, भवत्+जननम्, राजन्+जीवतु, महत्+शकटम्, महान्+शब्दः, विपद्+हेतुः, उत्+डौकते, सुजन्+ईश्वरः, नृत्यन्+चकोरः, क्षिपन्+थुत्कारम्, सत्यम्+अयात्, गृहे+छिद्रम्, वाक्+दानम्, जगत्+बन्धुः, भवत्+मतम्, दिक्+नागः, रवेः+छविः, भग्नः+ठक्कुरः, नरः+अयम्, दृढः+बन्धः, चन्द्रः+उदेति, गतिः+इयम्, निः+रसः, सः+चलति, गङ्गायाः+तीरम्, सम्राट्+हसति, गीः+पतिः, अप्+भक्ष्यः, सः+अत्र, मशम्+वद, सः+एषः, विष्णुः+त्राता ।

---

(१) भगोः+रक्ष=भगो रक्ष, अघोः+याहि=अघो याहि । स्वरवर्ण परे रहने से भोः के विसर्ग के स्थान में विकल्प से य् होता है । यथा, भोः+ईशानः=भोयीशानः, भो ईशानः ।

३। सन्धि विच्छेद करो (Disjoin):—जगन्नाथः, पावकः, ममापि, षड्विंशतिः, अभ्युपेत्य, गमिष्याम्युपहास्यताम्, क्षीरनिधाविव, एकैनैव, सरस्तीरे, मातृरोदनम्, वाग्घरिः, तच्छ्रुत्वा, विद्वांश्छिलति, काँश्चित्, वृक्षच्छाया, अश्मानम्, लोहितेक्षणम्, नायकः, महोर्म्मिः, मातृणाम्, पित्र्द्धः, स्वागतम्, मनोरथः, स्वर्गतः, गतासूँश्च, शुकनासोऽपि, पाणिरश्मौ, नीरोगः वाग्बाहुल्यम्, अहोरात्रम्, श्रीरसौ, अन्तर्धानम्।

४। शुद्ध करो (Correct):—गङ्गौदकम्, सर्वदेव, वशम्वदः, दुरादृष्टम्, निरव, अत्यान्त, शीतर्च, सन्मानः, किम्वा; मनगतम्, सम्वादः, तान्नाह्य, सम्वत्सरः, अज्मात्रम्, सुन्दरोपुरुषः, कुतागतः, वायुर्चलति, पुनोऽपि, हसञ्चलित।

५। इन वाक्यों को शुद्ध करके लिखो (Correctly rewrite the following Sentences):—

शुष्क काष्ठं तिष्ठत्यग्रे; निरस तरुवरो पुरत भाति; एषो गच्छति विद्यालयम्; कुतागतः बालकरसौ; सर्व्वदेव विद्याभ्यासो कार्य्यः; बालक नदीं गच्छति; एषो भगवान भवानीपतिः; संयत अर्थी धनं काङ्क्षति।

६। अश्वान्+आनय=आश्वान्नानय नहीं होता—क्यों?

णत्व-विधान (Change of 'न' into 'ण')।

१। ऋ, ॠ, र् और मूर्धन्य ष्, इन चार वर्णों के परस्थित दन्त्य न् मूर्धन्य ण होजाता है। यथा, नृ-नाम्, नृणाम्; तिसृ-नाम्, तिसृणाम्; चतसृ-नाम् चतसृणाम्; नॄ-नाम्, नॄणाम्; भ्रातॄ-नाम्, भ्रातॄणाम्; दातॄ-नाम्, दातृणाम्; चतुर्-नाम्, चतुर्णाम्; दोष्-ना, दोष्णा; पूष्-ने, पूष्णे।

२। स्वरवर्ण, कवर्ग, पवर्ग, य्, व्, ह और अनुस्वार, इन सब

वर्णों से व्यवधान रहने से भी न् के स्थान में ण होता है । यथा, कर-नम्, करणम्; करा-नाम्, कराणाम्; करि-ना, करिणा; गुरु-ना, गुरुणा; परे-न, परेण; अर्के-न, अर्केण; मूर्खे-न, मूर्खेण; मृगे-न, मृगेण; दीर्घे-न, दीर्घेण; दर्पे-न, दर्पेण; रेफे-न, रेफेण; दर्भे-न, दर्भेण; द्रुमे-न, द्रुमेण; रये-न, रयेण; गर्व्वे-न, गर्व्वेण; ग्रहे-न, ग्रहेण; वृंह-नम्, वृंहणम् ।

३ । इनको छोड़कर दूसरे वर्ण का व्यवधान रहने से दन्त्य न् मूर्द्धन्य ण् नहीं होता । यथा, अर्चना, मूर्च्छना, अर्जनम्, किरीटेन, षष्ठेन, मृड़ेन, दृढेन, वर्णानाम्, आर्त्तेन, अर्थेन, विमर्द्देन, अर्द्धेन, विरलेन, स्पर्शेन, रसेन ।

४ । पद के अन्त में स्थित न् का ण नहीं होता । यथा, नरान्, हरीन्, गुरून्, भ्रातृन् ।

(णत्व-विधान के अतिरिक्त नियम परिशिष्ट में देखो) ।

षत्व-विधान (Change of 'स्' into 'ष्') ।

१ । अ आ भिन्न स्वर तथा क् और र्, इन वर्णों के परस्थित प्रत्यय का दन्त्य स् मूर्द्धन्य ष् होता है । यथा, मुनि-सु, मुनिषु; गुणि-सु, गुणिषु; नदी-सु, नदीषु; सुधी-सु, सुधीषु; साधु-सु, साधुषु; गुरु-सु, गुरुषु; प्रतिभू-सु, प्रतिभूषु; वधू-सु, वधूषु; भ्रातृ-सु, भ्रातृषु; स्वसृ-सु, स्वसृषु; सर्व्वे-साम्, सर्व्वेषाम्; अन्ये-साम्, अन्येषाम्; गो-सु, गोषु; द्यो-सु, द्योषु; ग्लौ-सु, ग्लौषु;

नौ-सु, नौषु; वाक्-सु, वाक्षु; दिक्-सु, दिक्षु; चतुर्-सु, चतुर्षु; गीर्-सु, गीर्षु (१)।

२। अनुस्वार (२) और विसर्ग का व्यवधान रहने पर भी स् का ष् होता है। यथा, हवीं-सि, हवींषि; धनूं-सि, धनूंषि; आशीः-सु, आशीःषु; धनुः-सु, धनुःषु।

(षत्व-विधान के अतिरिक्त नियम परिशिष्ट में देखो)।

सुबन्त-प्रकरण।

(Declension.)

प्रथमा (First Case or Nominative), द्वितीया (Second Case or Accusative), तृतीया (Third Case or Instrumental), चतुर्थी (Fourth Case or Dative), पञ्चमी (Fifth Case or Ablative), षष्ठी (Sixth Case or Genitive), सप्तमी (Seventh Case or Vocative), यही सात विभक्तियाँ (Inflectional terminations or Case-endings) हैं। शब्द के उत्तर यही सात विभक्तियाँ होती हैं। विभक्ति (सुप्) से युक्त शब्द (प्रातिपदिक) को सुबन्त या पद कहते हैं (३)।

---

(१) सात् प्रत्यय का दन्त्य स् मूर्द्धन्य ष् नहीं होता। यथा, भूमिसात्, अग्निसात्, वायुसात् इत्यादि। (२) नपुंसक (क्लीब) लिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन के पद में जो अनुस्वार रहता है उसको छोड़कर दूसरा अनुस्वार व्यवधान रहने से 'स्' का 'ष्' नहीं होता। यथा, पुंं-सु, पुंसु। (३) साधारणतः कर्त्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया, करण में तृतीया, सम्प्रदान में चतुर्थी, अपादान में पञ्चमी, सम्बन्ध पद में षष्ठी, अधिकरण में सप्तमी, और सम्बोधन पद में प्रथमा विभक्ति होती है।

प्रत्येक विभक्ति में तीन तीन वचन (Number) होते हैं—एकवचन (Singular), द्विवचन (Dual) और वहुवचन (Plural)। शब्द में एकवचन की विभक्ति का योग होने से एक संख्या, द्विवचन की विभक्ति का योग होने से दो संख्या, और वहुवचन की विभक्ति का योग होने से तीन से परार्द्ध तक की सब संख्या समझी जाती है।

विभक्ति की आकृति।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	ः (सु)	औ	अः (जस्)
द्वितीया	अम्	औ (औट)	अः (शस्)
तृतीया	आ (टा)	भ्याम्	भिः (भिस्)
चतुर्थी	ए (ङे)	भ्याम्	भ्यः (भ्यस)
पञ्चमी	अः (ङसि)	भ्याम्	भ्यः (भ्यस)
षष्ठी	अः (ङस्)	ओः (ओस्)	आम्
सप्तमी	इ (ङि)	ओः (ओस्)	सु (सुप)

किस शब्द में किस विभक्ति का योग करने से कैसे पद होते हैं वे क्रम से दिखाये जाते हैं। सम्बोधन (Vocative Case) में प्रथमा विभक्ति होती है, परन्तु किसी किसी शब्द के सम्बोधन के एकवचन में कुछ विशेषता है; इसलिए शब्द-रूप में सम्बोधन का रूप भी पृथक् दिखाया जायगा।

शब्दरूप

(Declension of Words.)

स्वरान्त शब्द (Bases ending in Vowel)·

पुंलिङ्ग (Masculine)।

अकारान्त—गज (Elephant)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	गजः	गजौ	गजाः
द्वितीया	गजम्	गजौ	गजान्
तृतीया	गजेन	गजाभ्याम्	गजैः
चतुर्थी	गजाय	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
पञ्चमी	गजात्	गजाभ्याम्	गजेभ्यः
षष्ठी	गजस्य	गजयोः	गजानाम्
सप्तमी	गजे	गजयोः	गजेषु
सम्बोधन	हे (१) गज	हे गजौ	हे गजाः

प्रायः सभी अकारान्त पुंलिंग शब्दों* के रूप गज शब्द के सदृश होते हैं। अल्प प्रभृति तथा, द्वितीय, तृतीय और पादादि शब्दों † के रूप में कुछ विशेषता है।

आकारान्त—विश्वपा (The Sun, The Moon, Fire)।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम्	विश्वपौ	विश्वपः

---

(१) हे शब्द का प्रयोग सम्बोधन में होता है इसी प्रकार अन्यत्र समझ लो।

* कर (Hand, Ray of light, Tax), नर, मृग, कुश, वृष, रोष, द्रुम, ग्रह, अश्व, शैल, सागर, पराग (Pollen), राम, शिव, वृक्ष इत्यादि।

† इन शब्दों के रूप परिशिष्ट में देखो।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
पञ्चमी	विश्वपः	विश्वपाभ्याम्	विश्वपाभ्यः
षष्ठी	विश्वपः	विश्वपोः	विश्वपाम्
सप्तमी	विश्वपि	विश्वपोः	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः	हे विश्वपौ	हे विश्वपाः

धातुनिष्पन्न समस्त आकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों * के रूप विश्वपा के सदृश हैं। धातुनिष्पन्न शब्दों को छोड़कर दूसरे आकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप परिशिष्ट में देखो।

इकारान्त—मुनि (Sage)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने	हे मुनी	हे मुनयः

पति और सखि शब्दों को छोड़कर समस्त इकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों † के रूप मुनि शब्द के सदृश होते हैं।

* सोमपा, धूमपा, गोपा, तातता, बलदा, शङ्खध्मा इत्यादि।

† निधि, विधि, गिरि, अग्नि, हरि, कवि, कपि, ऋषि, रवि इत्यादि।

पति (Lord, Husband)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते	हे पती	हे पतयः

दूसरे शब्दों के साथ समास होने से समास के अन्त में पति युक्त शब्दों के रूप मुनि शब्द के सदृश होते हैं। यथा, नृपति, भूपति, महीपति, नरपति (King, Sovereign) इत्यादि ※।

सखि (Male friend)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	सखायौ	सखीन्
तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः

※ डति प्रत्ययान्त कति शब्द केवल बहुवचन में ही व्यवहृत होता है। कति (how many)-कति, कति, कतिभिः, कतिभ्यः, कतिभ्यः, कतीनाम्, कतिषु। तीनों लिङ्गों में इसके रूप ऐसे ही होते हैं।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः

ईकारान्त—सुधी (A learned man)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वितीया	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृतीया	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
चतुर्थी	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पञ्चमी	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
षष्ठी	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
सप्तमी	सुधियि	सुधियोः	सुधीषु
सम्बोधन	हे सुधीः	हे सुधियौ	हे सुधियः

सेनानी, अग्रणी, ग्रामणी प्रभृति❀ कई एक शब्दों को छोड़कर प्रायः सब पुंलिङ्ग ईकारान्त शब्दों † के रूप सुधी शब्द के सदृश होते हैं ।

उकारान्त—साधु (A pious man) ।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः

❀ परिशिष्ट में देखो ।

† सुश्री, शुद्धधी, हतधी, दुर्धी, यवक्री, अपह्नी इत्यादि ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो	हे साधू	हे साधवः

क्रोष्टु * भिन्न प्रायः समस्त उकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों † के रूप साधु शब्द के सदृश होते हैं।

ऊकारान्त—प्रतिभू (A surety)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	प्रतिभूः	प्रतिभुवौ	प्रतिभुवः
द्वितीया	प्रतिभुवम्	प्रतिभुवौ	प्रतिभुवः
तृतीया	प्रतिभुवा	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभिः
चतुर्थी	प्रतिभुवे	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभ्यः
पञ्चमी	प्रतिभुवः	प्रतिभूभ्याम्	प्रतिभूभ्यः
षष्ठी	प्रतिभुवः	प्रतिभुवोः	प्रतिभुवाम्
सप्तमी	प्रतिभुवि	प्रतिभुवोः	प्रतिभूषु
सम्बोधन	हे प्रतिभूः	हे प्रतिभुवौ	हे प्रतिभुवः

सुलू, खलपू, वर्षाभू, करभू, काराभू, पुनर्भू प्रभृति ‡ के सिवाय प्रायः सब ही ऊकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों † के रूप प्रतिभू शब्द के ऐसे होते हैं।

---

* क्रोष्टु शब्द परिशिष्ट में देखो। † प्रभु, विभु, विष्णु, रिपु, ऋतु ऋजु, शिशु, पशु, शम्भु, विधु, भानु, वायु, लघु, गुरु इत्यादि।

‡ परिशिष्ट में देखो। † मनोभू, अग्निभू, स्वभू, अधिभू, जितभू इत्यादि।

ऋकारान्त—दातृ (Giver)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दाता	दातारौ	दातारः
द्वितीया	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
तृतीया	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
चतुर्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
पञ्चमी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
षष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
सप्तमी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः	हे दातारौ	हे दातारः

भ्रातृ, पितृ आदि कईएक शब्दों को छोड़कर सब पुंलिंग ऋकारान्त शब्दों * के रूप दातृ शब्द के तुल्य होते हैं।

भ्रातृ (Brother)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भ्राता	भ्रातरौ	भ्रातरः
द्वितीया	भ्रातरम्	भ्रातरौ	भ्रातॄन्
तृतीया	भ्रात्रा	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभिः
चतुर्थी	भ्रात्रे	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
पञ्चमी	भ्रातुः	भ्रातृभ्याम्	भ्रातृभ्यः
षष्ठी	भ्रातुः	भ्रात्रोः	भ्रातॄणाम्

* कर्तृ, ज्ञातृ, हन्तृ, धातृ, विधातृ, सवितृ, श्रोतृ, द्रष्टृ, जेतृ, क्रेतृ इत्यादि।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सप्तमी	भ्रातरि	भ्रात्रोः	भ्रातृषु
सम्बोधन	हे भ्रातः	हे भ्रातरौ	हे भ्रातरः

पितृ, जामातृ, देवृ (Husband's younger brother), सव्येष्टृ (Charioteer), नृ इन कई शब्दों के रूप भ्रातृ शब्द के सदृश होते हैं, केवल नृ शब्द की षष्ठी के बहुवचन में नृणाम्, नॄणाम् ये, दो पद होते हैं।

एकारान्त तथा ऐकारान्त शब्दों के रूप परिशिष्ट में देखो ।

ओकारान्त—गो (Ox or Cow).

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पञ्चमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

सब ओकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप गो शब्द के ऐसे होते हैं।

औकारान्त—ग्लौ (The Moon, Camphor, Earth) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ग्लौः	ग्लावौ	ग्लावः
द्वितीया	ग्लावम्	ग्लावौ	ग्लावः
तृतीया	ग्लावा	ग्लौभ्याम्	ग्लौभिः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	ग्लावे	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
पञ्चमी	ग्लावः	ग्लौभ्याम्	ग्लौभ्यः
षष्ठी	ग्लावः	ग्लावोः	ग्लावाम्
सप्तमी	ग्लावि	ग्लावोः	ग्लौषु
सम्बोधन	हे ग्लौः	हे ग्लावौ	हे ग्लावः

सब औकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों के रूप ग्लौ शब्द के सदृश होते हैं

स्त्रीलिङ्ग (Feminine)।

आकारान्त—लता (Creeper)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चम	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते	हे लते	हे लताः

अम्बा, द्वितीया, तृतीया, सर्वा और जरा शब्दों को छोड़कर प्रायः सभी आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों * के रूप लता शब्द के सदृश होते हैं। अम्बा शब्द के सम्बोधन के एकवचन में अम्ब होता है। और सब विभक्तियों में

---

* विद्या, दुर्गा, शिखा, जटा, रेखा, दया, नासा, नासिका, सेना, सेवा, प्रभा, पूजा, शोभा इत्यादि।

इसका रूप लता शब्द के तुल्य है। अक्का (mother) तथा अल्ला (mother) शब्दों के रूप अम्बा शब्द के ऐसे होते हैं। द्वितीया, तृतीया और जरा प्रभृति शब्दों के रूप परिशिष्ट में देखो।

इकारान्त—मति (Intellect, Mind)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते	हे मती	हे मतयः

सब इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों* के रूप मति शब्द के ऐसे होते हैं।

ईकारान्त—नदी (River)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः

* धूलि, आलि, अवलि, भूमि, रात्रि, पंक्ति, ओषधि, प्रणति, अङ्गुलि, कान्ति, शान्ति, कृति, गति, बुद्धि, श्रुति, स्मृति, भक्ति इत्यादि।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

श्री, ह्री, धी, भी, स्त्री, प्रभृति कई एक शब्दों के सिवाय प्रायः सब दीर्घ-ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों* के रूप नदी शब्द के तुल्य होते हैं। लक्ष्मी शब्द के प्रथमा के एकवचन में लक्ष्मीः यह विसर्गयुक्त पद होता है, और सब विभक्तियों में-इसका रूप नदी शब्द के सदृश है। अवी (ऋतुमती स्त्री, a woman in her menses), तन्त्री (Lute) तरी और स्तरी शब्दों के रूप लक्ष्मी शब्द के तुल्य हैं।

श्री (Fortune, Beauty)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीः	श्रियौ	श्रियः
द्वितीया	श्रियम्	श्रियौ	श्रियः
तृतीया	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
चतुर्थी	श्रियै, श्रिये	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
पञ्चमी	श्रियाः, श्रियः	श्रीभ्याम्	श्रीभ्यः
षष्ठी	श्रियाः, श्रियः	श्रियोः	श्रीणाम्, श्रियाम्
सप्तमी	श्रियाम्, श्रियि	श्रियोः	श्रीषु
सम्बोधन	हे श्रीः	हे श्रियौ	हे श्रियः

---

* काली, गौरी, वाणी, श्रेणी, वीथी, अटवी, ओषधी, अंगुली, मञ्जरी, कुमारी, सुन्दरी, जननी, भगिनी इत्यादि।

ह्री (लज्जा, Bashfulness), धी (बुद्धि, Intellect), भी (भय, Fear), शब्दों के रूप श्री शब्द के तुल्य हैं *।

स्त्री (Woman, Wife)।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्, स्त्रीम्	स्त्रियौ	स्त्रियः, स्त्रीः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

उकारान्त—धेनु (Cow)।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः

* वहुव्रीहि-समास-निष्पन्न स्त्रीलिङ्ग सुधी शब्द के रूप पुंलिङ्ग सुधी शब्द के ऐसा है; कर्मधारय-समास-निष्पन्न स्त्रीलिङ्ग सुधी शब्द के रूप श्री शब्द के तुल्य हैं। वहुव्रीहि-समास-निष्पन्न स्त्रीलिङ्ग प्रधी शब्द का रूप (परिशिष्टस्थ) पुंलिङ्ग प्रधी शब्द के सदृश और कर्मधारय-समास-निष्पन्न स्त्रीलिङ्ग प्रधी शब्द के रूप लक्ष्मी शब्द के तुल्य हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

सब ह्रस्व उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों* के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

ऊकारान्त—वधू (Wife, Woman, Daughter-in-law) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
द्वितीया	वधूम्	वध्वौ	वधूः
तृतीया	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
चतुर्थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पञ्चमी	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
षष्ठी	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
सप्तमी	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः

भ्रू, भू, सुभ्रू आदि कई एक शब्दों के सिवाय सभी दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों† के रूप वधू शब्द के सदृश होते हैं।

---

* तनु, रेणु, चञ्चु, उडु (अश्विनी, भरणी आदि २७ नक्षत्र, Lunar mansion), रज्जु इत्यादि।

† चमू, चञ्चू, तनू, पुनर्भू, प्रसू, वीरसू इत्यादि। किसी किसी के मत में पुनर्भू (a widow remarried) और प्रसू (mother) शब्दों के द्वितीया के एकवचन और बहुवचन में यथाक्रम पुनर्भ्वम्, पुनर्भ्वः और प्रस्वम्,

भ्रू (Eyebrow)

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
द्वितीया	भ्रुवम्	भ्रुवौ	भ्रुवः
तृतीया	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
चतुर्थी	भ्रुवै, भ्रुवे	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
पञ्चमी	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रूभ्याम्	भ्रूभ्यः
षष्ठी	भ्रुवाः, भ्रुवः	भ्रुवोः	भ्रूणाम्, भ्रुवाम्
सप्तमी	भ्रुवाम्, भ्रुवि	भ्रुवोः	भ्रूषु
सम्बोधन	हे भ्रूः	हे भ्रुवौ	हे भ्रुवः

भू शब्द का रूप भ्रू शब्द के तुल्य है। सुभ्रू शब्द का रूप भी भ्रू शब्द के सदृश है, केवल सम्बोधन के एकवचन में सुभ्रु यही ह्रस्व उकारान्त विसर्गहीन पद होता है, इतना ही विशेष है *।

ऋकारान्त—दुहितृ (Daughter)।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	दुहिता	दुहितरौ	दुहितरः
द्वितीया	दुहितरम्	दुहितरौ	दुहितॄः

प्रस्वः होता है और किसी किसी के मत में सभी विभक्तियों में वधू शब्द के तुल्य हैं। वर्षाभू (frog, the herb Punarnava) शब्द के रूप पुनर्भू शब्द के ऐसे हैं; केवल सम्बोधन के एकवचन में frog अर्थ में वर्षाभः और Punarnava अर्थ में वर्षाभु होता है, इतनी ही विशेपता है।

* किन्तु सुभ्रू पुंलिङ्ग होने से सम्बोधन के एकवचन में सुभ्रूः होता है। यथा, गिरीश सुभ्र स्तव पादपद्मं भजन्ति मुक्त्यै कवयोऽसुरारे।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	दुहित्रा	दुहितृभ्याम्	दुहितृभिः
चतुर्थी	दुहित्रे	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
पञ्चमी	दुहितुः	दुहितृभ्याम्	दुहितृभ्यः
षष्ठी	दुहितुः	दुहित्रोः	दुहितॄणाम्
सप्तमी	दुहितरि	दुहित्रोः	दुहितृषु
सम्बोधन	हे दुहितः	हे दुहितरौ	हे दुहितरः

स्वसृ शब्द के सिवाय समस्त ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

स्वसृ (Sister) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसॄः

और सब विभक्तियों में दुहितृ शब्द के तुल्य हैं।

N.B.—ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द पाँच हैं—दुहितृ, मातृ, यातृ, ननान्दृ और स्वसृ। इनमें से दुहितृ, मातृ, यातृ, ननान्दृ, ये चार शब्दों के रूप भ्रातृ शब्द के समान हैं, केवल द्वितीया के बहुवचन में दुहितॄः, मातॄः, यातॄः, ननान्दॄः ऐसे पद होते हैं, इतना ही विशेष है। स्वसृ शब्द का रूप दातृ शब्द के तुल्य है, केवल द्वितीया के बहुवचन में स्वसॄः ऐसा पद होता है, इतना ही भेद है।

ओकारान्त और औकारान्त शब्द।

स्त्रीलिङ्ग ओकारान्त और औकारान्त शब्दों के रूप पुंलिङ्ग ओकारान्त और औकारान्त शब्दों के सदृश होते हैं। द्यो शब्द के रूप गो शब्द के, और नौ शब्द के रूप ग्लौ शब्द के तुल्य हैं।

क्लीव (नपुंसक, Neuter) लिङ्ग ।

अकारान्त* —फल (Fruit) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल	हे फले	हे फलानि

प्रायः सब अकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों † के ऐसे ही रूप होते हैं।

इकारान्त—वारि (Water) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि

---

* प्रथमा और द्वितीया को छोड़कर और सब विभक्तियों में क्लीवलिङ्ग अकारान्त शब्दों के रूप पुंलिङ्ग अकारान्त शब्दों के सदृश हैं।

† जल, बल, धन, वन, कानन, ज्ञान, तृण, शष्प, पुष्प, कमल, मूल, पत्र, कुसुम इत्यादि। अजर, शीर्ष, हृदय, उदक, आसन और मांस शब्दों के रूप में विशेषता है। इनके रूप परिशिष्ट में देखो।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारे, हे वारि	हे वारिणी	हे वारीणि

दधि, अक्षि, अस्थि (bone), सक्थि (thigh) भिन्न समस्त विशेष्य ह्रस्व इकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

दधि (Curd)।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे, हे दधि	हे दधिनी	हे दधीनि

अक्षि, अस्थि और सक्थि शब्दों के रूप इसी प्रकार के होते हैं; केवल अक्षि शब्द के रूप में जो 'न्' आता है वह णत्वविधि के नियमानुसार 'ण' हो जाता है, इतना ही विशेष है।

उकारान्त—मधु (Honey) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो, हे मधु	हे मधुनी	हे मधूनि

प्रायः सब विशेष्य ह्रस्व उकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों* के रूप ऐसे ही होते हैं।

विशेषण इकारान्त और उकारान्त क्लीवलिङ्ग* शब्दों के रूप विशेष्य इकारान्त और उकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्द के सदृश होते हैं; केवल चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में और षष्ठी तथा सप्तमी के द्विवचन में पुंलिङ्ग इकारान्त और उकारान्त शब्दों के ऐसे रूप भी होते हैं। यथा :—

(१) अनादि (Eternal) ।

	एकवचन	द्विवचन ।
चतुर्थी	अनादिने, अनादये	....
पञ्चमी	अनादिनः, अनादेः	....
षष्ठी	अनादिनः, अनादेः	अनादिनोः, अनाद्योः
सप्तमी	अनादिनि, अनादौ	अनादिनोः, अनाद्योः

---

*जानु (knee), वस्तु, वसु (wealth), दारु (wood), अम्बु, अश्रु, स्नु इत्यादि। सानु (peak, ridge) शब्द के रूप में विशेषता है; परिशिष्ट में देखो।

और सब विभक्तियों में इसका रूप वारि शब्द के सदृश होता है। सब विशेषण इकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

(२) स्वादु (Sweet)।

	एकवचन	द्विवचन
चतुर्थी	स्वादुने, स्वादवे	....
पञ्चमी	स्वादुनः, स्वादोः	....
षष्ठी	स्वादुनः, स्वादोः	स्वादुनोः, स्वाद्वोः
सप्तमी	स्वादुनि, स्वादौ	स्वादुनोः, स्वाद्वोः

और सब विभक्तियों में इसका रूप मधु शब्द के तुल्य होता है। सब विशेषण उकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

ऋकारान्त—धातृ (The Creator)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धातृ	धातृणी	धातॄणि
द्वितीया	धातृ	धातृणी	धातॄणि
तृतीया	धातृणा, धात्रा	धातृभ्याम्	धातृभिः
चतुर्थी	धातृणे, धात्रे	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
पञ्चमी	धातृणः, धातुः	धातृभ्याम्	धातृभ्यः
षष्ठी	धातृणः, धातुः	धातृणोः, धात्रोः	धातॄणाम्
सप्तमी	धातृणि, धातरि	धातृणोः, धात्रोः	धातृषु
सम्बोधन	हे धातृ, हे धातः	हे धातृणी	हे धातॄणि

सब ऋकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों के रूप धातृ शब्द के समान होते हैं।

Exercise III. (अनुशीलनी-अभ्यासार्थ प्रश्न ।)

मन्तव्य—अनुवाद की सुविधा के लिए स्वरान्त शब्द सीखने के पश्चात् बालकों को सर्वनाम शब्दों में से अस्मद्, युष्मद्, यद्, तद् आदि शब्द, धातुरूप में से भू, स्था, गम्, श्रु, कृ आदि धातु और कारक पढ़ा देना अच्छा है ।

1. Hints :—विशेषण (Adjective), विशेष्य (Noun) का गुण और अवस्था प्रकाशित करता है और वह प्रायः विशेष्य के पूर्व में रहता है । संस्कृत में विशेष्य के जो लिङ्ग, वचन और विभक्तियाँ होती हैं उसके विशेषण के भी वे ही लिङ्ग, वचन और विभक्तियाँ होती हैं (In Sanskrit the adjective has the same *gender, number* and *case-ending* as the Noun, it qualifies, has).

2. हिन्दी तथा अँगरेजी आदि के जैसा संस्कृत में तीन पुरुष (Persons) हैं—उत्तम पुरुष (First person), मध्यम पुरुष (Second person), और प्रथम पुरुष (Third person) । अस्मद् शब्द से उत्तम पुरुष, युष्मद् शब्द से मध्यम पुरुष, और इनको छोड़ कर और सब ही शब्दों से प्रथम पुरुष समझा जाता है ।

Nominative case (कर्तृ कारक—कर्ता), उत्तम पुरुष—अहम् (मैं, I), आवाम् (हम दोनों, we two, or both of us), वयम् (हम, we) । मध्यम पुरुष—त्वम् (तू, thou), युवाम् (तुम दोनों, you two, or both of you), यूयम् (तुम, you) । प्रथम पुरुष, सः (वह, he), तौ (वे दोनों, they two, or both of them), ते (वे, they), नरः (a man), नरौ (two men), नराः (men) इत्यादि ।

Objective case (कर्म्मकारक—कर्म्म), उत्तम पुरुष—माम्, मा (मुझे, मुझको, me), आवाम्, नौ (हम दोनों को, to two of us, or to both of us),

अस्मान्, नः (हमें, हमको, us)। मध्यम पुरुष—त्वाम्, त्वा (तुझे, तुझको, thee), युवाम्, वाम् (तुम दोनों को, to you two, or to both of you), युष्मान्, वः (तुम्हें, तुमको, to you)। प्रथम पुरुष—तम् (उसे, उसको, him), तौ (उन दोनों को, to two of them, or to both of them), तान् (उन्हें, उनको, them), नरम् (to a man), नरौ (to two men), नरान् (to men) इत्यादि।

Possessive case (सम्बन्ध-पद), उत्तम पुरुष—मम, मे (मेरा, my, mine), आवयोः, नौ (हम दोनों का, of two of us, or of both of us), अस्माकम्, नः (हमारा, our, ours)। मध्यम पुरुष—तव, ते (तेरा, thy, thine), युवयोः, वाम् (तुम दोनों का, of you two, or of both of you), युष्माकम्, वः (तुम्हारा, your, yours)। प्रथम पुरुष—तस्य (उसका, his), तयोः (उन दोनों का, of two of them, or of both of them), तेषाम् (उनका, उन्हों का, their, theirs); नरस्य (man's, or of the man), नरयोः (two men's, or of two men), नराणाम् (mens', or of the men) इत्यादि।

3. Model Translation (अनुवादादर्श):—I go=अहं गच्छामि; we (two) go=आवां गच्छावः; we go=वयं गच्छामः। Thou goest=त्वं गच्छसि; you (two) go=युवां गच्छथः; you go=यूयं गच्छथ। He goes=सः गच्छति; they (two) go=तौ गच्छतः; they go=ते गच्छन्ति। Men go=नराः गच्छन्ति। Ram goes=रामो गच्छति। A beautiful man=सुन्दरो नरः; Two beautiful men=सुन्दरौ नरौ, Beautiful men=सुन्दरा नराः; To beautiful men=सुन्दरान् नरान्। By an ignorant boy=मूर्खेण बालकेन। From the father=पितुः। The house of a king=नृपतेरालयः। In the town=नगरे। Of the mountains=पर्व्वतानाम्। *Surely* (हि) *the milk of the cow* (गवां क्षीरम्) *is sweet* (मधुरं)=मधुरम् हि गवां क्षीरम्।

Krishna is the friend of Arjun=अर्जुनस्य सखा कृष्णः । King is the protector of men=नराणां रक्षको नृपः । From the givers=दातृभ्यः । An old man=वृद्धः पुरुषः । A red flower=रक्तं पुष्पम् । A chaste woman=पतिव्रता (साध्वी) नारी । Surely (हि) a man (नर) *is the enemy* (रिपुः) *of a man* (नरस्य)=नरो हि नरस्य रिपुः । From an enemy=अरेः, रिपोः, शत्रोः । In the hand=पाणौ, हस्ते । Waves of the sea=समुद्रस्य तरङ्गाः, उदधेर्वीचयः । High trees=उन्नता वृक्षाः, उन्नतास्तरवः । In the hermitage of the sages=ऋषीणामाश्रमे । Big trees=विशालास्तरवः । Cool air=शीतलः समीरणः । To the wives=पत्नीभ्यः । A handsome lady=लावण्यमयी ललना । Affectionate mother=स्नेहमयी माता (जननी) । In the shade of a tree=तरोश्छायायाम् । In the house of the son-in-law=जामातुरालये । To the brother of the father=पितुर्भ्रातरम् (or पितृव्यम्) । To the brother of the husband=पत्युर्भ्रातरम् (or देवरम्) । Shiva's wife Gauri is the daughter of Himalaya=शिवस्य वनिता गौरी हिमालयस्य दुहिता । Krishna's sister Subhadra is the wife of Arjun=कृष्णस्य स्वसा सुभद्रा अर्जुनस्य पत्नी । Wet clothes=सिक्तानि (आर्द्राणि) वसनानि । Two hard bones=कठिने अस्थिनी । Lame of one leg=पादेन खञ्जः । Brahmin by caste जात्या ब्राह्मणः । How many sons have you ?=कति भवतः पुत्राः ?

4. Translate into Sanskrit:—We go home. Boys go to school. Many black cows. Valmiki is the first poet. Bright stars. Two dead men. By *intelligent* (सुबुद्धि) boys. By the order of the *general* (सेनापति). The *guests* (अतिथि) in the *house* (गृह) of a *giver* (दातृ). To *hungry* (क्षुधार्त) *beggars* (भिक्षुक). In *deep* (गम्भीर) *wells* (कूप). *Snakes* (सर्प) are *reptiles* (सरीसृप). A *sword* (खड्ग) in the *hand* (पाणि) of the *warrior* (योध्). *Among poets* (कविषु) Kalidas *is the best* (श्रेष्ठ). Lakshmi is the *wife* (स्त्री, वनिता) of Vishnu. *The cows* (धेनु) of the sages. By the *female attendants* (सखी) of the *queen* (राज्ञी). The daughter of

Rama's sister. Flowers, fruits *and* (च) roots. White flowers in the forest. *Travelling* (भ्रमणम्) in *spring* (वसन्त) *is beneficial* (हितकरम्). Men's life *is transitory* (अनित्यम्). *Muddy* (पङ्किल) water of the river. *The sight* (दृश्य) of the *rising* (उदीयमान) sun in the sea-coast is very *charming* (मनोहर). Contentment is the source of happiness. Jadu's sister is an *accomplished* (सर्वगुणालंकृत) woman. Arundhati is the wife of Vashishtha. The earth is round. *Seen* (दृष्टः) by *the learned* (विदुषी) girl. *Given* (दत्तम्) by the cows of the sages. Of the mountains the Himalayas are the *highest* (उच्चतम).

5. Translate into English:—विधेः; नृपतौ; सुश्रिया; निशायाम्; चञ्चला मतिः; दीपानामुज्ज्वलाः शिखाः; पुष्पिते लते; हिंसा जन्तूनां प्रकृतिः; पतिर्हि गुरुः स्त्रीणाम्; शोभनश्चन्द्रः; व्याघ्रात् भीताः भिक्षवः; कर्णेन वधिरो बालकः; गुणेषु विनयः श्रेष्ठः; देवानामरयः दैत्याः; सुन्दरमाननम्; उष्णेन वारिणा; वृद्धस्य वचनं ग्राह्यम्; पीडितस्यौषधं पथ्यम्; अमृतं बालानां भाषितम्; रोगे भ्रमणं स्वास्थ्यस्य अहितकरम्; गुरोरादेशः सदा पालनीयः।

6. Correct:—भीषणेन अनलस्य; ग्रहणामधिपतिर्भानुम्; करुणानिधानेन गुरुभिः; परोपकारो परमं धर्म्मः; सभास्य परमः शोभा; शस्यपूर्णम् वसुन्धरा; कमला सदैव चञ्चलाः; स्वास्थ्यं सुखस्य निदानः; पवित्रमुदकः गङ्गायाः; मूर्खाणाम् जीवनं शून्यः; उद्यानस्य सुन्दरम् कुसुमानि; मलिनेन कन्थया आवृतं देहः; साधुः भार्य्या असाधुः पतिः; ऋणम् स्नेहमयी जनन्याः।

7. Point out the difference and resemblance in the declension of the bases:—मुनि, पति and सखि; नदी, श्री and स्त्री; वधू, भ्रू and सुभ्रू; and वारि, दधि and अनादि।

8. Explain the formation of:—अम्ब, दातॄन्; सुधियः, मृगीम्, देवि, साधोः, गोः, ग्लावः, वधूः, वैदेह्याः, मातुः, भुवि, फले, दधीनि, वारीणाम्, मधुनो, स्वादुभिः, स्वाद्वोः, फल, गजान् and विश्वपः।

9. Give the alternative forms of:—अल्पे, नृणाम्, मत्यै, मतौ, श्रियः, श्रीणाम्, स्त्रीः, धेनोः, वारे, अक्षणि, मधो, स्वादोः, अनादये and धातृणी।

व्यञ्जनान्त शब्द ।

(Bases ending in Consonants.)

पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग (Masculine and Feminine).

व्यञ्जनान्त पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप एक ही प्रकार के होते हैं ; इसलिए दोनों लिङ्गों के रूप एकत्र लिखे जाते हैं ।

ककारान्त तथा खकारान्त शब्दों के रूप परिशिष्ट में देखो ।

चकारान्त—जलमुच् (Cloud) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जलमुक्	जलमुचौ	जलमुचः
द्वितीया	जलमुचम्	जलमुचौ	जलमुचः
तृतीया	जलमुचा	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भिः
चतुर्थी	जलमुचे	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
पञ्चमी	जलमुचः	जलमुग्भ्याम्	जलमुग्भ्यः
षष्ठी	जलमुचः	जलमुचोः	जलमुचाम्
सप्तमी	जलमुचि	जलमुचोः	जलमुक्षु
सम्बोधन	हे जलमुक्	हे जलमुचौ	हे जलमुचः

प्राच्, प्रत्यच्, तिर्य्यंच्, उदच् प्रभृति* कई एक शब्दों को छोड़कर सभी चकारान्त पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों † के रूप जलमुच् शब्द के सदृश होते हैं ।

---

* इन शब्दों के रूप परिशिष्ट में देखो । † पुंलिङ्ग—वारिमुच्, पयोमुच इत्यादि । स्त्रीलिङ्ग—वाच्, त्वच्, रुच्, स्रुच्, शुच्, ऋच् इत्यादि ।

जकारान्त—वणिज् (Merchant) पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
द्वितीया	वणिजम्	वणिजौ	वणिजः
तृतीया	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
चतुर्थी	वणिजे	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
पञ्चमी	वणिजः	वणिग्भ्याम्	वणिग्भ्यः
षष्ठी	वणिजः	वणिजोः	वणिजाम्
सप्तमी	वणिजि	वणिजोः	वणिक्षु
सम्बोधन	हे वणिक्	हे वणिजौ	हे वणिजः

सम्राज्, देवराज्, विराज्, परिव्राज्, विश्वसृज् आदि कई एक शब्द भिन्न सव जकारान्त पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों * के रूप वणिज् शब्द के सदृश होते हैं।

सम्राज् (Emperor) पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	सम्राट्	सम्राजौ	सम्राजः
द्वितीया	सम्राजम्	सम्राजौ	सम्राजः

* पुंलिङ्ग—भिषज्, ऋत्विज्, भूतिभुज्, वलिभुज्, हुतभुज्, दुःखभाज्, भूभुज् इत्यादि। स्त्रीलिङ्ग—स्रज्, रुज् इत्यादि। रुधादिगणीय धातु से निष्पन्न युज् शब्द की प्रथमा विभक्ति में युङ्, युञ्जौ, युञ्जः; द्वितीया में युञ्जम्, युञ्जौ, युजः, और सव विभक्तियों में वणिज् शब्द के ऐसा। दिवादिगणीय धातु से निष्पन्न युज् शब्द का रूप सभी विभक्तियों में वणिज् शब्द के तुल्य है। विश्वसृज् शब्द का रूप सम्राज् के ऐसा होता है। यथा, विश्वसृट् इत्यादि।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	सम्राजा	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भिः
चतुर्थी	सम्राजे	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
पञ्चमी	सम्राजः	सम्राड्भ्याम्	सम्राड्भ्यः
षष्ठी	सम्राजः	सम्राजोः	सम्राजाम्
सप्तमी	सम्राजि	सम्राजोः	सम्राट्सु
सम्बोधन	हे सम्राट्	हे सम्राजौ	हे सम्राजः

देवराज्, विराज्, परिव्राज्, विभ्राज्, देवेज्, और परिमृज् शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं। विश्वराज् शब्द का रूप भी ऐसा होता है, केवल जहाँ ज् के स्थान में ट् वा ड् होता है वहाँ विश्वा होता है। यथा, विश्वाराट्, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराट्सु, खनज् आदि शब्दों के रूप परिशिष्ट में देखो।

तकारान्त—भूभृत् (Mountain, King)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पञ्चमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
सम्बोधन	हे भूभृत्	हे भूभृतौ	भूभृतः

प्रायः सब अत् (शतृ), स्यत् (स्यतृ) प्रत्ययान्त शब्द, सभी मत् (मतुप्), वत् (वतुप् अथवा मतुप्), तवत् (क्तवतु) प्रत्ययान्त शब्द और महत् शब्द भिन्न सभी पुंलिङ्ग और स्त्रीलिंग तकारान्त शब्दों* के रूप भूभृत् शब्द के सदृश होते हैं।

गायत् (Singing)।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	गायन्	गायन्तौ	गायन्तः
द्वितीया	गायन्तम्	गायन्तौ	गायतः
तृतीया	गायता	गायद्भ्याम्	गायद्भिः
चतुर्थी	गायते	गायद्भ्याम्	गायद्भ्यः
पञ्चमी	गायतः	गायद्भ्याम्	गायद्भ्यः
षष्ठी	गायतः	गायतोः	गायताम्
सप्तमी	गायति	गायतोः	गायत्सु
सम्वोधन	गायन्	गायन्तौ	गायन्तः

जाग्रत्, शासत्, जक्षत्, दरिद्रत्, चकासत्, ददत्, दधत्, विभ्रत् आदि शब्द भिन्न सब अत् (शतृ) और स्यत् (स्यतृ) प्रत्ययान्त शब्दों † के रूप गायत् शब्द के तुल्य हैं। अत् और (स्यत्) प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में तकारान्त नहीं रहते, दीर्घ ईकारान्त हो जाते हैं। भवत् शब्द का रूप गायत् शब्द के ऐसा है, परन्तु जब भवत् का अर्थ 'तुम' होता है तब इसका रूप श्रीमत् शब्द के सदृश होता है। जाग्रत् आदि शब्दों के रूप भूभृत् शब्द के तुल्य हैं।

---

*पुंलिङ्ग—महीभृत (Mountain), विपश्चित्, महीक्षित्, दिनकृत्, ग्रावभृत, परभृत् (crow), इन्द्रजित्, तनूनपात् (fire), प्रियकृत्, दत्, हरित्, मरुत्, इत्यादि तथा अत् और स्यत् प्रत्ययान्त—जाग्रत, शासत्, उदत्, विभ्रत्, प्रभृति। स्त्रीलिङ्ग—सरित्, योषित्, तड़ित्, विद्युत् इत्यादि।

† भवत्, कुर्वत्, गच्छत्, तिष्ठत्, ध्यायत्, ब्रुवत्, पिवत्, जानत्, गृह्णत्, इच्छत्, पश्यत्, नृत्यत्, धावत्, द्विषत्, करिष्यत्, गमिष्यत्, स्थास्यत्, यास्यत्, दास्यत् इत्यादि। वृहत् और पृषत् शब्द का रूप गायत् शब्द के ऐसा होता है।

N. B.—प्रथमा के तीनों वचन, द्वितीया के एकवचन और द्विवचन तथा सम्बोधन के सिवाय और सब विभक्तियों में गायत् शब्द का रूप भूभृत् शब्द के तुल्य है।



श्रीमत् (Beautiful) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीमान्	श्रीमन्तौ	श्रीमन्तः
द्वितीया	श्रीमन्तम्	श्रीमन्तौ	श्रीमतः
तृतीया	श्रीमता	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भिः
चतुर्थी	श्रीमते	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
पञ्चमी	श्रीमतः	श्रीमद्भ्याम्	श्रीमद्भ्यः
षष्ठी	श्रीमतः	श्रीमतोः	श्रीमताम्
सप्तमी	श्रीमति	श्रीमतोः	श्रीमत्सु
सम्बोधन	हे श्रीमन्	हे श्रीमन्तौ	हे श्रीमन्तः

मत् (मतुप्) वत् (वतुप्) और तवत् (क्तवत्) प्रत्ययान्त शब्दों* के रूप श्रीमत् शब्द के ऐसे होते हैं। उक्त प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में तकारान्त नहीं रहते, दीर्घ ईकारान्त हो जाते हैं।

N. B.—श्रीमत् शब्द का रूप गायत् शब्द के ऐसा ही है, केवल प्रथमा के एकवचन में न् के पूर्ववर्त्ती 'अ' का 'आ' हुआ है; इतनी ही विशेषता है। इससे यह सिद्ध होता है कि मत्, वत् और तवत् प्रत्ययान्त सभी शब्दों के रूप अत् (शतृ) प्रत्ययान्त गायत् शब्द के तुल्य होते हैं; केवल प्रथमा के एकवचन में 'न्' के पूर्वस्थित 'अ' को 'आ' होता है, इतना ही अन्तर है।

---

* मत्प्रत्ययान्त—धीमत्, बुद्धिमत्, मतिमत्, अंशुमत्, आयुष्मत्, धनुष्मत् इत्यादि। वत्प्रत्ययान्त—ज्ञानवत्, प्रज्ञावत्, लज्जावत्, विद्यावत्, भगवत्, युष्मदर्थक भवत्, यावत्, तावत्, एतावत्, कियत्, इयत्, नभस्वत्, विवस्वत् इत्यादि। तवत् प्रत्ययान्त—कृतवत्, स्थितवत्, ज्ञातवत्, गतवत्, जितवत्, श्रुतवत्, दृष्टवत्, उक्तवत् इत्यादि। भगवत्, अघवत्, युष्मदर्थक भवत् शब्दों के सम्बोधन के प्रथमा एकवचन में दो दो पद होते हैं। यथा भगोः, भगवन्, अघोः, अघवन्, भोः, भवन्।

महत् (Great) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	महान्	महान्तौ	महान्तः
द्वितीया	महान्तम्	महान्तौ	महतः
सम्बोधन	महन्	महान्तौ	महान्तः

और सब विभक्तियों में भूभृत् शब्द के ऐसा होता है ।

दकारान्त—सुहृद् (Friend) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	सुहृत्, सुहृद्	सुहृदौ	सुहृदः
द्वितीया	सुहृदम्	सुहृदौ	सुहृदः
तृतीया	सुहृदा	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भिः
चतुर्थी	सुहृदे	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
पञ्चमी	सुहृदः	सुहृद्भ्याम्	सुहृद्भ्यः
षष्ठी	सुहृदः	सुहृदोः	सुहृदाम्
सप्तमी	सुहृदि	सुहृदोः	सुहृत्सु
सम्बोधन	सुहृत्, सुहृद्	सुहृदौ	सुहृदः

सब दकारान्त पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों* के रूप ऐसे होते हैं। सुपाद् आदि के रूप में विशेषता है; परिशिष्ट में देखो ।

---

*पुंलिङ्ग—निरापद्, सभासद्, दिविषद्, उद्भिद्, पद् इत्यादि; स्त्रीलिङ्ग—आपद्, सम्पद्, विपद्, उपनिषद्, तुद् (Mulberry tree), मृद्, परिषद्, संसद् (Assembly), संविद् (Intellect), दृषद् (Stone, Rock), शरद् इत्यादि ।

धकारान्त—वीरुध् (Creeper) स्त्रीलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वीरुत्, वीरुद्	वीरुधौ	वीरुधः
द्वितीया	वीरुधम्	वीरुधौ	वीरुधः
तृतीया	वीरुधा	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भिः
चतुर्थी	वीरुधे	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्यः
पञ्चमी	वीरुधः	वीरुद्भ्याम्	वीरुद्भ्यः
षष्ठी	वीरुधः	वीरुधोः	वीरुधाम्
सप्तमी	वीरुधि	वीरुधोः	वीरुत्सु
सम्बोधन	वीरुत्, वीरुद्	वीरुधौ	वीरुधः

प्रायः सभी धकारान्त शब्दों* के रूप ऐसे होते हैं ।

नकारान्त शब्द ।

नकारान्त शब्द तीन प्रकार के हैं—अन्-भागान्त; इन्-भागान्त और हन्-भागान्त ।

अन्-भागान्त—लघिमन् (Lightness) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघिमा	लघिमानौ	लघिमानः
द्वितीया	लघिमानम्	लघिमानौ	लघिम्नः
तृतीया	लघिम्ना	लघिमभ्याम्	लघिमभिः
चतुर्थी	लघिम्ने	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः

---

*पुंलिङ्ग—मृगाविध् (Hunter), युयुध्, धर्म्मबुध् (Knowing the law); स्त्रीलिङ्ग—क्षुध्, युध, समिध् इत्यादि। धकारान्त पुंलिङ्ग शब्द बहुत ही कम होते हैं। बुध् (A learned man) शब्द का रूप वीरुध् शब्द के तुल्य है; केवल प्रथमा तथा सम्बोधन के एकवचन में और तृतीया, चतुर्थी तथा पञ्चमी के द्विवचन और बहुवचन में, और सप्तमी के बहुवचन में बु के स्थान में भु हो जाता है, इतनी ही विशेषता है ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	लघिम्नः	लघिमभ्याम्	लघिमभ्यः
षष्ठी	लघिम्नः	लघिम्नोः	लघिम्नाम्
सप्तमी	लघिम्नि, लघिमनि	लघिम्नोः	लघिमसु
सम्बोधन	लघिमन्	लघिमानौ	लघिमानः

आत्मन्, युवन्, मघवन्, श्वन् आदि कईएक शब्दों को छोड़कर प्रायः सब अन्-भागान्त पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों* के रूप लघिमन् शब्द के सदृश हैं। राजन् तथा दोषन् शब्दों के रूप लघिमन् शब्द के ऐसे ही हैं केवल लघिमन् के रूप में जहाँ म्न है राजन् शब्द के रूप में वहाँ ज्ञ और दोषन् के रूप में ष्ण होता है, इतना ही अन्तर है।

आत्मन् (Soul, Self) पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	आत्मन्	आत्मानौ	आत्मानः

* पुंलिङ्ग—गरिमन्, प्रथिमन्, म्रदिमन्, द्रढिमन्, महिमन्, प्रेमन्, मूर्द्धन्, वेमन् (Loom), दोषन्, राजन् इत्यादि; स्त्रीलिङ्ग—सीमन्, पामन् इत्यादि। पूषन् (Sun) शब्द की प्रथमा विभक्ति में पूषा, पूषणौ, पूषणः; द्वितीया में पूषणम्, पूषणौ, पूष्णः और सप्तमी के एकवचन में पूष्णि, पूषणि होता है और सब विभक्तियों में लघिमन् के ऐसा, केवल जहाँ म्न है वहाँ ष्ण होता है, इतनी ही विशेषता है। अर्य्यमन् के प्रथमा में अर्य्यमा, अर्य्यमणौ, अर्य्यमणः; द्वितीया में अर्य्यमणम्, अर्य्यमणौ, अर्य्यम्णः; और सब विभक्तियों में लघिमन् के ऐसा, केवल सम्बोधन के एकवचन के सिवाय सभी न् के स्थान में ण् होता है।

जिन अन्-भागान्त शब्दों* के अन् का अकार म् अथवा व् संयुक्त-वर्ण में मिला रहता है उनके रूप आत्मन् शब्द के समान होते हैं।

युवन् (Youth) पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	युवा	युवानौ	युवानः
द्वितीया	युवानम	युवानौ	यूनः
तृतीया	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
चतुर्थी	यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पञ्चमी	यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
षष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
सप्तमी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	युवन्	युवानौ	युवानः

मघवन् † (Indra) पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मघवा	मघवानौ	मघवानः
द्वितीया	मघवानम्	मघवानौ	मघोनः
तृतीया	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभिः
चतुर्थी	मघोने	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
पञ्चमी	मघोनः	मघवभ्याम्	मघवभ्यः
षष्ठी	मघोनः	मघोनोः	मघोनाम्

* पुंलिङ्ग—यज्वन्, यक्ष्मन्, अश्मन्, द्विजन्मन्, ब्रह्मन्, महात्मन् इत्यादि। अर्व्वन् (Horse) शब्द के रूप में न् के स्थान में त् होकर सभी विभक्तियों में श्रीमत् शब्द के सदृश हैं, केवल प्रथमा के एकवचन में अर्व्वा होता है। अनर्व्वन् शब्द का रूप आत्मन् शब्द के तुल्य है।

† मघवन् शब्द के न् के स्थान में त् होकर श्रीमत् शब्द के सदृश और एक रूप सम्बोधन को छोड़कर सभी विभक्तियों में होता है। यथा,: मघवान्, मघवन्तौ, मघवन्तः इत्यादि।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
सप्तमी	मघोनि	मघोनोः	मघवसु
सम्बोधन	मघवन्	मघवानौ	मघवानः

श्वन् (Dog) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	श्वा	श्वानौ	श्वानः
द्वितीया	श्वानम्	श्वानौ	शुनः
तृतीया	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
चतुर्थी	शुने	श्वभ्याम्	श्वभ्यः
पञ्चमी	शुनः	श्वभ्याम	श्वभ्यः
षष्ठी	शुनः	शुनोः	शुनाम्
सप्तमी	शुनि	शुनोः	श्वसु
सम्बोधन	श्वन्	श्वानौ	श्वानः

इन्-भागान्त—गुणिन् (Qualified) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधन	गुणिन्	गुणिनौ	गुणिनः

पथिन्, मथिन्, ऋभुक्षिन् (इन्द्र) भिन्न समस्त इन्-भागान्त शब्दों* के रूप गुणिन् शब्द के तुल्य होते हैं ।

---

*पुंलिङ्ग—बलिन्, ज्ञानिन्, मेधाविन्, तपस्विन्, मनोहारिन्, एकाकिन्,

पथिन् (Path, Way) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
द्वितीया	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
तृतीया	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
चतुर्थी	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पञ्चमी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
षष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
सप्तमी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः

मथिन् (Churning stick) शब्द का रूप ऐसा ही है। ऋभुक्षिन् शब्द के रूप भी पथिन् शब्द के तुल्य हैं, केवल प्रथमा विभक्ति में ऋभुक्षाः, ऋभुक्षाणौ, ऋभुक्षाणः, और द्वितीया के एकवचन में ऋभुक्षाणम्, और द्विवचन में ऋभुक्षाणौ ऐसे रूप होते हैं, इतनी ही विशेषता है* ।

हन्-भागान्त—वृत्रहन् (Indra) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहणः
द्वितीया	वृत्रहणम्	वृत्रहणौ	वृत्रघ्नः
तृतीया	वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः
चतुर्थी	वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
पञ्चमी	वृत्रघ्नः	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभ्यः
षष्ठी	वृत्रघ्नः	वृत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्

करिन्, हस्तिन्, पक्षिन्, यामिन्, अर्थिन्, मन्त्रिन्, वाजिन्, विपश्चिन्, स्वामिन् इत्यादि। इन्-भागान्त शब्द का स्त्रीलिङ्ग ई लगाकर बनता है, इसलिए इन्-भागान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द नहीं हैं।

* द्वितीया के बहुवचन में ऋभुक्षः; तृतीया ऋभुक्षा, ऋभुक्षिभ्याम्, ऋभुक्षिभिः इत्यादि।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सप्तमी	वृत्रघ्नि, वृत्रहणि	वृत्रघ्नोः	वृत्रहसु
सम्बोधन	वृत्रहन्	वृत्रहणौ	वृत्रहणः

सभी हन्-भागान्त शब्दों के ऐसे रूप होते हैं*। 'हन्' के स्थान में त्र होने से दन्त्य न् मूर्द्धन्य ण् नहीं होता।

पकारान्त†—अप् (Water) स्त्रीलिङ्ग ।

अप् शब्द का प्रयोग केवल बहुवचन में होता है।

	बहुवचन
प्रथमा	आपः
द्वितीया	अपः
तृतीया	अद्भिः
चतुर्थी	अद्भ्यः
पञ्चमी	अद्भ्यः
षष्ठी	अपाम्
सप्तमी	अप्सु
सम्बोधन	आपः

भकारान्त—ककुभ् (Quarter, Region) स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ककुप्, ककुब्	ककुभौ	ककुभः
द्वितीया	ककुभम्	ककुभौ	ककुभः
तृतीया	ककुभा	ककुब्भ्याम्	ककुब्भिः
चतुर्थी	ककुभे	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्यः
पञ्चमी	ककुभः	ककुब्भ्याम्	ककुब्भ्यः
षष्ठी	ककुभः	ककुभोः	ककुभाम्
सप्तमी	ककुभि	ककुभोः	ककुप्सु
सम्बोधन	ककुप्, ककुब्	ककुभौ	ककुभः

---

*हन्-धातु से निष्पन्न न होने से नहीं होता। यथा, प्लीहन्, दीर्घाहन्, अल्पाहन् इत्यादि शब्दों के रूप लघिमन् के ऐसे हैं।

† पकारान्त शब्द बहुत ही कम हैं, केवल स्त्रीलिङ्ग अप् शब्द का प्रयोग देखा जाता है। पुंलिङ्ग गुप् शब्द परिशिष्ट में देखो।

समस्त भकारान्त शब्दों* के ऐसे ही रूप होते हैं। भकारान्त शब्द के रूप परिशिष्ट में देखो।

रकारान्त (रेफान्त)—गिर् (Speech) स्त्रीलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गीः	गिरौ	गिरः
द्वितीया	गिरम्	गिरौ	गिरः
तृतीया	गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
चतुर्थी	गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पञ्चमी	गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
षष्ठी	गिरः	गिरोः	गिराम्
सप्तमी	गिरि	गिरोः	गीर्षु
सम्बोधन	गीः	गिरौ	गिरः

सब रकारान्त (रेफान्त) शब्दों † के रूप ऐसे ही होते हैं। स्त्रीलिङ्ग पुर् और धुर् शब्दों के रूप ठीक गिर् शब्द के ऐसे हैं। गिर् शब्द के रूप में जहाँ इ के स्थान में ई होता है पुर् और धुर् शब्दों के रूप में वहाँ उ के स्थान में ऊ होता है।

वकारान्त ‡—दिव (Heaven, Sky) स्त्रीलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	द्यौः	दिवौ	दिवः
द्वितीया	दिवम्, द्याम्	दिवौ	दिवः
तृतीया	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
चतुर्थी	दिवे	द्युभ्याम्	द्युभ्यः

---

* पुंलिङ्ग—गर्दभ्; स्त्रीलिङ्ग—अनुष्टुभ्, त्रिष्टुभ् इत्यादि। पुंलिङ्ग भकारान्त शब्द विरले हैं।

† रकारान्त (रेफान्त) शब्द बहुत कम हैं। स्त्रीलिङ्ग—गिर्, पुर् और धुर्, ये ही तीन शब्द साधारणतः पाये जाते हैं। पुंलिङ्ग रकारान्त (रेफान्त) शब्द प्रायः नहीं मिलते।

‡ वकारान्त शब्द बहुत ही कम हैं, केवल इस शब्द का प्रयोग प्रसिद्ध रूप से देखा जाता है। तेव्, देव्, ष्ठीव् इत्यादि धातुओं से निष्पन्न क्विन्त शब्द अप्रसिद्ध हैं।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	दिवः	द्युभ्याम्	द्युभ्यः
षष्ठी	दिवः	दिवोः	दिवाम्
सप्तमी	दिवि	दिवोः	द्युषु
सम्बोधन	द्यौः	दिवौ	दिवः

शकारान्त—विश् (People in general, Vaishya) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विट्, विड्	विशौ	विशः
द्वितीया	विशम्	विशौ	विशः
तृतीया	विशा	विड्भ्याम्	विड्भिः
चतुर्थी	विशे	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
पञ्चमी	विशः	विड्भ्याम्	विड्भ्यः
षष्ठी	विशः	विशोः	विशाम्
सप्तमी	विशि	विशोः	विट्सु
सम्बोधन	विट्, विड्	विशौ	विशः

दिश्, दृश्, स्पृश् और नश् भिन्न सभी तालव्य शकारान्त* तथा दोष्† भिन्न प्रायः सब षकारान्त § शब्दों के रूप विश् शब्द के तुल्य होते हैं। दधृष् के दधृक्, दधृग् यह रूप होते हैं। हलादि विभक्तियों में और पिपठिष् के रूप दोषवत् हैं।

दिश् (Quarter, Space, Cardinal Point) स्त्रीलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दिक्, दिग्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः

* स्त्रीलिङ्ग—निश्, विपाश् इत्यादि। † दोष् आदि शब्दों का रूप परिशिष्ट में देखो। § पुंलिङ्ग—द्विष्, अतिरुष् इत्यादि। स्त्रीलिङ्ग—त्विष (Virgin), रुष्, विप्रुष् (A drop of water), त्विष् इत्यादि।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सम्बोधन	दिक् , दिग्	दिशौ	दिशः

दृश् , स्पृश् , षकारान्त दृधृष् (Impudent, Defeating) शब्दों ※ के रूप दिश् शब्द के समान होते हैं।

सकारान्त—वेधस् (Creator) पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	वेधाः	वेधसौ	वेधसः
द्वितीया	वेधसम्	वेधसौ	वेधसः
तृतीया	वेधसा	वेधोभ्याम्	वेधोभिः
चतुर्थी	वेधसे	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
पञ्चमी	वेधसः	वेधोभ्याम्	वेधोभ्यः
षष्ठी	वेधसः	वेधसोः	वेधसाम्
सप्तमी	वेधसि	वेधसोः	वेधःसु
सम्बोधन	वेधः	वेधसौ	वेधसः

विद्वस्, जग्मिवस्, लघीयस्, पुम्स्, आशिस् † आदि कईएक शब्दों के सिवाय प्रायः सभी सकारान्त शब्दों § के रूप ऐसे ही होते हैं। उशनस् शब्द का रूप वेधस् शब्द के सदृश होता है, केवल प्रथमा के एकवचन में "उशना" और सम्बोधन में उशन, उशनन्, उशनः, ये पद होते हैं। अनेहस्

※ दृश् और स्पृश् दो प्रकार के हैं—स्वतन्त्र और दूसरे शब्दों के साथ मिलित। यथा, पुंलिङ्ग—ईदृश्, तादृश्, कीदृश्, एतादृश्, भवादृश्, स्पृश्, वहुस्पृश्, मर्म्मस्पृश् इत्यादि। स्त्रीलिङ्ग—दृश्, सुदृश्, मृगीदृश् इत्यादि।

† इस शब्द का रूप परिशिष्ट में देखो। § पुंलिङ्ग—चन्द्रमस्, प्रचेतस्, दिवौकस्, विमनस्, दुर्मनस्, विहायस् इत्यादि। स्त्रीलिङ्ग—सुमनस्, अप्सरस् इत्यादि। सुमनस् और अप्सरस् शब्द वहुवचनान्त हैं। अप्सरस

तथा पुरुदंशस् शब्दों के प्रथमा एकवचन में अनेहा तथा पुरुदंशा होता है और सब विभक्तियों में वेधस् के सदृश हैं ❀ ।

विद्वस् (Learned) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	विद्वांसौ	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
षष्ठी	विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सम्बोधन	विद्वन्	विद्वांसौ	विद्वांसः

ध्वस् शब्द के रूप परिशिष्ट में देखो ।

जग्मिवस् (That which is gone, Gone, Departed) पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जग्मिवान्	जग्मिवांसौ	जग्मिवांसः
द्वितीया	जग्मिवांसम्	,,	जग्मुषः
तृतीया	जग्मुषा	जग्मिवद्भ्याम्	जग्मिवद्भिः
चतुर्थी	जग्मुषे	,,	जग्मिवद्भ्यः
पञ्चमी	जग्मुषः	,,	,,
षष्ठी	,,	जग्मुषोः	जग्मुषाम्
सप्तमी	जग्मुषि	,,	जग्मिवत्सु
सम्बोधन	जग्मिवन्	जग्मिवांसौ	जग्मिवांसः

कभी कभी एकवचन में भी प्रयुक्त होता है । यथा "मेनका नाम अप्सराः प्रेषिता"—शकुन्तला । ❀ अस्-भागान्त शब्द के शेष भाग धातु होने से प्रथमा के एकवचन में आ नहीं होता । यथा, सुवस्—सुवः ; पिण्डग्रस्—पिण्डग्रः । और सब विभक्तियों में वेधस् के तुल्य हैं ।

सब वस् (अर्थात् क्वसु) प्रत्ययान्त शब्दों* के रूप जग्मिवस् शब्द के सदृश होते हैं।

लघीयस् (Lighter) पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	लघीयान्	लघीयांसौ	लघीयांसः
द्वितीया	लघीयांसम्	लघीयांसौ	लघीयसः
तृतीया	लघीयसा	लघीयोभ्याम्	लघीयोभिः
चतुर्थी	लघीयसे	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
पञ्चमी	लघीयसः	लघीयोभ्याम्	लघीयोभ्यः
षष्ठी	लघीयसः	लघीयसोः	लघीयसाम्
सप्तमी	लघीयसि	लघीयसोः	लघीयस्सु
सम्बोधन	लघीयन्	लघीयांसौ	लघीयांसः

सब ईयस् प्रत्ययान्त शब्दों† के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

पुम्स् (Male, Man) पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वितीया	पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृतीया	पुंसा	पुम्भ्याम्, पुमभ्याम्	पुंभिः, पुमभिः,
चतुर्थी	पुंसे	पुंभ्याम्, पुमभ्याम्	पुंभ्यः, पुमभ्यः
पञ्चमी	पुंसः	पुंभ्याम्, पुमभ्याम्	पुंभ्यः, पुमभ्यः

---

* पुंलिङ्ग—निषेदिवस्, तस्थिवस्, उपेयिवस् इत्यादि। वस् भागान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में सकारान्त नहीं होते। जगन्वस् शब्द—जगन्वान्, जगन्वांसौ, जगन्वांसः; जगन्वांसम्, जगन्वांसौ, जग्मुषः, जग्मुषा, जगन्वद्भ्याम्, जगन्वद्भ्यः, जगन्वत्सु इत्यादि। शुश्रुवस् शब्द द्वितीया के बहुवचन में शुश्रुवुषः। तृतीया शुश्रुवुषा, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भिः। शुश्रुवुषे इत्यादि।

† पुंलिङ्ग—गरीयस्, द्रढीयस्, स्थेयस्, प्रेयस्, ज्यायस्, कनीयस्, यवीयस्, श्रेयस् इत्यादि। ईयस् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग में सकारान्त नहीं होते।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
षष्ठी	पुंसः	पुंसोः	पुंसाम्
सप्तमी	पुंसि	पुंसोः	पुंसु
सम्बोधन	पुमन्	पुमांसौ	पुमांसः

अतिरिक्त सकारान्त शब्दों के रूप परिशिष्ट में देखो।

हकारान्त—मधुलिह् (Bee) पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधुलिट् मधुलिड्	मधुलिहौ	मधुलिहः
द्वितीया	मधुलिहम्	मधुलिहौ	मधुलिहः
तृतीया	मधुलिहा	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भिः
चतुर्थी	मधुलिहे	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
पञ्चमी	मधुलिहः	मधुलिड्भ्याम्	मधुलिड्भ्यः
षष्ठी	मधुलिहः	मधुलिहोः	मधुलिहाम्
सप्तमी	मधुलिहि	मधुलिहोः	मधुलिट्सु
सम्बोधन	मधुलिट् मधुलिड्	मधुलिहौ	मधुलिहः

उपानह्, अनडुह् आदि * कईएक भिन्न सब पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग हकारान्त शब्दों के † रूप ऐसे ही होते हैं।

क्लीव (नपुंसक) लिङ्ग (Neuter)

तकारान्त—श्रीमत् (Beautiful, Rich)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
द्वितीया	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति
सम्बोधन	श्रीमत्	श्रीमती	श्रीमन्ति

---

* इनके रूप परिशिष्ट में देखो।

† पुंलिङ्ग—तुरासाह् इत्यादि।

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश रूप होते हैं। कई एक अन्-प्रत्ययान्त * शब्द तथा महत् शब्द भिन्न सभी तकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप श्रीमत् शब्द के सदृश होते हैं।

महत् (Great)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	महत्	महती	महान्ति
द्वितीया	महत्	महती	महान्ति
सम्बोधन	महत्	महती	महान्ति

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के तुल्य रूप होता है।

नकारान्त

क्लीबलिङ्ग नकारान्त शब्द दो प्रकार के होते हैं—अन्-भागान्त और इन्-भागान्त।

अन्-भागान्त—धामन् (House)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धाम	धाम्नी, धामनी	धामानि
द्वितीया	धाम	धाम्नी, धामनी	धामानि
सम्बोधन	धाम, धामन्	धाम्नी, धामनी	धामानि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग लघिमन् शब्द के सदृश रूप होता है। कर्म्मन् आदि कईएक और अहन् भिन्न सभी अन्-भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों † के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

कर्म्मन् (Action, Work)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
द्वितीया	कर्म्म	कर्म्मणी	कर्म्माणि
सम्बोधन	कर्म्म, कर्म्मन्	कर्म्मणी	कर्म्माणि

---

* परिशिष्ट में देखो।

† सामन्, व्योमन्, नामन्, वेमन्, प्रेमन्, दामन् इत्यादि।

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग आत्मन् शब्द के सदृश रूप होता है। जिन जिन शब्दों के अन्-भाग का अकार म् अथवा व् संयुक्तवर्ण में मिला रहता है उन सब शब्दों ❀ के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

अहन् (Day)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
द्वितीया	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
तृतीया	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
चतुर्थी	अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
पञ्चमी	अह्नः	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
षष्ठी	अह्नः	अह्नोः	अह्नाम्
सप्तमी	अह्नि, अहनि	अह्नोः	अहःसु
सम्बोधन	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि

इन्-भागान्त—स्थायिन् (Existing)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि
द्वितीया	स्थायि	स्थायिनी	स्थायीनि
सम्बोधन	स्थायिन्	स्थायिनी	स्थायीनि

और तृतीयादि सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग गुणिन् शब्द के तुल्य है। सब इन्-भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

सकारान्त।

क्लीवलिङ्ग सकारान्त शब्द तीन प्रकार के होते हैं—अस-भागान्त, इस्-भागान्त और उस्-भागान्त।

❀ चर्म्मन्, वर्म्मन्, शर्म्मन्, नर्म्मन्, जन्मन्, सद्मन्, भस्मन्, लक्ष्मन्, वर्त्मन्, पर्व्वन् इत्यादि।

अस्-भागान्त—पयस् (Milk, Water) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
सम्बोधन	पयः	पयसी	पयांसि

और तृतीयादि सब विभक्तियों में वेधस् शब्द के सदृश रूप होता है। सब अस्-भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों * के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

इस्-भागान्त—हविस् (Clarified butter) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हविः	हविषी	हवींषि
द्वितीया	हविः	हविषी	हवींषि
तृतीया	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
चतुर्थी	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पञ्चमी	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
षष्ठी	हविषः	हविषोः	हविषाम्
सप्तमी	हविषि	हविषोः	हविःषु
सम्बोधन	हविः	हविषी	हवींषि

सब इस्-भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों † के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

उस्-भागान्त—धनुस् (Bow) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः

* अम्भस्, अयस्, आगस्, सरस्, उरस्, चेतस्, छन्दस्, तमस्, मनस्, यशस्, रजस्, वक्षस्, वयस्, तपस् इत्यादि ।

† ज्योतिस्, सर्पिस्, अर्चिस्, रोचिस्, शोचिस् इत्यादि ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	धनुषः	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः
षष्ठी	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	धनुषोः	धनुःषु
सम्बोधन	धनुः	धनुषी	धनूंषि

सब उस्-भागान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों* के रूप इसी प्रकार के होते हैं ।

Exercise IV. (अनुशीलनी, अभ्यासार्थ प्रश्न) ।

1. Translate into Sanskrit:—*Kind-hearted* (कृपामयी) *woman* (योषित्). In the *skin* (त्वच्) of a lion. Ram's *younger* (कनीयस्) brother. *By the grace* (महिम्ना) of *God* (भगवत्). Hari is an *intelligent* (बुद्धिमत्) man. *King* (राजन्) *is the protector* (बलम्) of the weak. The advice *of a learned man* (विपश्चितः). A friend *in need* (विपदि) *is a friend indeed* (यथार्थः सुहृदेव). By the *blessing* (आशिस्) of *my* (मम) mother. With the help of the kind Emperor. A work *conceived* (चिन्तितम्) *in the mind* (मनसा). The *blooming* (विकसित) lotuses *in the tank* (सरसि). To the *minister* (मन्त्रिन्) of the *great* (महत्) King. The bright stars *in the sky* (नभसि). By the birth of a great man. In the *house* (वेश्मन्) of a Chandala. A serpent *lying* (शायितः) on the road. The sweet words of the child.

2. Translate into English:—चञ्चलं मनः । भास्वन्ति रत्नानि । कृपामयो भगवान् । तेजस्विना वाजिना । कम्बलवन्तं जनम् । दरिद्राः गृहिणः सम्पदः पदमापदाम् । रामः जन्मना क्षत्रियः । जीर्णानि वासांसि । प्रकृत्या मधुरं गवां पयः । आत्मैव वन्धुरात्मनः । अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् । बलवता सह विवादो न कर्त्तव्यः । विपदि धैर्यं श्रेयः । मूर्खस्य जन्म निरर्थकम् । हितं मनोहारि दुर्लभं च वचः । विपत् सन्निहिता यस्य ।

3. Correct :—तपस्य फलम्; निर्म्मले नभे; महन्तौ तरू; दिशः शून्यः; सम्पदे सुहृत; महतानाम् जनानां कृपर्या; दुर्गमेण पंथेन गतः;

* आयुस्, चक्षुस्, वपुस्, यजुस् इत्यादि ।

हरेर्गोपस्य कुले जन्मः; जगते सन्तोषीः एव सुखी; आलस्य प्राक्तनः फलम्; गुणिस्य राजस्य उपदेशः; हविं विना भोजनं; बुद्धिमते नरे ।

4. Explain the formation of:—सम्राजः, धनुषः, भूभृता, श्रह्णोः, धावतोः, नामनी, सुहृदः, गुणिनौ, पयांसि, पथः, लघिम्नः, आत्मानौ, यूनः, मघोनि, शुनः, द्यौः and give their Hindi and English equivalents.

5. Point out the main difference between the declensions of the bases वणिज् and सम्राज्, भूभृत् and महत्, धावत् and महत् and आत्मन् and युवन् ।

6. Give the alternative forms of पुंभिः, वृत्रहनि, लघिमनि, हे नामन् and हे कर्म्मन् ।

7. Classify the bases ending in त् and न्.

सर्व्वनाम शब्द ।

(Pronoun)

रूप की विलक्षणता के अनुसार सर्व्वनाम शब्द निम्नलिखित पाँच श्रेणियों में विभक्त हैं :—

(१) सर्व्वादि—सर्व्व, विश्व, उभ, उभय, एक, एकतर ।

(२) अन्यादि—अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम, एकतम ।

(३) पूर्व्वादि—पूर्व, पर, अपर, अवर (West, Posterior), अधर (West, Inferior), दक्षिण, उत्तर, स्व ।

(४) यदादि—यद्, तद्, एतद्, त्यद्, किम् ।

(५) इदमादि—इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् ।

सर्व्वादि*—सर्व्व† (All) ।

पुंलिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वः	सर्व्वौ	सर्व्वे
द्वितीया	सर्व्वम्	सर्व्वौ	सर्व्वान्

* सर्व्वादि, अन्यादि और पूर्व्वादि अकारान्त सर्व्वनाम शब्दों के रूप पुंलिङ्ग तथा क्लीबलिङ्ग में साधारण अकारान्त शब्दों के और स्त्रीलिङ्ग में साधारण आकारान्त शब्दों के तुल्य होते हैं, केवल निम्नरेख स्थलों में प्रभेद है।

† द्वित्व की आवश्यकता होती है और नहीं भी होती ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
तृतीया	सर्व्वेण	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वैः
चतुर्थी	सर्व्वस्मै	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्व्वस्मात्	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वेभ्यः
षष्ठी	सर्व्वस्य	सर्व्वयोः	सर्व्वेषाम्
सप्तमी	सर्व्वस्मिन्	सर्व्वयोः	सर्व्वेषु
सम्बोधन	सर्व्व	सर्व्वौ	सर्व्वे

क्लीबलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वम्	सर्व्वे	सर्व्वाणि
द्वितीया	सर्व्वम्	सर्व्वे	सर्व्वाणि
सम्बोधन	सर्व्व	सर्व्वे	सर्व्वाणि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के तुल्य हैं ।

स्त्रीलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्व्वा	सर्व्वे	सर्व्वाः
द्वितीया	सर्व्वाम्	सर्व्वे	सर्व्वाः
तृतीया	सर्व्वया	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभिः
चतुर्थी	सर्व्वस्यै	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्व्वस्याः	सर्व्वाभ्याम्	सर्व्वाभ्यः
षष्ठी	सर्व्वस्याः	सर्व्वयोः	सर्व्वासाम्
सप्तमी	सर्व्वस्याम्	सर्व्वयोः	सर्व्वासु
सम्बोधन	सर्व्वे	सर्व्वे	सर्व्वाः

सर्व्व तथा विश्व शब्द "सकल" अर्थबोधक होने पर ही सर्व्वनाम होते हैं, नहीं तो उनके रूप पुंलिङ्ग और क्लीबलिङ्ग में ठीक साधारण अकारान्त और स्त्रीलिङ्ग में साधारण आकारान्त शब्दों के सदृश होते हैं ।

सर्व्वादि के अन्तर्गत सभी शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं। अन्यादि के अन्तर्गत सब सर्व्वनाम शब्दों के भी रूप सर्व्व शब्द के सदृश होते हैं; केवल क्लीवलिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया के एकवचन में अन्यत्, अन्यतरत्, इतरत्, कतरत्, कतमत्, एकतमत्, ऐसे रूप होते हैं; इतना ही अन्तर है।

पूर्व्वादि*—पूर्व्व (East, Prior)।

पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	पूर्व्वः	पूर्व्वौ	पूर्व्वे, पूर्वाः
द्वितीया	पूर्व्वम्	पूर्व्वौ	पूर्वान्
तृतीया	पूर्व्वेण	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वैः
चतुर्थी	पूर्व्वस्मै	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
पञ्चमी	पूर्व्वस्मात्, पूर्वात्	पूर्व्वाभ्याम्	पूर्व्वेभ्यः
षष्ठी	पूर्व्वस्य	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषाम्
सप्तमी	पूर्व्वस्मिन्, पूर्वे	पूर्व्वयोः	पूर्व्वेषु
सम्बोधन	पूर्व्व	पूर्व्वौ	पूर्व्वे, पूर्व्वाः

क्लीवलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथमा	पूर्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि
द्वितीया	पूर्वम्	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि
सम्बोधन	पूर्व	पूर्व्वे	पूर्व्वाणि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के तुल्य हैं।

---

* पूर्व्वादि के "पूर्व्व" से लेकर "उत्तर" तक के सात शब्द दिक्, देश और कालवाचक होने पर अर्थात् पूर्व्वदिशा, पूर्व्वकाल, पूर्व्वदेश इत्यादि अर्थ में ही सर्व्वनाम होते हैं, नहीं तो पुंलिङ्ग तथा क्लीवलिङ्ग में साधारण अकारान्त और स्त्रीलिङ्ग में साधारण आकारान्त शब्द के समान रहते हैं। "स्व" शब्द कुटुम्ब (Relation) और धन (Wealth) अर्थ में साधारण अकारान्त शब्द के तुल्य है और इनके सिवाय (अन्य, जैसे आप या अपना own)-

स्त्रीलिङ्ग में पूर्व्व शब्द का रूप ठीक सर्व्व शब्द के सदृश होता है। पूर्व्वादि के अन्तर्गत सभी शब्दों के रूप पूर्व्व शब्द के सदृश होते हैं।

यदादि*—यद् (Who, Which) ।

पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

क्लीबलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश रूप होता है।

अर्थ में सर्व्वनाम होता है। "आत्मा" अर्थ में "स्व" केवल पुंलिङ्ग में व्यवहृत होता है। दिक्, देश और काल अर्थ में पूर्व्वादि शब्दों के योग से शब्दों के उत्तर पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, नगरात् पूर्व्वस्याम् दिशि (नगर की पूरब दिशा में), हिमालयात् उत्तरे देशे (हिमालय के उत्तर देश में)।

* यदादि के यद्, तद्, एतद्, त्यद्, किम्, ये सब शब्द क्रम से य, त, एत, त्य, क, ऐसे अकारान्त हो जाते हैं और इनके रूप सर्व्वादि के तुल्य होते हैं; केवल क्लीबलिङ्ग की प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों के एकवचन में यत्, तत्, एतत्, त्यत्, किम्, ऐसे रूप होते हैं, और तद्, एतद् और त्यद् शब्दों की प्रथमा के एकवचन में यथाक्रम से पुंलिङ्ग में सः, एषः, स्यः, और स्त्रीलिङ्ग में सा, एषा, स्या, ऐसे रूप होते हैं और इतनी ही विशेषता है।

स्त्रीलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

तद् (He, She, It, That)।

पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

क्लीवलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के समान रूप होता है।

स्त्रीलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

एतद् शब्द भी ठीक तद् शब्द के सदृश है, केवल एकार मात्र अधिक है और पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा के एकवचन में मूर्द्धन्य 'ष' होता है। यथा, एषः, एषा । त्यद् शब्द भी तद् शब्द के सदृश है। इसके पुंलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा के एकवचन में क्रम से 'स्यः' और 'स्या' होते हैं ।

किम् (Who, Which, What) ।

पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

क्लीवलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के तुल्य होता है।

स्त्रीलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

इदमादि—इदम् (This) ।

पुंलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्, एनम् *	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
तृतीया	अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः, एनयोः	एषु

क्लीवलिङ्ग ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्, एनत्	इमे, एने	इमानि, एनानि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के तुल्य है ।

---

* एक वाक्य में किसी एक विशेष्यपद का इदम्' 'या' 'एतद्' शब्द से निर्देश कर दूसरे वाक्य में उसी विशेष्य पद का इन शब्दों से निर्देश किया जाय तो इदम् और एतद् शब्द को द्वितीया विभक्ति के तीनों वचनों में, तृतीया के एकवचन में और षष्ठी तथा सप्तमी के द्विवचन में 'एन' आदेश होता है । यथा, अनेन स्नातम्, एनं भोजयेत् (इसने स्नान किया है, इसी को खिलाओ), अनयोः पवित्रं कुलम्, एनयोः प्रभूतं धनम् (इन ही दोनों का पवित्र कुल है, इन ही दोनों का अधिक धन है) ।

स्त्रीलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्, एनाम्	इमे, एने	इमाः, एनाः
तृतीया	अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः, एनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः, एनयोः	आसु

अदस् (This, That)।

पुंलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पञ्चमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

क्लीवलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमू	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमू	अमूनि

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश रूप होता है।

स्त्रीलिङ्ग।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमूम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
पञ्चमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

अस्मद् (I) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

तीनों लिङ्गों में समान है, कुछ भी भेद नहीं है ।

युष्मद् (Thou, You) ।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्,	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्, वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

तीनों लिङ्गों में समान है, कुछ भी भेद नहीं है ।

अस्मद् और युष्मद् शब्दों के रूप में मा, मे, नौ, नः तथा त्वा, ते, वाम्, वः, ये जो आठ पद होते हैं इनका प्रयोग किसी वाक्य के अथवा श्लोक के चरण के प्रारम्भ में अथवा च, वा, एव, ह, अह, इन अव्यय शब्दों के पूर्व में तथा सम्बोधन पद के परे नहीं होता ।

संख्यावाचक शब्द (Numerals) ।

एक (One)—इस अर्थ में यह शब्द एकवचनान्त है; किन्तु कोई, थोड़ा, प्रधान, समान (Some, a few, chief, the same) आदि अर्थों में द्विवचन तथा बहुवचन में भी प्रयोग होता है । इसका रूप तीनों लिङ्गों में सर्व्व शब्द के सदृश होता है, कुछ भी भेद नहीं है ।

अनेक (Many)—यह शब्द बहुवचनान्त है, तीनों लिङ्गों में सर्व्व शब्द के तुल्य है ।

द्वि (Two)—द्विवचनान्त ।

	पुंलिङ्ग	क्लीबलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग
	द्विवचन	द्विवचन
प्रथमा	द्वौ	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पञ्चमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः

त्रि (Three)—बहुवचनान्त ।

	पुंलिङ्ग	क्लीबलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्रयः	त्रीणि	तिस्रः
द्वितीया	त्रीन्	त्रीणि	तिस्रः
तृतीया	त्रिभिः	त्रिभिः	तिसृभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पञ्चमी	त्रिभ्यः	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
षष्ठी	त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्
सप्तमी	त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु

चतुर् (Four)—बहुवचनान्त ।

	पुंलिङ्ग	क्लीवलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
	बहुवचन	बहुवचन	बहुवचन
प्रथमा	चत्वारः	चत्वारि	चतस्रः
द्वितीया	चतुरः	चत्वारि	चतस्रः
तृतीया	चतुर्भिः	चतुर्भिः	चतसृभिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

षष् (Six)—बहुवचनान्त ।

प्रथमा	द्वितीया	तृतीया	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
षट् षड्	षट् षड्	षड्भिः	षड्भ्यः	षड्भ्यः	षण्णाम्	षट्सु, षट्त्सु

तीनों लिङ्गों में ऐसा ही रूप होता है।

अष्टन् (Eight)—बहुवचनान्त । पञ्चन् (Five)—बहुवचनान्त ।

	बहुवचन	बहुवचन
प्रथमा	अष्टौ, अष्ट	पञ्च
द्वितीया	अष्टौ, अष्ट	पञ्च
तृतीया	अष्टाभिः, अष्टभिः	पञ्चभिः
चतुर्थी	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः	पञ्चभ्यः
पञ्चमी	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः	पञ्चभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम्	पञ्चानाम्
सप्तमी	अष्टासु, अष्टसु	पञ्चसु

अष्टन् तथा पञ्चन् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं।

सप्तन्, नवन्, दशन् आदि समस्त नकारान्त संख्यावाचक शब्दों के रूप पञ्चन् शब्द के सदृश होते हैं।

Exercise V. (अनुशीलनी, अभ्यासार्थ प्रश्न)।

1. Translation Model:—These boys=अमी बालकाः; To those two girls=अमू बालिके; To that poor man=तस्मै दरिद्राय; By this woman=अनया नार्य्या; From all quarters=सर्व्वस्याः दिशः; By this girl=अनया बालिकया; In the east=पूर्व्वस्यां दिशि; Other women=अन्याः स्त्रियः; It is the order of our teacher=एष हि अस्माकं शिक्षकस्य आदेशः; Three youths=त्रयो युवानः; By four women=चतसृभिः रमणीभिः; Four fruits=चत्वारि फलानि; Forty boys=चत्वारिंशत् बालकाः; One hundred and eight students of the school=विद्यालयस्य अष्टोत्तरशतम् छात्राः; On the twenty fifth day of Baisakh=वैशाखस्य पञ्चविंशतितमे (पञ्चविंशे वा) दिने; The tenth canto=दशमः सर्गः; The eighth chapter=अष्टमोऽध्यायः; Who is thy (or your) father=कस्ते पिता; What is thy (or your) name=किंते नाम; I have great confidence in thee (or you)=त्वयि मे महान् विश्वासः; To thy (or your) mother=तव मातरम्; You are learned=यूयं विद्वांसः or त्वं विद्वान्।

N. B.:—आजकल अंगरेज़ी में मध्यम पुरुष का एकवचन thou, thy, thine, thee का प्रचलन बहुत ही कम है; you, your, yours मध्यम पुरुष के एकवचन तथा बहुवचन में साधारणतः व्यवहृत होते हैं। इसलिए आशय के अनुसार you=त्वम् वा यूयम्, to you=त्वाम् (त्वा) वा युष्मान् (वः), your or yours=तव (ते) वा युष्माकम् (वः), In you=त्वयि वा युष्मासु इत्यादि।

2. Translate into Sanskrit:—He *is pale* (विवर्णः). They *are hungry* (क्षुधातुराः). He is a *tall* (प्रांशु) *man* (पुरुष). This is her *best* (श्रेष्ठ) *dress* (परिच्छद). This man is *kind* (दयालु) and *wise* (प्राज्ञ). That is a *pretty* (सुन्दर) girl. She is my *niece* (भ्रातुष्पुत्री वा भागिनेयी). This *piece of land* (भूमिखण्डम्) *is mine* (मम एव). That is a *nice* (रमणीय) *field* (क्षेत्रम्). *Come* (आगच्छ) to my *house* (भवन). *Where* (कुत्र) *were* you *born* (जातः)? We *are helpless* (निराश्रयाः). These men are intelligent. Surely it is the order (आदेश) of our teacher. Life is *dear* (अभीष्ट) to all. *Here is* (अत्रैव)

that beautiful *picture* (आलेख्यम्). He who *is helpful* (सहायः) *to us* (अस्माकम्) in danger, is our real friend. This is the best time *to take a morning walk* (प्रातर्भ्रमणाय). What is your father's name? God is the creator of all. Four horses of Ram. One of the five students. The king *gave* (अददात्) *me* (मह्यम्) eight of his sixty horses. The thirty first day of the present month. The sixth canto of Raghuvansh. In the forty-fifth chapter of the history. She is my tenth daughter. Who are you? What relation have you with me?

3. Translate into English:—अन्यत् जन्म; सा मे प्रियसखी; वयं सदा सुखिनः; कस्मिन्नेव नगरे तेषां निवासः; अनित्योऽयं संसारः; एषो हि भगवान् हरिः; सर्व्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः; ईश्वरो हि सर्व्वेषां लोकानां पालकः; ज्ञानहीनस्य यत् जीवनं तद् वृथा एव; महाजनो येन गतः स एव पन्थाः; एकस्मिन् मासे द्वौ पक्षौ; वत्सरस्य द्वादश मासाः सप्तविंशतिर्नक्षत्राणि; तव व्याकरणस्याष्टमोऽध्यायो द्रष्टव्यः ।

4. Correctly rewrite:—सर्व्वाः बालकाः; अन्यं फलं; एषाम् लतानाम्; सः ते मे च वचनं न श्रृणोति; एषः जन्मः ते तनयस्य; इदं पुंस्तकानि मे एव; कस्ते नामः? त्वा सः रक्षति यत्नेन मा सः द्वेष्टि निरन्तरं; पञ्चविंशतयः दिवसानि; सप्तमः ब्राह्मणाः ।

5. Classify the Sanskrit pronominal bases and say when the bases सर्व्व, विश्व, पूर्व्व and स्व are treated as pronouns. Point out the difference in their declensions when they are treated as pronouns and when they are not.

6. Name the Sanskrit pronominal bases that are declined alike in all the genders.

7. Mention all the places where ते occurs in the declension of Sanskrit pronouns.

8. Explain the formation of:—सर्व्वे, वः, नौ, अमू, इमे, अमूः, के, तयोः and केषु ।

9. Give the feminine forms of:—सर्व्वस्मात्, अस्मै, अमीभ्यः, एषाम्, तेषु, पूर्व्वस्मिन्, येन, तैः, अमीषाम्, चत्वारः and अपः ।

10. Ascertain the genders of the Sanskrit numerals.

अव्यय शब्द ।
(Indeclinables)

जिन शब्दों के रूप में लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन के कारण कुछ भी परिवर्त्तन नहीं होता, अर्थात् शब्द ज्यों के त्यों रह जाते हैं, इन्हें अव्यय कहते हैं:—(१); अव्यय शब्द के अन्त में स्थित 'र्' और 'स्' के स्थान में विसर्ग होता है, यथा, प्रातर्, अन्तर्, स्वर्, पुनर्, उच्चैस्, नीचैस्, शनैस्, बहिस्, नमस्, पुरस्, युगपत्, पृथक्, विना, ऋते, स्वयम्, सायम्, वृथा, मृषा, मिथ्या, सह, सार्द्धम्, साकम्, अलम्, अथ, एवम्, एव, नूनम्, धिक्, च, वा, तु, हि, भोस्, अथवा, प्र, परा, अप, सम्, नि, अव, अनु, निर्, दुर्, वि, अधि, सु, उत् (उद्), परि, प्रति, अभि, अति, अपि, उप, आ। क्रिया (धातु) के साथ योग होने से 'प्र' से लेकर 'आ' तक बीस अव्ययों को उपसर्ग कहते हैं। पाणिनि के अनुसार निस्, दुस्, भी और दो उपसर्ग हैं।

लिङ्ग ।
(Gender)

लिङ्ग तीन प्रकार के हैं—पुंलिङ्ग (Masculine); स्त्रीलिङ्ग (Feminine) और क्लीवलिङ्ग (Neuter)। साधारणतः पुरुष-बोधक शब्द पुंलिङ्ग, स्त्री-बोधक शब्द स्त्रीलिङ्ग और जो शब्द पुरुष अथवा स्त्री-बोधक नहीं होते वे क्लीवलिङ्ग होते हैं; परन्तु बहुधा इसका व्यतिक्रम देखा जाता है।

स्त्रीलिङ्ग-प्रत्यय ।
(Feminine Suffixes)

(१) "अदन्तादाप्; ईप् गौरादिभ्यः।" कुछ अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त और कुछ दीर्घ ईकारान्त होजाते हैं। यथा, सर्व-सर्वा, स्थिर-स्थिरा, प्रबल-प्रबला,

(१) सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्॥

कृश-कृशा, वैश्य-वैश्या, शूद्र-शूद्रा, दृढ-दृढा, इत्यादि; वैष्णव-वैष्णवी, नद-नदी, हंस-हंसी, मृग-मृगी, गौर-गौरी, कुमार-कुमारी, सुन्दर-सुन्दरी इत्यादि (१)।

(२) स्त्रीलिङ्ग-विहित आ प्रत्यय परे रहने से अक-भागान्त शब्द के 'क' के पूर्ववर्त्ती 'अ' के स्थान में 'इ' होता है। यथा, नायक-नायिका, गायक-गायिका, पाठक-पाठिका, पालक-पालिका, बालक-बालिका इत्यादि।

(३) "जातेरस्त्री विषयादयोपधात्" हय, गवय, मुकय, मनुष्य, मत्स्य, इन जातिवाचक योपध शब्दों से भी ङीप् होता है जिसका ई रहता है। जातिवाचक अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग में दीर्घ ईकारान्त हो जाते हैं। यथा, मृग-मृगी, हंस-हंसी, सिंह-सिंही, हय-हयी, वृषल-वृषली, तट-तटी, मत्स्य-मत्सी (२), मनुष्य-मनुषी, (२) इत्यादि। परन्तु 'अज' प्रभृति कई-एक जातिवाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त होते हैं। यथा, अज-अजा, कोकिल-कोकिला, चटक-चटका, अश्व-अश्वा, मूषक-मूषिका इत्यादि।

(४) चतुर्थ प्रभृति पूर्णवाचक शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में "ई" होता है। यथा, चतुर्थ-चतुर्थी, पञ्चम-पञ्चमी, षष्ठ-षष्ठी इत्यादि।

(५) जिन शब्दों के अन्त में मत् अथवा वत् रहता है, स्त्रीलिङ्ग में उनके उत्तर "ई" होता है। यथा, बुद्धिमत्-बुद्धिमती, श्रीमत्-श्रीमती, भक्तिमत्-भक्तिमती, बलवत्-बलवती, लज्जावत्-लज्जावती, विद्यावत्-विद्यावती, गुणवत्-गुणवती इत्यादि।

(६) जिन शब्दों के अन्त में अत् रहता है, स्त्रीलिङ्ग में उनके उत्तर प्रायः "ई" होता है; और उनमें से कुछ शब्दों

---

(१) (२) स्त्रीलिङ्ग प्रत्यय दो हैं—आ (आप्) और ई (ईप्)।

के 'त्' के स्थान में 'न्त्' होता है। यथा, रुदत्-रुदती, कुर्व्वत्-कुर्व्वती, गृह्णत्-गृह्णती, द्विषत्-द्विषती, गच्छत्-गच्छन्ती, तिष्ठत्-तिष्ठन्ती, पश्यत्-पश्यन्ती, पतत्-पतन्ती, नृत्यत्-नृत्यन्ती, वदत्-वदन्ती, गायत्-गायन्ती, ध्यायत्-ध्यायन्ती इत्यादि।

(७) जिन शब्दों के अन्त में इन् रहता है, स्त्रीलिङ्ग में उनके उत्तर 'ई' होता है। यथा, कमलिन्-कमलिनी, मालिन्-मालिनी, मानिन्-मानिनी, शुभदायिन्-शुभदायिनी, मनोहारिन्-मनोहारिणी, मेधाविन्-मेधाविनी, मायाविन्-मायाविनी इत्यादि।

(८) ईयस् प्रत्ययान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में 'ई' होता है। यथा, पापीयस्-पापीयसी, गरीयस्-गरीयसी, लघीयस्-लघीयसी इत्यादि।

(९) जिन शब्दों के अन्त में 'मय', 'कर', 'चर', 'दृश' प्रभृति रहते हैं स्त्रीलिंग में उनके उत्तर प्रायः 'ई' होता है। यथा, मृन्मय-मृन्मयी, दयामय-दयामयी, अर्थकर-अर्थकरी, यशस्कर-यशस्करी, निशाचर-निशाचरी, सहचर-सहचरी, यादृश-यादृशी, तादृश-तादृशी इत्यादि।

(१०) जिन विशेषण शब्दों के अन्त में ह्रस्व उ रहता है, स्त्रीलिंग में उनके उकार के परे विकल्प से 'ई' होता है। यथा, मृदु-मृद्वी, मृदुः; साधु-साध्वी, साधुः; गुरु-गुर्व्वी, गुरुः; लघु-लघ्वी, लघुः इत्यादि।

(११) जिन पुंलिङ्ग शब्दों के अन्त में ऋकार रहता है, स्त्रीलिङ्ग में उनके ऋकार के परे प्रायः 'ई' होता है। यथा, कर्त्तृ-कर्त्री, धातृ-धात्री, जनयितृ-जनयित्री, प्रसवितृ-प्रसवित्री इत्यादि।

कारक (Case)।

क्रिया के साथ जिसका अन्वय होता है (अर्थात् सम्बन्ध रहता है) उसे 'कारक' कहते हैं (१)। कारक छः प्रकार के हैं; यथा—कर्त्ता, कर्म्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण।

१। कर्त्ता (Nominative)।

जो काम करे वह कर्त्ता है (२)। कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, बालको रोदिति (बालक रोता है), मृगो धावति (मृग दौड़ता है), मृगौ धावतः (दो मृग दौड़ते हैं), मृगाः धावन्ति (बहुतसे मृग दौड़ते हैं)।

२। कर्म्म (Accusative or Objective Case)।

जो किया जावे, जो देखा जावे, जो खाया जावे, जो पिया जावे, जो दान दिया जावे, जो स्पर्श किया जावे उन सबों को 'कर्म्मकारक' कहते हैं (३)। कर्म्मकारक में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, घटं करोति (घट बनाता है), चन्द्रं पश्यति (चन्द्रमा को देखता है), अन्नं भुङ्क्ते (अन्न खाता है), दुग्धम् पिबति (दूध पीता है), धनं ददाति (धन देता है), गात्रं स्पृशति (शरीर स्पर्श करता है), शत्रुं जयति (शत्रु को जीतता है), शास्त्रम् अधीते (शास्त्र पढ़ता है), पुष्पं चिनोति (फूल तोड़ता है), गुरुं पृच्छति (गुरु से पूछता है), ग्रामं गच्छति (गाँव को जाता है) इत्यादि।

३। करण (Instrumental Case)।

जिससे क्रिया निष्पन्न होती है उसे 'करणकारक' कहते हैं (४)। करणकारक में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, हस्तेन गृह्णाति (हाथ से ग्रहण करता है), चक्षुषा पश्यति (नेत्र से देखता है), दन्तेन चर्वयति (दाँत से चबाता है), दण्डेन

(१) क्रियान्वयि कारकम्। (२) क्रियासम्पादकः कर्त्ता।
(३) क्रिययाक्रान्तं कर्म्म। (४) साधकतमं करणम्।

ताडयति (दण्ड से ताड़ना करता है); जलेन अग्निं निर्वापयति (जल से आग बुझाता है)।

४। सम्प्रदान (Dative Case)।

जिसको कोई वस्तु दी जाय उसको 'सम्प्रदानकारक' कहते हैं (१)। सम्प्रदानकारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, दरिद्राय धनं दीयताम् (दरिद्र को धन दो), दीनेभ्यः अन्नं देहि, (दुखियों को अन्न दो), मह्यं पुस्तकं देहि (मुझे पुस्तक दो)।

५। अपादान (Ablative Case)।

जिससे कोई वस्तु अथवा जीव चले, डरे, ग्रहण करे अथवा उत्पन्न हो उसे 'अपादानकारक' कहते हैं (२)। अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, वृक्षात् पत्रम्पतति (वृक्ष से पत्र गिरता है), व्याघ्राद् विभेति (व्याघ्र से डरता है), सरोवराद् जलं गृह्णाति (तालाब से जल लेता है), दुग्धाद् घृतमुत्पद्यते (दूध से घी उत्पन्न होता है)।

६। अधिकरण (Locative Case)।

क्रिया का जो आधार (३) है उसको 'अधिकरणकारक' (४) कहते हैं। अधिकरणकारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, शय्यायां शेते (बिछौने पर सोता है), आसने उपविशति (आसन पर बैठता है), गृहे तिष्ठति (घर में रहता है), दुग्धे माधुर्य्यमस्ति (दूध में मधुरता है), कलशे जलमस्ति (कलसे में जल है), तिलेषु तैलमस्ति (तिलों में तेल है), पात्रे दुग्धं स्थापयति (बरतन में दूध रखता है), वर्षासु वृष्टिर्भवति (वर्षाकाल में वृष्टि

---

(१) यस्मै दानं सम्प्रदानम्। (२) यतो विश्लेषोऽपादानम् (जिससे अलग होता है उसे 'अपादान' कहते हैं)। (३) आधार तीन प्रकार के होते हैं। यथा, ऐकदेशिक—वने वसति (वन के एक देश में वसता है), वैषयिक—विद्यायामनुरागः (विद्या के विषय में अनुराग), अभिव्यापक—तिलेषु तैलमस्ति (तिलों के सभी स्थान में तेल है)। (४) आधारोऽधिकरणम्।

होती है), रात्रौ चन्द्र उदेति (रात्रि में चन्द्रमा का उदय होता है)।

विभक्तिनिर्णय।

(Case-endings.)

प्रथमा विभक्ति (The First Case-ending)।

१। "कर्त्तरि प्रथमा।" कर्त्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, बालकः क्रीडति (बालक खेलता है, The boy plays or is playing)। रामो गच्छति (राम जाता है, Ram goes or is going)।

२। "उक्ते कर्म्मणि प्रथमा।" कर्म्मवाच्य के कर्म्म में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, मया चन्द्रोदृश्यते (मुझसे चन्द्रमा देखा जाता है, The moon is seen or is being seen by me)।

३। "सम्बोधने प्रथमा।" सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, हे पितः, हे भ्रातरौ, हे पुत्राः।

४। लिङ्गार्थे अभिधेयमात्रे वा प्रथमा।" जहाँ कर्म्मपद क्रियापद प्रभृति नहीं रहते, केवल किसी वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध कराने के लिए शब्द का प्रयोग किया जाता है वहाँ उस शब्द के उत्तर प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, वृक्षः, लता, पुष्पम्, गिरिः, नदी, जलम्, रामः, सीता, नरः, राजा, गृहम्, पुस्तकम्, अन्नम्, वस्त्रम् इत्यादि।

५। "अव्यय योगे च प्रथमा।" इति प्रभृति कईएक अव्यय शब्दों के योग में भी प्रथमा विभक्ति होती है। यथा, पुरा दशरथ इति ख्यातो राजा आसीत् (प्राचीन समय में दशरथ नाम के राजा थे), कस्मिंश्चिद्वने भासुरको नाम सिंहः प्रतिवसति स्म (किसी वन में भासुरक नाम का सिंह रहता था)।

द्वितीया विभक्ति (The Second Case-ending)।

१। "कर्म्मणि द्वितीया।" कर्त्तृवाच्य के कर्म्म में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, स पुष्पं चिनोति (वह फूल तोड़ता है, He plucks the flower), अहं जलं पिबामि (मैं जल पीता हूँ, I drink water)।

२। "कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे।" व्याप्ति अर्थ में कालवाचक और मार्गवाचक शब्दों के उत्तर द्वितीया विभक्ति होती है क्रिया का अत्यन्त संयोग होने पर। यथा, कालवाचक—दिवसमुपवसति (दिन भर उपवास करता है), क्षणम् अपेक्षते (क्षणभर ठहरता है); मार्गवाचक—क्रोशं गिरिः स्थितः (पहाड़ एक कोश तक अवस्थित है), स योजनं भृत्येनानुगतः (एक योजन तक नौकर उसके साथ गया)।

३। धिक्, प्रति प्रभृति * कईएक शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। यथा, पापिनं धिक् (पापी को धिक्कार है, Fie upon the sinner), कृपणं धिक् (कृपण को धिक्कार है), गुरो! मां प्रति सदयो भव (हे गुरु, मुझपर कृपा कीजिये), दीनं प्रति दया उचिता (ग़रीब पर दया करनी उचित है)।

४। "क्रियाविशेषणे च।" क्रिया के विशेषण में द्वितीया विभक्ति का एकवचन होता है और क्लीबलिङ्ग के सदृश रूप होता है। यथा, शीघ्रं गच्छति (शीघ्र जाता है), सत्वरं धावति (तेज दौड़ता है), मधुरं हसति (मधुरता से हँसता है)।

तृतीया विभक्ति (The Third Case-ending)।

१। "तृतीया करणे।" करणकारक में तृतीया विभक्ति होती

---

* प्रति, अनु, धिक्, निकषा (Near), समया (Near), अन्तरा (Between), अन्तरेण (Without), इन शब्दों के (प्रत्यनुधिक्निकषासमयान्तरान्तरेण) और अभितः (Around or towards), परितः (Around), सर्व्वतः (Everywhere), उभयतः (On both the sides), इन शब्दों के योग में (अभिपरिसर्व्वोभयस्तसन्तैः) द्वितीया विभक्ति होती है।

है। यथा, हस्तेन गृह्णाति (हाथ से ग्रहण करता है), कर्णेन शृणोति (कान से सुनता है)।

२। "अनुक्ते कर्त्तरि तृतीया।" कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, कर्म्मवाच्य—मया चन्द्रो दृश्यते (मुझसे चन्द्रमा देखा जाता है), राज्ञा धनं दीयते (राजा से धन दिया जाता है)। भाववाच्य—तेन गम्यते (वह जाता है), तैः स्थीयते (उनसे रहा जाता है अर्थात् वे रहते हैं)।

३। सह, साकम्, सार्द्धम्, अलम् (निषेधार्थबोधक), किम् इत्यादि कईएक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, रामो लक्ष्मणेन सह वनं जगाम (राम लक्ष्मण के साथ वन गये थे), केनापि सार्द्धं विरोधो न कर्त्तव्यः (किसी के भी साथ विरोध करना उचित नहीं है), विवादेन अलम् (विवाद से प्रयोजन नहीं है), कलहेन किम् (कलह से क्या प्रयोजन है?), कोऽर्थः कलहेन (कलह से प्रयोजन क्या है?)।

४। ऊनार्थक शब्दों के * योग में तृतीया विभक्ति होती है। यथा, एकेन ऊनः (एक कम), विद्यया हीनः (विद्या से हीन), अहंकारेण शून्यः (अहंकार से रहित), पापेन रहितः (पाप से रहित)।

५। "प्रकृत्यादिभ्यस्तृतीया।" स्थलविशेष में प्रकृति प्रभृति कईएक शब्दों के उत्तर और जो शब्द क्रियाविशेषण का अर्थ प्रकाश करते हैं उनके उत्तर तृतीया विभक्ति होती है। यथा, प्रकृत्या चारुः (प्रकृति से सुन्दर), स्वभावेन सरलः (स्वभाव से सरल), जात्या ब्राह्मणः (जाति से ब्राह्मण)।

---

* सहार्थैः ऊनवारणप्रयोजनार्थैश्च (सहार्थक तथा ऊनार्थक, वारणार्थक और प्रयोजनार्थक शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है)।

चतुर्थी विभक्ति (The Fourth Case-ending)।

१। "चतुर्थी सम्प्रदाने।" सम्प्रदानकारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, दरिद्राय धनं ददाति (दरिद्र को धन देता है, Gives money to the poor man)।

२। निमित्त अर्थ में (तादर्थ्ये) और नमस् शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा, दानाय धनोपार्जनम् (दान के निमित्त धन का उपार्जन है), परोपकाराय सतां जीवनम् (परोपकार के लिए साधुओं के जीवन हैं), गुरवे नमः (गुरु को प्रणाम), पित्रे नमः (पिता को प्रणाम)।

पञ्चमी विभक्ति (The Fifth Case-ending)।

१। "अपादाने पञ्चमी।" अपादानकारक में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, अश्वात् पतति (घोड़े से गिरता है, गृहात् गच्छामि (घर से जाता हूँ), जलात् उत्तिष्ठति (जल से उठता है, Rises from water)।

२। "ल्यब्लोपे पञ्चमी।" यप् (ल्यप्) प्रत्ययान्त पद के अप्रयोग में गम्यमान ल्यप् प्रत्ययान्त के कर्म और अधिकरण वाचक से पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, वृक्षात् चन्द्रं पश्यति "वृक्षमारुह्य पश्यति" (वृक्ष पर चढ़ कर चन्द्रमा को देखता है), आसनात् पश्यामि "आसने उपविश्य पश्यामि" (आसन पर बैठकर देखता हूँ)।

३। "पञ्चमी विभक्ति" दो अथवा अनेकों में से एक का उत्कर्ष बोध होने से निकृष्ट के उत्तर पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, धनात् विद्या गरीयसी (धन से विद्या अच्छी है), माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्यः आढ्यतराः (मथुरा के रहनेवाले पाटलिपुत्र के रहनेवालों से धनशाली हैं)।

४। "अन्यारादितरर्तेदिक्छब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते अन्यार्थैः।" अन्यार्थक (अन्य, इतर, भिन्न इत्यादि) शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, मित्रादन्यः कः परित्रातुं समर्थः (मित्र को छोड़ कर और कौन बचा सकता है), घटः

पटात् इतरः (घट पट से अलग है), इदमस्मात् भिन्नम् (यह इससे भिन्न है)।

५। "वहिरारात्प्रभृतिभिः।" वहिस्, आरात्, प्रभृति, इन शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है। यथा, गृहाद् वहिः (घर से वाहर), आराद् वनात् (वन के समीप), जन्मनः प्रभृति (जन्म से लेकर)।

६। "हेतौ तृतीया च।" हेतु (कारण) अर्थ में पञ्चमी और तृतीया विभक्तियाँ होती हैं। यथा, हर्षात् हर्षेण वा नृत्यति (हर्ष के हेतु नाचता है), भयात् भयेन वा कम्पते (डर से काँपता है), क्रोधात् क्रोधेन वा ताडयति (क्रोध से पीडित करता है), दुःखाद् दुःखेन वा रोदिति (दुःख के कारण रोता है)।

७। "ऋतेयोगे द्वितीया च।" ऋते शब्द के योग में पञ्चमी और द्वितीया विभक्तियाँ होती हैं। पाणिनि के मत में केवल पञ्चमी ही होती है। यथा, श्रमात् श्रमं वा ऋते विद्या न भवति (श्रम न करने से विद्या नहीं होती), धर्मात् धर्म्मं वा ऋते सुखं न भवति (धर्म न करने से सुख नहीं होता)।

८। "पृथग्विनाभ्यां द्वितीयातृतीये च।" पृथक् और विना शब्दों के योग में पञ्चमी तथा द्वितीया और तृतीया विभक्तियाँ होती हैं। यथा, चैत्रात् चैत्रं चैत्रेण वा पृथक् (चैत्र से पृथक्), श्रमात् श्रमं श्रमेण वा विना किमपि न सिध्यति (विना श्रम के कुछ भी सिद्ध नहीं होता), विद्यायाः विद्यां विद्यया वा विना वृथा जीवनम् (विद्या के विना जीवन वृथा है), पापात् पापं पापेन वा विना दुःखं न भवति (पाप के विना दुःख नहीं होता)।

षष्ठी विभक्ति (The Sixth Case-ending)।

१। "षष्ठी सम्बन्धे।" सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, मम हस्तः (मेरा हाथ), तव पुत्रः (तेरा पुत्र), नद्याः जलम् (नदी का जल), वृक्षस्यशाखा (वृक्ष की शाखा), प्रभोरादेशः (प्रभु की आज्ञा)।

२ । "कर्त्तृकर्म्मणोः कृति ।" कईएक कृत-प्रत्ययों के योग में कर्त्ता और कर्म्म में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा, शिशोः शयनम् (शिशु का शयन), अश्वस्य गतिः (अश्व का गमन), सुखस्य भोगः (सुख का भोग), धनस्य दाता (धन का देनेवाला)।

३ । "तुल्यार्थैस्तृतीया च ।" तुल्यार्थक (सम, तुल्य, समान, सदृश इत्यादि) शब्दों के योग में षष्ठी और तृतीया विभक्तियाँ होती हैं । यथा, विद्यायाः विद्यया वा समं धनं नास्ति (विद्या के समान धन नहीं है), विनयस्य विनयेन तुल्यो वा गुणो नास्ति (विनय के तुल्य गुण नहीं है) ।

४ । "दूरान्तिकार्थैः पञ्चमी च ।" दूरार्थ और अन्तिकार्थ शब्दों के योग में षष्ठी और पञ्चमी विभक्तियाँ होती हैं । यथा, दूरं ग्रामस्य ग्रामात् वा (ग्राम से दूर); अन्तिकं नगरस्य नगराद् वा (नगर के समीप) ।

सप्तमी विभक्ति (The Seventh Case-ending) ।

१ । "सप्तम्यधिकरणे ।" अधिकरणकारक में सप्तमी विभक्ति होती है। यथा, गृहे तिष्ठति (घर में रहता है), नद्यां स्नाति (नदी में स्नान करता है) ।

२ । "भावे सप्तमी (१) ।" जिसकी क्रिया के काल से अन्य क्रिया का काल (समय) निरूपित होता है उसके उत्तर सप्तमी विभक्ति होती है (२) । यथा, सूर्ये उदिते स गतः (सूर्य के उदय होने पर वह गया), रजन्यां प्रभातायां ते प्रस्थिताः (रात्रि के प्रभात होने पर वे गये) ।

३ । एक प्रकार की अनेक वस्तु अथवा व्यक्तियों में से एक को निर्द्धारित (निश्चय) करने को 'निर्द्धारण' कहते हैं ।

---

(१) यस्य च भावेन भावलक्षणम् ।

(२) अँगरेज़ी में जहाँ Nominative Absolute होता है संस्कृत में वहाँ "भावे सप्तमी" (Locative Absolute) होता है; जैसे, The sun *having set*, they went home—रवावस्तं गते ते गृहं जग्मुः ।

"यतश्च निर्द्धारणम् (१)।" जिनमें से निर्द्धारण किया जाता है, उनके उत्तर सप्तमी और षष्ठी विभक्तियाँ होती हैं। यथा, पर्व्वतेषु पर्व्वतानां वा हिमालयः श्रेष्ठः (पर्व्वतों में हिमालय श्रेष्ठ है), कविषु कवीनां वा कालिदासः श्रेष्ठः (कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है)।

४। "षष्ठी चानादरे।" अनादर का बोध होने से जिसका अनादर होता है उसके उत्तर सप्तमी वा षष्ठी विभक्ति होती है (२)। यथा, रुदति शिशौ (रुदतः शिशोः) माता जगाम (शिशु रो ही रहा था, माता चली गयी)।

Exercise VI.

(अनुशीलनी, अभ्यासार्थं प्रश्न)।

1. What is called लिङ्गार्थे प्रथमा? What other name has it? Give three examples of it.

2. Make sentences to illustrate (a) उक्ते कर्म्मणि प्रथमा, (b) अनुक्ते कर्त्तरि तृतीया, (c) तादर्थ्ये चतुर्थी, and (d) ल्यब्लोपे पञ्चमी।

3. Name all the words through the influence of which द्वितीया विभक्ति is used.

4. What do you understand by (a) प्रकृत्यादिभ्यस्तृतीया, (b) अपेक्षार्थे पञ्चमी, (c) भावे सप्तमी, (d) यतश्च निर्द्धारणम्, and (e) षष्ठी चानादरे? Give examples of each.

5. What case-endings (विभक्तियाँ) are used through the influence of the words हेतु, ऋते, पृथक्, विना, सम, तुल्य, समान and सदृश?

6. Account for the case-endings in the underlined words:—कुम्भकारेण घटः क्रियते, स मासं व्याकरणमधीते, सः सकोपम् आह, कोऽर्थः कलहेन, स वेगेन गच्छति, परोपकाराय साधूनां जीवनम्, स प्रासादात् चन्द्रं पश्यति।

---

(१) इस नियम को 'निर्द्धारणे षष्ठी सप्तमी च' भी कहते हैं।

(२) इसे Locative or Genitive Absolute कहते हैं।

7. Correct—प्रभो मम प्रति सदयो भव । स वेगाद् धावति । सत्वरो गच्छ । पिता पुत्रस्य सह नगरं गच्छति । पितरं नमः । पापस्य ऋते दुःखं न भवति । यत्नस्य विना विद्या न भवति ।

विशेष्य और विशेषण ।

(Noun and Adjective) ।

१ । जिसके द्वारा केवल किसी वस्तु वा जीव का बोध होता है इसको विशेष्य पद कहते हैं । यथा, गृहम्, जलम्, वृक्षः, लता, नौका, वस्त्रम्, पुस्तकम्, पृथ्वी, चन्द्रः, सूर्य्यः, नक्षत्रम्, शिशुः इत्यादि ।

२ । जिसके द्वारा विशेष्य का गुण या अवस्था प्रकाशित होती है उसको विशेषण पद कहते हैं । विशेषण प्रायः विशेष्य के पहले रहता है । यथा, नूतनं गृहम्, निर्म्मलं जलम्, फलवान् वृक्षः, धार्मिकः पुरुषः, पुष्पिता लता, भग्ना नौका ।

३ । कुछ विशेष्य शब्द पुंलिङ्ग (Masculine), कुछ स्त्रीलिङ्ग (Feminine) और कुछ क्लीवलिङ्ग (नपुंसकलिङ्ग) (Neuter) होते हैं । विशेष्य शब्द का जो लिङ्ग हो प्रायः वही लिङ्ग विशेषण शब्द का भी होता है । यथा, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरी कन्या, सुन्दरं गृहम्; उज्ज्वलः शशी, उज्ज्वला दीपशिखा, उज्ज्वलं नक्षत्रम्; बुद्धिमान् पुरुषः, बुद्धिमती स्त्री; निर्मला बुद्धिः निर्म्मलं जलम् ।

४ । विशेष्य पद जिस वचन का रहता है विशेषण पद भी प्रायः उसी वचन का होता है, अर्थात् विशेष्य पद एकवचनान्त होने से विशेषण पद भी एकवचनान्त होता है; विशेष्य पद द्विवचनान्त होने से विशेषण पद भी द्विवचनान्त होता है, और विशेष्य पद बहुवचनान्त होने से विशेषण पद भी बहुवचनान्त होता है । यथा, बलवान् सिंहः, बलवन्तौ सिंहौ, बलवन्तः

सिंहाः; वेगवती नदी, वेगवत्यौ नद्यौ, वेगवत्यः नद्यः; निविडम् वनम्, निविडे वने, निविडानि वनानि ।

५ । विशेष्य पद की जो विभक्ति होती है प्रायः वही विभक्ति विशेषण पद की होती है । यथा, सुन्दरः शिशुः, सुन्दरं शिशुम्, सुन्दरेण शिशुना, सुन्दराय शिशवे, सुन्दरात् शिशोः, सुन्दरस्य शिशोः, सुन्दरे शिशौ, निर्म्मलं जलम्, निर्म्मलेन जलेन, निर्म्मलाय जलाय, निर्म्मलात् जलाद्, निर्म्मलस्य जलस्य, निर्म्मले जले ।

६ । एकोनविंशति से लेकर नवनवति तक सब संख्यावाचक विशेषण शब्द एकवचन में व्यवहृत होते हैं, विशेष्य के लिङ्ग और वचन के अनुसार इनका कुछ भी परिवर्त्तन नहीं होता । यथा, एकोनविंशति गजाः, विंशति नद्यः, एकविंशति फलानि, चत्वारिंशत् नराः, चत्वारिंशत् स्त्रियः, चत्वारिंशत् गृहाणि ।

७ । शत, सहस्र संख्यावाचक विशेषण शब्द सदा क्लीवलिङ्ग के एकवचन में व्यवहृत होते हैं, इसलिए विशेष्य के लिङ्ग और वचन के कारण इनका कुछ भी परिवर्त्तन नहीं होता । यथा, शतं नराः, शतं नार्य्यः, शतं मित्राणि, सहस्रेण पुरुषैः, सहस्रेण स्त्रीभिः, सहस्रेण नेत्रैः ।

तिङन्त प्रकरण ।

१ । भू, स्था, गम्, दृश् प्रभृति को 'धातु' कहते हैं । एक-एक धातु से एक-एक क्रिया समझी जाती है । धातु के उत्तर जो विभक्तियाँ होती हैं उनको 'तिङ्' कहते हैं । इसलिए क्रियावाचक पद को तिङन्त पद कहते हैं ।

काल (Tense) ।

२ । जिस समय में क्रिया निष्पन्न होती है उसे 'काल (Tense)' कहते हैं । काल तीन हैं—वर्त्तमान, अतीत (भूत), और भविष्यत् ।

जो उपस्थित है, वह वर्त्तमानकाल (Present Tense) है। यथा, पश्यति (वह देखता है), पश्यामि (मैं देखता हूँ)। जो गत होगया वह अतीतकाल (Past Tense) है। यथा, ददर्श (देखा, देखा था), चकार (किया, किया था)। जो होने वाला है उसे भविष्यत्काल (Future Tense) कहते हैं। यथा, गमिष्यामि (मैं जाऊँगा), करिष्यामि (मैं करूँगा)।

वचन (Number)।

३। क्रिया के तीन वचन होते हैं—एकवचन, द्विवचन, वहुवचन। एकवचन से एक की, द्विवचन से दो की, और वहुवचन से दो से अधिक की क्रिया समझी जाती है। यथा, गच्छामि (मैं जाता हूँ); गच्छावः (हम दोनों जाते हैं), गच्छामः (हम जाते हैं); गमिष्यसि (तुम जाओगे), गमिष्यति (वह जायेगा), गमिष्यतः (वे दोनों जायेंगे); गमिष्यन्ति (वे जायेंगे)।

पुरुष (Person)।

४। प्रथमपुरुष (Third Person), मध्यमपुरुष (Second Person), और उत्तमपुरुष (First Person) में धातु के उत्तर भिन्न भिन्न विभक्तियाँ होती हैं; इसलिए क्रियावाचक पद भिन्न भिन्न होते हैं। अस्मद् शब्द से उत्तम पुरुष समझा जाता है, युष्मद् शब्द से मध्यमपुरुष समझा जाता है; इनके सिवाय और सव शब्दों से प्रथमपुरुष समझा जाता है। यथा अहं गच्छामि (मैं जाता हूँ), त्वं गच्छसि (तू जाता है), राजा गच्छति (राजा जाता है)। युष्मद् शव्द के सदृश अर्थ होने पर भी भवत् शव्द से प्रथमपुरुष समझा जाता है। यथा, भवान् गच्छति (आप जाते हैं)।

अकर्मक क्रिया।

(Intransitive Verb).

५। जिन क्रियाओं में कर्म्मपद की आवश्यकता नहीं है उनको अकर्म्मक अर्थात् कर्म्म शून्य क्रिया कहते हैं। यथा, अहं

तिष्ठामि (मैं रहता हूँ), शिशुः शेते (बच्चा सोता है), अश्वो धावति (घोड़ा दौड़ता है), नदी वर्द्धते (नदी बढ़ती है)।

सकर्मक क्रिया।
(Transitive Verb.)

६। जिस क्रिया के साथ कर्म्मपद हो उसको सकर्म्मक अर्थात् कर्म्मयुक्त क्रिया कहते हैं। यथा, गुरुः शिष्यमुपदिशति (गुरु शिष्य को उपदेश देता है), रामः रावणं जघान (राम ने रावण को मारा)।

कालबोधक दश लकार (१)।
(Inflectional or Conjugational Terminations.)

वर्त्तमानकाल में धातु के उत्तर लट् लकार होता है। अतीत (भूत) काल में धातु के उत्तर लङ् और लिट (२) लकार होते हैं। भविष्यत्काल में धातु के उत्तर लृट (३) लकार होता है। अनुज्ञा, नियोग, निमन्त्रण, अनुरोध, प्रार्थना जिज्ञासा प्रभृति अर्थों में लोट् लकार होता है। विधि अर्थ में और लोट् के सभी अर्थों में विधिलिङ् होता है।

अतीतकाल में लङ् और लिट् दोनों लकार होते हैं, परन्तु उत्तमपुरुष के साथ प्रायः लिट् का प्रयोग नहीं होता (४)। केवल चित्तविक्षेपादि अर्थ में ही होता है।

---

(१) संस्कृत में धातु के उत्तर दश लकार होते हैं और इनके स्थान में होनेवाली तिङ् विभक्तियाँ दो संज्ञाओं में और दो भागों में विभक्त हैं। प्रथम भाग को परस्मैपद और द्वितीय भाग को आत्मनेपद कहते हैं। कुछ धातु परस्मैपदी, कुछ आत्मनेपदी और कुछ उभयपदी, अर्थात् परस्मैपदी और आत्मनेपदी दोनों ही होते हैं। इस व्याकरण में केवल लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट और लिट्, इन छः लकारों के रूप दिये गये हैं। लुङ्, लुट आशीर्लिङ् और लृङ् इन चार लकारों के लिए तथा धातुरूप के विशेष ज्ञान के लिए मद्-सम्पादित व्याकरण-कौमुदी द्वितीय और तृतीय भाग देखो। (२) लुङ् भी। (३) लुट् भी। (४) लिट्परोक्ष अतीत में व्यवहृत होती है।

तिङ्—विभक्तियों की आकृति।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ति	सि	मि
द्विवचन	तस (तः)	थस् (थः)	वस् (वः)
बहुवचन	अन्ति	थ	मस् (मः)

आत्मनेपद।

एकवचन	ते	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	अन्ते	ध्वे	महे

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

परस्मैपद।

एकवचन	तु-तात्*	हि-तात्	आनि
द्विवचन	ताम्	तम्	आव
बहुवचन	अन्तु	त	आम

अर्थात् वक्ता ने जिस क्रिया को सम्पन्न होते नहीं देखा हो उसी भूतकालिक क्रिया में लिट् विभक्ति होती है। उत्तमपुरुष में कर्त्ता आप ही वक्ता है, इसलिए उत्तमपुरुष में लिट् का प्रयोग नहीं हो सकता। अतएव "अहं जगाम," "आवां जग्मिव," "वयं जग्मिम," इत्यादि लिखना भूल है; इनकी जगहों में "अहमगच्छम्," "आवामगच्छाव, "वयमगच्छाम," इत्यादि लिखना ही उचित है। परन्तु जो भूतकालिक क्रिया कर्त्ता के अज्ञान की अवस्था में सम्पन्न हुई हो या जिसके कार्य्य को कर्त्ता बिलकुल अस्वीकार करता हो उस क्रिया का कर्त्ता उत्तमपुरुष होने पर भी उसमें लिट् लकार का प्रयोग हो सकता है। यथा, सुप्तोऽहं किल रुरोद (सम्भवतः मैं सोते समय रो उठा था), न खल्वहं सुरां पपौ (मैंने निश्चय ही सुरापान नहीं किया), नाहमयोध्यां जगाम (मैं निश्चय ही अयोध्या नहीं गया)।

* "तुह्योस्तातङाशिष्यन्यतरस्याम्" केवल प्रथम और मध्यमपुरुष के एकवचन में तात् भी होता है आशीर्वाद अर्थ में।

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ताम्	स्व	ऐ
द्विवचन	आताम्	आथाम्	आवहै
बहुवचन	अन्ताम्	ध्वम्	आमहै

लङ्—अतीतकाल (Past Tense) ।

परस्मैपद ।

एकवचन	द् (त्)	स् (:)	अम्
द्विवचन	ताम्	तम्	व
बहुवचन	अन्	त	म

आत्मनेपद ।

एकवचन	त	थास् (थाः)	इ
द्विवचन	आताम्	आथाम्	वहि
बहुवचन	अन्त	ध्वम्	महि

विधिलिङ्—(Potential Mood)

परस्मैपद ।

एकवचन	यात्	यास् (याः)	याम्
द्विवचन	याताम्	यातम्	याव
बहुवचन	युस् (युः)	यात	याम

आत्मनेपद ।

एकवचन	ईत	ईयास् (ईयाः)	ईय
द्विवचन	ईयाताम्	ईयाथाम्	ईवहि
बहुवचन	ईरन्	ईध्वम्	ईमहि

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense) ।

परस्मैपद ।

एकवचन	स्यति	स्यसि	स्यामि
द्विवचन	स्यतस् (स्यतः)	स्यथस् (स्यथः)	स्यावस् (स्यावः)
बहुवचन	स्यन्ति	स्यथ	स्यामस् (स्यामः)

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	स्यते	स्यसे	स्ये
द्विवचन	स्येते	स्येथे	स्यावहे
बहुवचन	स्यन्ते	स्यध्वे	स्यामहे

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

परस्मैपद।

एकवचन	अ	थ	अ
द्विवचन	अतुस् (अतुः)	अथुस् (अथुः)	व
बहुवचन	उस् (उः)	अ	म

आत्मनेपद।

एकवचन	ए	से	ए
द्विवचन	आते	आथे	वहे
बहुवचन	इरे	ध्वे	महे

धातुरूप।

परस्मैपद; अकर्म्मक।

भू धातु—होना (To be; to exist)

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भवति	भवसि	भवामि
द्विवचन	भवतः	भवथः	भवावः
बहुवचन	भवन्ति	भवथ	भवामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	भवतु, भवतात्	भव, भवतात्	भवानि
द्विवचन	भवताम्	भवतम्	भवाव
बहुवचन	भवन्तु	भवत	भवाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अभवत्	अभवः	अभवम्
द्विवचन	अभवताम्	अभवतम्	अभवाव
बहुवचन	अभवन्	अभवत	अभवाम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	भवेत्	भवेः	भवेयम्
द्विवचन	भवेताम्	भवेतम्	भवेव
बहुवचन	भवेयुः	भवेत	भवेम.

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

एकवचन	भविष्यति	भविष्यसि	भविष्यामि
द्विवचन	भविष्यतः	भविष्यथः	भविष्यावः
बहुवचन	भविष्यन्ति	भविष्यथ	भविष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	बभूव	बभूविथ	बभूव
द्विवचन	बभूवतुः	बभूवथुः	बभूविव
बहुवचन	बभूवुः	बभूव	बभूविम

Exercise VII.

1. Translate into Sanskrit:— It rains. He was happy. They were sorry. We two are happy. I shall be sorry. May he be happy! Sons should be *respectful to their mothers* (मातृभक्त). Let him be happy. Be respectful to your father.

2. Correct:— त्वं भवति। अहं भवतु। सः भवसि। तौ भवतं। ते अभवताम्। युवां बभूविम। वयं भविष्याव। वयं भवेयम्। अहं बभूव।

अस् धातु—होना; रहना (To be; to exist) ।—

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अस्ति	असि	अस्मि
द्विवचन	स्तः	स्थः	स्वः
बहुवचन	सन्ति	स्थ	स्मः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood) ।

एकवचन	अस्तु, स्तात्	एधि, स्तात्	असानि
द्विवचन	स्ताम्	स्तम्	असाव
बहुवचन	सन्तु	स्त	असाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense) ।

एकवचन	आसीत्	आसीः	आसम्
द्विवचन	आस्ताम्	आस्तम्	आस्व
बहुवचन	आसन्	आस्त	आस्म

विधिलिङ्—(Potential Mood) ।

एकवचन	स्यात्	स्याः	स्याम्
द्विवचन	स्याताम्	स्यातम्	स्याव
बहुवचन	स्युः	स्यात	स्याम

लृट् और लिट् में अस् धातु का रूप भू धातु के सदृश है। यथा, लृट्—भविष्यति इत्यादि, लिट्—बभूव इत्यादि ।

Exercise VIII.

1. Translate into Sanskrit :— There is a river. We two are here (अत्र). You are in the house. Be it so. We are happy. They were sad. We are dutiful (कर्त्तव्यपरायण).

2. Correct :— नद्यः अस्ति । अहं असि । यूयं स्मः । तौ अस्तु । युवाम् स्याव । वयं स्तम् । ते आसीत् । अहमास्तम् । वयमास्म । त्वं स्यात् । आवां स्युः ।

४८ स्था धातु—रहना (To be; to exist; to stay)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	तिष्ठति	तिष्ठसि	तिष्ठामि
द्विवचन	तिष्ठतः	तिष्ठथः	तिष्ठावः
बहुवचन	तिष्ठन्ति	तिष्ठथ	तिष्ठामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	तिष्ठतु, तिष्ठतात्	तिष्ठ, तिष्ठतात्	तिष्ठानि
द्विवचन	तिष्ठताम्	तिष्ठतम्	तिष्ठाव
बहुवचन	तिष्ठन्तु	तिष्ठत	तिष्ठाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अतिष्ठत्	अतिष्ठः	अतिष्ठम्
द्विवचन	अतिष्ठताम्	अतिष्ठतम्	अतिष्ठाव
बहुवचन	अतिष्ठन्	अतिष्ठत	अतिष्ठाम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	तिष्ठेत्	तिष्ठेः	तिष्ठेयम्
द्विवचन	तिष्ठेताम्	तिष्ठेतम्	तिष्ठेव
बहुवचन	तिष्ठेयुः	तिष्ठेत	तिष्ठेम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

एकवचन	स्थास्यति	स्थास्यसि	स्थास्यामि
द्विवचन	स्थास्यतः	स्थास्यथः	स्थास्यावः
बहुवचन	स्थास्यन्ति	स्थास्यथ	स्थास्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	तस्थौ	तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थौ, तस्थ
द्विवचन	तस्थतुः	तस्थथुः	तस्थिव
बहुवचन	तस्थुः	तस्थ	तस्थिम

Exercise IX.

1. Translate into Sanskrit :— He stays here. Two men stay there. I stay here. We stay here. Let him stay here. Stay you at home. You should not stay here. They two stayed here yesterday (ह्यः). Who was there at that time? We two shall stay here.

2. Correct :— वयं तिष्ठसि । यूयं तिष्ठन्ति । ते तिष्ठेयम् । भवान् तिष्ठ । अहमतिष्ठत् । युवां तस्थौ । आवां स्थास्यन्ति । अहं तस्थौ । ते तिष्ठतु ।

हस् धातु—हँसना (To laugh) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हसति	हससि	हसामि
द्विवचन	हसतः	हसथः	हसावः
बहुवचन	हसन्ति	हसथ	हसामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood) ।

एकवचन	हसतु, हसतात्	हस, हसतात्	हसानि
द्विवचन	हसताम्	हसतम्	हसाव
बहुवचन	हसन्तु	हसत	हसाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense) ।

एकवचन	अहसत्	अहसः	अहसम्
द्विवचन	अहसताम्	अहसतम्	अहसाव
बहुवचन	अहसन्	अहसत	अहसाम

विधिलिङ्—(Potential Mood) ।

एकवचन	हसेत्	हसेः	हसेयम्
द्विवचन	हसेताम्	हसेतम्	हसेव
बहुवचन	हसेयुः	हसेत	हसेम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हसिष्यति	हसिष्यसि	हसिष्यामि
द्विवचन	हसिष्यतः	हसिष्यथः	हसिष्यावः
बहुवचन	हसिष्यन्ति	हसिष्यथ	हसिष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense) ।

एकवचन	जहास	जहसिथ	जहास, जहस
द्विवचन	जहसतुः	जहसथुः	जहसिव
बहुवचन	जहसुः	जहस	जहसिम

Exercise X.

1. Translate into Sanskrit :— Ram laughs. We two laugh. Three girls are laughing. Let us laugh. Laugh you. The three women laughed. We laughed. I laughed. They *laughed for joy. Students should not laugh at the time* of reading. All the girls of the school will laugh. We two shall laugh.

2. Correct :— बालकाः हसाव । अहं जहस । नराः हसत । वयं अहसम् । भवान् हंस । ताः हसिष्यसि । द्वौ बालकौ हसन्तु । वयं सर्व्वे हसेयुः । वयं हसन्ति ।

वस् धातु—वास करना (To live ; to dwell) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वसति	वससि	वसामि
द्विवचन	वसतः	वसथः	वसावः
बहुवचन	वसन्ति	वसथ	वसामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood) ।

एकवचन	वसतु, वसतात्	वस, वसतात्	वसानि
द्विवचन	वसताम्	वसतम्	वसाव
बहुवचन	वसन्तु	वसत	वसाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अवसत्	अवसः	अवसम्
द्विवचन	अवसताम्	अवसतम्	अवसाव
बहुवचन	अवसन्	अवसत	अवसाम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	वसेत्	वसेः	वसेयम्
द्विवचन	वसेताम्	वसेतम्	वसेव
बहुवचन	वसेयुः	वसेत	वसेम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)

एकवचन	वत्स्यति	वत्स्यसि	वत्स्यामि
द्विवचन	वत्स्यतः	वत्स्यथः	वत्स्यावः
बहुवचन	वत्स्यन्ति	वत्स्यथ	वत्स्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	उवास	उवसिथ, उवस्थ	उवास, उवस
द्विवचन	ऊषतुः	ऊषथुः	ऊषिव
बहुवचन	ऊषुः	ऊष	ऊषिम

Exercise XI.

1. Translate into Sanskrit :— Four lions live in a certain forest. You two live in the city. Let them live with their mother. No one should dwell in a place full of bad smell. Who lived with you? How did he live with me? You will dwell in this town. I too lived in this small village.

2. Correct :— बहुवो पक्षिणः अत्र वसति। व्याघ्रादयःप्राणी वने वसान्ति। अहं गृहे उवास। छात्राः विद्यालये ऊषथुः। वयं तत्र वत्स्यन्ति। भवान् वस। त्वं ऊषतुः।

रुद् धातु—रोना ; कानना (To cry ; to weep) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	रोदिति	रोदिषि	रोदिमि
द्विवचन	रुदितः	रुदिथः	रुदिवः
वहुवचन	रुदन्ति	रुदिथ	रुदिमः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood) ।

एकवचन	रोदितु, रुदितात्	रुदिहि, रुदितात्	रोदानि
द्विवचन	रुदिताम्	रुदितम्	रोदाव
वहुवचन	रुदन्तु	रुदित	रोदाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense) ।

एकवचन	अरोदीत्, अरोदत्	अरोदीः, अरोदः	अरोदम्
द्विवचन	अरुदिताम्	अरुदितम्	अरुदिव
वहुवचन	अरुदन्	अरुदित	अरुदिम

विधिलिङ्—(Potential Mood) ।

एकवचन	रुद्यात्	रुद्याः	रुद्याम्
द्विवचन	रुद्याताम्	रुद्यातम्	रुद्याव
वहुवचन	रुद्युः	रुद्यात	रुद्याम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense) ।

एकवचन	रोदिष्यति	रोदिष्यसि	रोदिष्यामि
द्विवचन	रोदिष्यतः	रोदिष्यथः	रोदिष्यावः
वहुवचन	रोदिष्यन्ति	रोदिष्यथ	रोदिष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tanse)

एकवचन	रुरोद	रुरोदिथ	रुरोद, रुरुद
द्विवचन	रुरुदतुः	रुरुदथुः	रुरुदिव
वहुवचन	रुरुदुः	रुरुद	रुरुदिम

Exercise XII.

1. Translate into Sanskrit :—Why is he crying ? The boy cries for food. Two women cried. We two cried with them. They will cry. You should not cry. Let me cry. We wept for his death.

2. Correct :— अहमरोदत्। त्वं रोदिहि। ते रुद्याः। त्वं रुरोद्। यूयं रुरुदथुः। ते रुदतु। अहं रुदिषि। बालकाः रोदन्ति। वयं रुरुदिम। कः रुदन्ति ?

पत् धातु—गिरना (To fall)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पतति	पतसि	पतामि
द्विवचन	पततः	पतथः	पतावः
बहुवचन	पतन्ति	पतथ	पतामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	पततु, पततात्	पत, पततात्	पतानि
द्विवचन	पतताम्	पततम्	पताव
बहुवचन	पतन्तु	पतत	पताम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अपतत्	अपतः	अपतम्
द्विवचन	अपतताम्	अपततम्	अपताव
बहुवचन	अपतन्	अपतत	अपताम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	पतेत्	पतेः	पतेयम्
द्विवचन	पतेताम्	पतेतम्	पतेव
बहुवचन	पतेयुः	पतेत	पतेम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पतिष्यति	पतिष्यसि	पतिष्यामि
द्विवचन	पतिष्यतः	पतिष्यथः	पतिष्यावः
बहुवचन	पतिष्यन्ति	पतिष्यथ	पतिष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense) ।

एकवचन	पपात	पेतिथ	पपात, पपत
द्विवचन	पेततुः	पेतथुः	पेतिव
बहुवचन	पेतुः	पेत	पेतिम

Exercise XIII.

1. Translate into Sanskrit :— The hind (हरिणी) falls on the ground. Leaves fell from the tree. Monkeys will fall. Let them fall on the ground. Do not fall. Will he fall from the tree?

2. Correct:— अमु पतसि । त्वं पतेयुः । यूयं पपात । इमे पतिष्यति । आवामपतन् । वयं पेतिम । तौ पेतुः ।

सकर्म्मक ।

कृ धातु (उभयपदी)—करना (To do) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	करोति	करोषि	करोमि
द्विवचन	कुरुतः	कुरुथः	कुर्वः
बहुवचन	कुर्वन्ति	कुरुथ	कुर्म्मः

आत्मनेपद ।

एकवचन	कुरुते	कुरुषे	कुर्वे
द्विवचन	कुर्वाते	कुर्वाथे	कुर्वहे
बहुवचन	कुर्वते	कुरुध्वे	कुर्म्महे

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)

परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	करोतु-कुरुतात्	कुरु-कुरुतात्	करवाणि
द्विवचन	कुरुताम्	कुरुतम्	करवाव
बहुवचन	कुर्वन्तु	कुरुत	करवाम

आत्मनेपद।

एकवचन	कुरुताम्	कुरुष्व	करवै
द्विवचन	कुर्वाताम्	कुर्वाथाम्	करवावहै
बहुवचन	कुर्वताम्	कुरुध्वम्	करवामहै

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

परस्मैपद।

एकवचन	अकरोत्	अकरोः	अकरवम्
द्विवचन	अकुरुताम्	अकुरुतम्	अकुर्व
बहुवचन	अकुर्वन्	अकुरुत	अकुर्म

आत्मनेपद।

एकवचन	अकुरुत	अकुरुथाः	अकुर्वि
द्विवचन	अकुर्वाताम्	अकुर्वाथाम्	अकुर्वहि
बहुवचन	अकुर्वत	अकुरुध्वम्	अकुर्महि

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

परस्मपद।

एकवचन	कुर्यात्	कुर्याः	कुर्याम्
द्विवचन	कुर्याताम्	कुर्यातम्	कुर्याव
बहुवचन	कुर्युः	कुर्यात	कुर्याम

आत्मनेपद।

एकवचन	कुर्वीत	कुर्वीथाः	कुर्वीय
द्विवचन	कुर्वीयाताम्	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीवहि
बहुवचन	कुर्वीरन्	कुर्वीध्वम्	कुर्वीमहि

लृट्—भविष्यत्काल—(Future Tense) ।

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	करिष्यति	करिष्यसि	करिष्यामि
द्विवचन	करिष्यतः	करिष्यथः	करिष्यावः
बहुवचन	करिष्यन्ति	करिष्यथ	करिष्यामः

आत्मनेपद ।

एकवचन	करिष्यते	करिष्यसे	करिष्ये
द्विवचन	करिष्येते	करिष्येथे	करिष्यावहे
बहुवचन	करिष्यन्ते	करिष्यध्वे	करिष्यामहे

लिट्—अतीतकाल (Past Tense) ।

परस्मैपद ।

एकवचन	चकार	चकर्थ	चकार, चकर
द्विवचन	चक्रतुः	चक्रथुः	चकृव
बहुवचन	चक्रुः	चक्र	चकृम

आत्मनेपद ।

एकवचन	चक्रे	चकृषे	चक्रे
द्विवचन	चक्राते	चक्राथे	चकृवहे
बहुवचन	चक्रिरे	चकृढ्वे	चकृमहे

Exercise XIV.

1. Translate into Sanskrit :— Ram does his work every day. We never do our work. I shall always do my work. You should do the work. I have done my work. They laboured skilfully. He had worked hard. What did you do there? Let them do the work. Did you do anything? We did nothing at all.

2. Correct :— अहं किं करिष्यति । यूयं परिश्रमं चकार । नाहमिदमकुरुवम् । यूयमिदं कुरु । वयं परिश्रमं कुर्वन्ति । बालकाः श्रमं कुर्यात् । वयमिदं चकृम । भवान् कुर्विदम् । अहं किमपि न अकुरुत ।

गम् धातु—गमन करना; जाना (To go)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गच्छति	गच्छसि	गच्छामि
द्विवचन	गच्छतः	गच्छथः	गच्छावः
वहुवचन	गच्छन्ति	गच्छथ	गच्छामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	गच्छतु, गच्छतात्	गच्छ, गच्छतात्	गच्छानि
द्विवचन	गच्छताम्	गच्छतम्	गच्छाव
वहुवचन	गच्छन्तु	गच्छत	गच्छाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अगच्छत्	अगच्छः	अगच्छम्
द्विवचन	अगच्छताम्	अगच्छतम्	अगच्छाव
वहुवचन	अगच्छन्	अगच्छत	अगच्छाम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	गच्छेत्	गच्छेः	गच्छेयम्
द्विवचन	गच्छेताम्	गच्छेतम्	गच्छेव
वहुवचन	गच्छेयुः	गच्छेत	गच्छेम

ऌट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

एकवचन	गमिष्यति	गमिष्यसि	गमिष्यामि
द्विवचन	गमिष्यतः	गमिष्यथः	गमिष्यावः
वहुवचन	गमिष्यन्ति	गमिष्यथ	गमिष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	जगाम	जगमिथ, जगन्थ	जगाम, जगम
द्विवचन	जग्मतुः	जग्मथुः	जग्मिव
वहुवचन	जग्मुः	जग्म	जग्मिम

Exercise XV.

1. Translate into Sanskrit:—Four cows are going. Three ladies go to the village (ग्राम). We went to Benares. Six girls went home from the school. When will you go there? Let them go to the forest. Thou didst go there alone (एकाकी). Who will go before me?

2. Correct:—अयं बालिकाः गृहं गच्छतु। एषः नार्य्यः अगाम। वयं जग्मिम। तौ अगच्छत्। ते गमष्यति। आवां गच्छेत्। नाहं गच्छति। अहमयोध्याम् जग्मतुः। भवान् स्वगृहं गच्छ।

श्रु धातु—श्रवण करना, सुनना (To hear)

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	शृणोति	शृणोषि	शृणोमि
द्विवचन	शृणुतः	शृणुथः	शृणुवः, शृण्वः
बहुवचन	शृण्वन्ति	शृणुथ	शृणुमः, शृण्मः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	शृणोतु, शृणुतात्	शृणु, शृणुतात्	शृणवानि
द्विवचन	शृणुताम्	शृणुतम्	शृणवाव
बहुवचन	शृण्वन्तु	शृणुत	शृणवाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अशृणोत्	अशृणोः	अशृणवम्
द्विवचन	अशृणुताम्	अशृणुतम्	अशृणुव, अशृण्व
बहुवचन	अशृण्वन्	अशृणुत	अशृणुम, अशृण्म

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	शृणुयात्	शृणुयाः	शृणुयाम्
द्विवचन	शृणुयाताम्	शृणुयातम	शृणुयाव
बहुवचन	शृणुयुः	शृणुयात	शृणुयाम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	श्रोष्यति	श्रोष्यसि	श्रोष्यामि
द्विवचन	श्रोष्यतः	श्रोष्यथः	श्रोष्यावः
बहुवचन	श्रोष्यन्ति	श्रोष्यथ	श्रोष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense) ।

एकवचन	शुश्राव	शुश्रोथ	शुश्राव, शुश्र
द्विवचन	शुश्रुवतुः	शुश्रुवथुः	शुश्रुव
बहुवचन	शुश्रुवुः	शुश्रुव	शुश्रुम

Exercise XVI.

1. Translate into Sanskrit :—They hear the words of the teacher. Why do you not hear the advice of your father ? Hear my words, boys. I did not hear the sound. I heard the sound. You heard my words. He has heard the news. Good students should hear the advice of their teachers. A faithful servant must hear the order of his master. We two will hear the story now. You also hear it.

2. Correct :—अहं तव वाक्यं शुश्रुवतुः । भवान् इदं श्रृणोसि । त्वं सदुपदेशं श्रृणुयात् । यूयं श्रृणु मे वचः । तौ श्रृणुयातम् मे वचनं । आवामश्रृणोः तव करुणं रोदनम् । युवां शुश्रुवतुः मम पाठं । वयमश्रृणुमः तेषां प्रार्थना । यूयं श्रृण्वन्तु गुरुपदेशम् ।

दृश् धातु—दर्शन करना ; देखना (To see) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पश्यति	पश्यसि	पश्यामि
द्विवचन	पश्यतः	पश्यथः	पश्यावः
बहुवचन	पश्यन्ति	पश्यथ	पश्यामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पश्यतु, पश्यतात्	पश्य, पश्यतात्	पश्यानि
द्विवचन	पश्यताम्	पश्यतम्	पश्याव
बहुवचन	पश्यन्तु	पश्यत्	पश्याम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)

एकवचन	अपश्यत्	अपश्यः	अपश्यम्
द्विवचन	अपश्यताम्	अपश्यतम्	अपश्याव
बहुवचन	अपश्यन्	अपश्यत	अपश्याम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	पश्येत्	पश्येः	पश्येयम्
द्विवचन	पश्येताम्	पश्येतम्	पश्येव
बहुवचन	पश्येयुः	पश्येत	पश्येम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)

एकवचन	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यामि
द्विवचन	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यावः
बहुवचन	द्रक्ष्यन्ति	द्रक्ष्यथ	द्रक्ष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	ददर्श	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददर्श
द्विवचन	ददृशतुः	ददृशथुः	ददृशिव
बहुवचन	ददृशुः	ददृश	ददृशिम

Exercise XVII.

1. Translate into Sanskrit :—We two are seeing the moon. Two youths see the lion. Three women saw the flowers. Have you seen an elephant ? What did they see there ? Surely I did not see the moon. What will you see in the city of Calcutta now ? They should see the king. Let them see the picture now.

2. Correct:—बालकाय किं पश्यतः ? वयमिदमालेख्यम । द्वे बालकौ पश्यन्तु । वयं पुस्तकानि दृदशिय । ते किं दृष्टा ? न ते मां द्रक्ष्यति । वमी एतत् न पश्येयम् ।

दा धातु (उभयपदी)—दान देना; देना (To give) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददाति	ददासि	ददामि
द्विवचन	दत्तः	दत्थः	दद्वः
बहुवचन	ददति	दत्थ	दद्मः

आत्मनेपद ।

एकवचन	दत्ते	दत्से	ददे
द्विवचन	ददाते	ददाथे	दद्वहे
बहुवचन	ददते	दद्ध्वे	दद्महे

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood) ।

परस्मैपद ।

एकवचन	ददातु, दत्तात्	देहि, दत्तात्	ददानि
द्विवचन	दत्ताम्	दत्तम्	ददाव
बहुवचन	ददतु	दत्त	ददाम

आत्मनेपद ।

एकवचन	दत्ताम्	दत्स्व	ददै
द्विवचन	ददाताम्	ददाथाम्	ददावहै
बहुवचन	ददताम्	दद्ध्वम्	ददामहै

लङ्—अतीतकाल (Past Tense) ।

परस्मैपद ।

एकवचन	अददात्	अददाः	अददाम्
द्विवचन	अदत्ताम्	अदत्तम्	अदद्व
बहुवचन	अददुः	अदत्त	अदद्म

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	अदत्त	अदत्थाः	अददि
द्विवचन	अददाताम्	अददाथाम्	अदद्वहि
वहुवचन	अददत	अदद्ध्वम्	अदद्महि

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

परस्मैपद।

एकवचन	दद्यात्	दद्याः	दद्याम्
द्विवचन	दद्याताम्	दद्यातम्	दद्याव
वहुवचन	दद्युः	दद्यात	दद्याम

आत्मनेपद।

एकवचन	ददीत	ददीथाः	ददीय
द्विवचन	ददीयाताम्	ददीयाथाम्	ददीवहि
वहुवचन	ददीरन्	ददीध्वम्	ददीमहि

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

परस्मैपद।

एकवचन	दास्यति	दास्यसि	दास्यामि
द्विवचन	दास्यतः	दास्यथः	दास्यावः
वहुवचन	दास्यन्ति	दास्यथ	दास्यामः

आत्मनेपद।

एकवचन	दास्यते	दास्यसे	दास्ये
द्विवचन	दास्येते	दास्येथे	दास्यावहे
वहुवचन	दास्यन्ते	दास्यध्वे	दास्यामहे

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

परस्मैपद।

एकवचन	ददौ	ददिथ, ददाथ	ददौ
द्विवचन	ददतुः	ददथुः	ददिव
वहुवचन	ददुः	दद	ददिम

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ददे	ददिषे	ददे
द्विवचन	ददाते	ददाथे	ददिवहे
बहुवचन	ददिरे	ददिध्वे	ददिमहे

Exercise XVIII.

1. Translate into Sanskrit:—The rich give money and food to the poor. You give alms to the beggars. Let them give clothes to the blind. We gave some fruits to the birds. You gave them flowers. What will they give to these four girls? We must give them something.

2. Correct:—अहं तं धनं दद्यः । ते त्वां किं ददाति ? त्वं मे वित्तं ददानि । अयं बालकौ ते पुस्तकं दत्तम् । ते किं दद्याः । तौ पुरुषाः किमददात् । त्वं मां धनं दद । वयं किमपि न दास्यन्ति ।

ग्रह् धातु (उभयपदी)—ग्रहण करना, लेना (To take) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णाति	गृह्णासि	गृह्णामि
द्विवचन	गृह्णीतः	गृह्णीथः	गृह्णीवः
बहुवचन	गृह्णन्ति	गृह्णीथ	गृह्णीमः

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णीते	गृह्णीषे	गृह्णे
द्विवचन	गृह्णाते	गृह्णाथे	गृह्णीवहे
बहुवचन	गृह्णते	गृह्णीध्वे	गृह्णीमहे

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood) ।

परस्मैपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णातु, गृह्णीतात्	गृहाण, गृह्णीतात्	गृह्णानि
द्विवचन	गृह्णीताम्	गृह्णीतम्	गृह्णाव
बहुवचन	गृह्णन्तु	गृह्णीत	गृह्णाम

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	गृह्णीताम्	गृह्णीष्व	गृह्णै
द्विवचन	गृह्णाताम्	गृह्णाथाम्	गृह्णावहै
वहुवचन	गृह्णताम्	गृह्णीध्वम्	गृह्णामहै

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

परस्मैपद।

एकवचन	अगृह्णात्	अगृह्णाः	अगृह्णाम्
द्विवचन	अगृह्णीताम्	अगृह्णीतम्	अगृह्णीव
वहुवचन	अगृह्णन्	अगृह्णीत	अगृह्णीम

आत्मनेपद।

एकवचन	अगृह्णीत	अगृह्णीथाः	अगृह्णि
द्विवचन	अगृह्णाताम्	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीवहि
वहुवचन	अगृह्णत	अगृह्णीध्वम्	अगृह्णीमहि

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

परस्मैपद।

एकवचन	गृह्णीयात्	गृह्णीयाः	गृह्णीयाम्
द्विवचन	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयातम्	गृह्णीयाव
वहुवचन	गृह्णीयुः	गृह्णीयात	गृह्णीयाम

आत्मनेपद।

एकवचन	गृह्णीत	गृह्णीथाः	गृह्णीय
द्विवचन	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीवहि
वहुवचन	गृह्णीरन्	गृह्णीध्वम्	गृह्णीमहि

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

परस्मैपद।

एकवचन	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यामि
द्विवचन	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यावः
वहुवचन	ग्रहीष्यन्ति	ग्रहीष्यथ	ग्रहीष्यामः

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्ये
द्विवचन	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यावहे
बहुवचन	ग्रहीष्यन्ते	ग्रहीष्यध्वे	ग्रहीष्यामहे

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

परस्मैपद।

एकवचन	जग्राह	जग्रहिथ	जग्राह, जग्रह
द्विवचन	जगृहतुः	जगृहथुः	जगृहिव
बहुवचन	जगृहुः	जगृह	जगृहिम

आत्मनेपद।

एकवचन	जगृहे	जगृहिषे	जगृहे
द्विवचन	जगृहाते	जगृहाथे	जगृहिवहे
बहुवचन	जगृहिरे	जगृहिध्वे, जगृहिढ्वे	जगृहिमहे

Exercise XIX.

1. Translate into Sanskrit:—They do not take alms from any one. We take the flower from him. We took money from the man. You have not taken anything from us. They took it from you. Boys, take these pictures from me. Takest thou the money from the rich. Let us take the flowers from the garden. You should not take my books. I shall not take it from you. They will take it.

2. Correct:—अहमिदं गृह्णाति। त्वं पुस्तकमिदम् गृह्णाति। वयं धनमगृह्णीताम्। ते पुष्पमगृह्णीत। नाहमेतत् जगृहुः। युवां फलानि जगृहतुः। अहं तत् न गृहीष्यति।

प्रच्छ् धातु—पूछना (To ask)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पृच्छति	पृच्छसि	पृच्छामि
द्विवचन	पृच्छतः	पृच्छथः	पृच्छावः
बहुवचन	पृच्छन्ति	पृच्छथ	पृच्छामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	पृच्छतु, पृच्छतात्	पृच्छ, पृच्छतात्	पृच्छानि
द्विवचन	पृच्छताम्	पृच्छतम्	पृच्छाव
बहुवचन	पृच्छन्तु	पृच्छत	पृच्छाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अपृच्छत्	अपृच्छः	अपृच्छम्
द्विवचन	अपृच्छताम्	अपृच्छतम्	अपृच्छाव
बहुवचन	अपृच्छन्	अपृच्छत	अपृच्छाम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	पृच्छेत्	पृच्छेः	पृच्छेयम्
द्विवचन	पृच्छेताम्	पृच्छेतम्	पृच्छेव
बहुवचन	पृच्छेयुः	पृच्छेत	पृच्छेम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

एकवचन	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यामि
द्विवचन	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यावः
बहुवचन	प्रक्ष्यन्ति	प्रक्ष्यथ	प्रक्ष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	पप्रच्छ	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ	पप्रच्छ
द्विवचन	पप्रच्छतुः	पप्रच्छथुः	पप्रच्छिव
बहुवचन	पप्रच्छुः	पप्रच्छ	पप्रच्छिम

Exercise XX.

1. Translate into Sanskrit :—We ask you a question. What do you ask me ? Let the teacher ask questions to the students. Let them ask their mother. Students asked this question to the teacher. He has asked me this question. We asked you this question. They had asked us these questions. I will not ask you anything. They will ask him this. Students should not ask such questions.

2. Correct:—त्वं मां पृच्छति। भवान् नः पृच्छ। अहमपृच्छत्। त्वमावां पप्रच्छ। वयं तं पप्रच्छुः। नाहं प्रक्ष्यति। बालकाः इदं प्रश्नं पृच्छेः।

ब्रू धातु (उभयपदी)—बोलना (To tell; To say).।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

परस्मैपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रवीति, आह	ब्रवीषि, आत्थ	ब्रवीमि
द्विवचन	ब्रूतः, आहतुः	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूवः
बहुवचन	ब्रुवन्ति, आहुः	ब्रूथ	ब्रूमः

आत्मनेपद।

एकवचन	ब्रूते	ब्रूषे	ब्रुवे
द्विवचन	ब्रुवाते	ब्रुवाथे	ब्रूवहे
बहुवचन	ब्रुवते	ब्रूध्वे	ब्रूमहे

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

परस्मैपद।

एकवचन	ब्रवीतु, ब्रूतात्	ब्रूहि, ब्रूतात्	ब्रवाणि
द्विवचन	ब्रूताम्	ब्रूतम्	ब्रवाव
बहुवचन	ब्रुवन्तु	ब्रूत	ब्रवाम

आत्मनेपद।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	ब्रूताम्	ब्रूष्व	ब्रवै
द्विवचन	ब्रुवाताम्	ब्रुवाथाम्	ब्रवावहै
बहुवचन	ब्रुवताम्	ब्रूध्वम्	ब्रवामहै

लङ्—अतीतकाल (Past tanse)।

एकवचन	अब्रवीत्	अब्रवीः	अब्रवम्
द्विवचन	अब्रूताम्	अब्रूतम्	अब्रूव
बहुवचन	अब्रुवन्	अब्रूत	अब्रूम

आत्मनेपद।

एकवचन	अब्रूत	अब्रूथाः	अब्रुवि
द्विवचन	अब्रुवाताम्	अब्रुवाथाम्	अब्रूवहि
बहुवचन	अब्रुवत	अब्रुध्वम्	अब्रूमहि

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

परस्मैपद।

एकवचन	ब्रूयात्	ब्रूयाः	ब्रूयाम्
द्विवचन	ब्रूयाताम्	ब्रूयातम्	ब्रूयाव
बहुवचन	ब्रूयुः	ब्रूयात	ब्रूयाम

आत्मनेपद।

एकवचन	ब्रुवीत	ब्रुवीथाः	ब्रुवीय
द्विवचन	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीवहि
बहुवचन	ब्रुवीरन्	ब्रुवीध्वम्	ब्रुवीमहि

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

परस्मैपद।

एकवचन	वक्ष्यति	वक्ष्यसि	वक्ष्यामि
द्विवचन	वक्ष्यतः	वक्ष्यथः	वक्ष्यावः
बहुवचन	वक्ष्यन्ति	वक्ष्याथः	वक्ष्यामः

आत्मनेपद ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	वक्ष्यते	वक्ष्यसे	वक्ष्ये
द्विवचन	वक्ष्येते	वक्ष्येथे	वक्ष्यावहे
बहुवचन	वक्ष्यन्ते	वक्ष्यध्वे	वक्ष्यामहे

लिट्—अतीतकाल (Past Tense) ।

परस्मैपद ।

एकवचन	उवाच	उवचिथ, उवक्थ	उवाच, उवच
द्विवचन	ऊचतुः	ऊचथुः	ऊचिव
बहुवचन	ऊचुः	ऊच	ऊचिम

आत्मनेपद ।

एकवचन	ऊचे	ऊचिषे	ऊचे
द्विवचन	ऊचाते	ऊचाथे	ऊचिवहे
बहुवचन	ऊचिरे	ऊचिध्वे	ऊचिमहे

Exercise XXI.

1. Translate into Sanskrit:—We tell you this. What did he say? Tell him that. Let him say. We told him this. You told me that. What did he tell? He said this. You should not tell it. Should he tell this? They will tell it. I shall not tell it.

2. Correct:—अहं किं ब्रवीषि । ते आह, भोः प्रभुः भवानेवं मा ब्रूहि । अहमिदं ब्रवाम । सूत्याः अब्रवीत् । यूयमब्रूम । त्वमुवाच । आवामुचथुः । ते सत्यं ब्रूयात् । नाहमप्रियं सत्यं ब्रूयात् । त्वमसत्यं वक्ष्यति । वयं सदानृतं वदयामि ।

* भक्ष् धातु—भोजन करना; खाना (To eat)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	भक्षयति	भक्षयसि	भक्षयामि
द्विवचन	भक्षयतः	भक्षयथः	भक्षयावः
वहुवचन	भक्षयन्ति	भक्षयथ	भक्षयामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	भक्षयतु, भक्षयतात्	भक्षय, भक्षयतात्	भक्षयाणि
द्विवचन	भक्षयताम्	भक्षयतम्	भक्षयाव
वहुवचन	भक्षयन्तु	भक्षयत	भक्षयाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अभक्षयत्	अभक्षयः	अभक्षयम्
द्विवचन	अभक्षयताम्	अभक्षयतम्	अभक्षयाव
वहुवचन	अभक्षयन्	अभक्षयत	अभक्षयाम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	भक्षयेत्	भक्षयेः	भक्षयेयम्
द्विवचन	भक्षयेताम्	भक्षयेतम्	भक्षयेव
वहुवचन	भक्षयेयुः	भक्षयेत	भक्षयेम

लृट्—भविष्यत्काल—(Future Tense)।

एकवचन	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यसि	भक्षयिष्यामि
द्विवचन	भक्षयिष्यंतः	भक्षयिष्यथः	भक्षयिष्यावः
वहुवचन	भक्षयिष्यन्ति	भक्षयिष्यथ	भक्षयिष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	× भक्षयामास	भक्षयामासिथ	भक्षयामास
द्विवचन	भक्षयामासतुः	भक्षयामासथुः	भक्षयामासिव
वहुवचन	भक्षयामासुः	भक्षयामास	भक्षयामासिम

---

* भक्ष् धातु भ्वादिगणी उभयपदी भी है। रूपः—हस्, और ग्रह् के सदृश हैं—भक्षति; भक्षतः भक्षन्ति, भक्षते, भक्षेते, भक्षन्ते।

× भक्षयाञ्चकार तथा भक्षयाम्बभूव इत्यादि क्रम से भी नव नव रूप जानने चाहिये।

Exercise XXII.

1. Translate into Sanskrit:—Cows eat grass. We eat all sorts of good food. Eat ripe fruits. Do not let him eat green (अपक्व) mangoes. They have eaten fruits to-day. You ate three green mangoes. We two ate very sweet fruits. He ate two sweet mangoes. Boys should not eat green fruits. We should eat sweet fruits You two will eat two mangoes. We two will eat mangoes.

2. Correct:—अहं किं भक्षयति? युवामेतत् भक्षयत। त्वमिदं मा भक्षत। अहमेतत् भक्षयानि। त्वमिदं भक्षयामास। अहमपि भक्षयाम। संततभक्षयत। युवामिदमभक्षयताम्। ताविदं भक्षयेयम्। आवामेतत भक्षयिष्यथः। कापि न भक्षयिष्यन्ति।

पा धातु—पान करना; पीना (To drink)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पिवति	पिवसि	पिवामि
द्विवचन	पिवतः	पिवथः	पिवावः
वहुवचन	पिवन्ति	पिवथ	पिवामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	पिवतु, पिवतात्	पिव, पिवतात्	पिवानि
द्विवचन	पिवताम्	पिवतम्	पिवाव
वहुवचन	पिवन्तु	पिवत	पिवाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अपिवत्	अपिवः	अपिवम्
द्विवचन	अपिवताम्	अपिवतम्	अपिवाव
वहुवचन	अपिवन्	अपिवत	अपिवाम

विधिलिङ्—(Potential Mood) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	पिवेत्	पिवेः	पिवेयम्
द्विवचन	पिवेताम्	पिवेतम्	पिवेव
वहुवचन	पिवेयुः	पिवेत	पिवेम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense) ।

एकवचन	पास्यति	पास्यसि	पास्यामि
द्विवचन	पास्यतः	पास्यथः	पास्यावः
वहुवचन	पास्यन्ति	पास्यथ	पास्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense) ।

एकवचन	पपौ	पपिथ, पपाथ	पपौ
द्विवचन	पपतुः	पपथुः	पपिव
वहुवचन	पपुः	पप	पपिम

Exercise XXIII.

1. Translate into Sanskrit:—We drink cold water. What do they drink? Let them drink warm milk. Drinkest thou pure milk. Three boys have drunk sweet milk. These two girls have not drunk milk as yet. We drank water. They drank only cold water. They should not drink cocoanut water at night. No one should drink wine. You will drink cocoanut water. The cats will drink the milk.

2. Correct:—बालकः दुग्धं पिवन्ति । वालकः दुग्धं पिवन्तु । मधुकराः मधुमपिवत् । अहं दुग्धं पपौ । यूयं जलं पास्यन्ति । ते कदापि मद्यं न पिवेत् ।

इष् धातु—इच्छा करना (To wish) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	इच्छति	इच्छसि	इच्छामि
द्विवचन	इच्छतः	इच्छथः	इच्छावः
वहुवचन	इच्छन्ति	इच्छथ	इच्छामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	इच्छतु, इच्छतात्	इच्छ, इच्छतात्	इच्छानि
द्विवचन	इच्छताम्	इच्छतम्	इच्छाव
बहुवचन	इच्छन्तु	इच्छत	इच्छाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	ऐच्छत्	ऐच्छः	ऐच्छम्
द्विवचन	ऐच्छताम्	ऐच्छतम्	ऐच्छाव
बहुवचन	ऐच्छन्	ऐच्छत	ऐच्छाम

विधिलङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	इच्छेत्	इच्छेः	इच्छेयम्
द्विवचन	इच्छेताम्	इच्छेतम्	इच्छेव
बहुवचन	इच्छेयुः	इच्छेत	इच्छेम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

एकवचन	एषिष्यति	एषिष्यसि	एषिष्यामि
द्विवचन	एषिष्यतः	एषिष्यथः	एषिष्यावः
बहुवचन	एषिष्यन्ति	एषिष्यथ	एषिष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	इयेष	इयेषिथ	इयेष
द्विवचन	ईषतुः	ईषथुः	ईषिव
बहुवचन	ईषुः	ईष	ईषिम

Exercise XXIV.

1. Translate into Sanskrit:—We wish you welfare. Let teachers always wish the welfare of the students of their classes. What did you wish? We wished his happiness. They will wish our prosperity. Good students should wish the prosperity of their teachers. Will you wish anything from me? Did they wish anything from you?

2. Correct:—न ते इदमिच्छति। गुरवः एतानि इच्छतु। भवान् एतानि इच्छ। अहं किमपि नेच्छत्। वयं नेदं ईषतुः। ते किमपि न इयेष। इदं सः एषिष्यति। शिष्याः शास्त्रार्थं इच्छेन्।

ज्ञा धातु—जानना (To know)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जानाति	जानासि	जानामि
द्विवचन	जानीतः	जानीथः	जानीवः
वहुवचन	जानन्ति	जानीथ	जानीमः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	जानातु, जानीतात्	जानीहि, जानीतात्	जानानि
द्विवचन	जानीताम्	जानीतम्	जानीव
वहुवचन	जानन्तु	जानीत	जानीम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अजानात्	अजानाः	अजानाम्
द्विवचन	अजानीताम्	अजानीतम्	अजानीव
वहुवचन	अजानन्	अजानीत	अजानीम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	जानीयात्	जानीयाः	जानीयाम्
द्विवचन	जानीयाताम्	जानीयातम्	जानीयाव
वहुवचन	जानीयुः	जानीयात	जानीयाम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

एकवचन	ज्ञास्यति	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यामि
द्विवचन	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यावः
वहुवचन	ज्ञास्यन्ति	ज्ञास्यथ	ज्ञास्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जज्ञौ	जज्ञिथ, जज्ञाथ	जज्ञौ
द्विवचन	जज्ञतुः	जज्ञथुः	जज्ञिव
बहुवचन	जज्ञुः	जज्ञ	जज्ञिम

Exercise XXV.

1. Translate into Sanskrit:—We do not know anything. The boys know something. Let them know it. We two knew it. The students also knew it. They should know their own fault. You will soon know your offence (अपराध). Will they know it ? Does he know your offence ? Did you know anything ?

2. Correct:—यूयं जानीथः। किं ते जानाति ? भवानिदं जानीहि। वयं जानीयाम्। नाहमिदमजानात्। त्वमेतद् जानीयात्। तेऽपि ज्ञास्यति। भवान्तः अज्ञेतद्। नैवाहम् जज्ञः।

प्र पूर्वक आप् धातु—प्राप्ति करना; पाना (To get)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप्नोति	प्राप्नोषि	प्राप्नोमि
द्विवचन	प्राप्नुतः	प्राप्नुथः	प्राप्नुवः
बहुवचन	प्राप्नुवन्ति	प्राप्नुथ	प्राप्नुमः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

एकवचन	प्राप्नोतु, प्राप्नुतात्	प्राप्नुहि, प्राप्नुतात्	प्राप्नवानि
द्विवचन	प्राप्नुताम्	प्राप्नुतम्	प्राप्नवाव
बहुवचन	प्राप्नुवन्तु	प्राप्नुत	प्राप्नवाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	प्राप्नोत्	प्राप्नोः	प्राप्नुवम्
द्विवचन	प्राप्नुताम्	प्राप्नुतम्	प्राप्नुव
बहुवचन	प्राप्नुवन्	प्राप्नुत	प्राप्नुम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	प्राप्नुयात्	प्राप्नुयाः	प्राप्नुयाम्
द्विवचन	प्राप्नुयाताम्	प्राप्नुयातम्	प्राप्नुयाव
वहुवचन	प्राप्नुयुः	प्राप्नुयात	प्राप्नुयाम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

एकवचन	प्राप्स्यति	प्राप्स्यसि	प्राप्स्यामि
द्विवचन	प्राप्स्यतः	प्राप्स्यथः	प्राप्स्यावः
वहुवचन	प्राप्स्यन्ति	प्राप्स्यथ	प्राप्स्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	प्राप	प्रापिथ	प्राप
द्विवचन	प्रापतुः	प्रापथुः	प्रापिव
वहुवचन	प्रापुः	प्राप	प्रापिम

Exercise XXVI.

1. Translate into Sanskrit:—I get this book from my father. Let the beggars get some food from me. We got money there. Intelligent boys should get prizes. You will also get a prize. You got *the object of our desire* (वाञ्छित फल). Shall we get the object of your desire? Does he get money from you? Did the boy get sweets from his mother?

2. Correct:—शिशुवः मोदकं प्राप्नोति। वयमेतत् प्राप्नुवानि। त्वमिदं प्राप्नोत्। अहमेतत् प्राप्नुयात्। वयमेतत् प्राप्स्यथः। ताविदं प्रापथुः।

त्यज् धातु—त्यजना; छोड़ना (To give up)।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	त्यजति	त्यजसि	त्यजामि
द्विवचन	त्यजतः	त्यजथः	त्यजावः
बहुवचन	त्यजन्ति	त्यजथ	त्यजामः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood)।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	त्यजतु, त्यजतात्	त्यज, त्यजतात्	त्यजानि
द्विवचन	त्यजताम्	त्यजतम्	त्यजाव
बहुवचन	त्यजन्तु	त्यजत	त्यजाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	अत्यजत्	अत्यजः	अत्यजम्
द्विवचन	अत्यजताम्	अत्यजतम्	अत्यजाव
बहुवचन	अत्यजन्	अत्यजत	अत्यजाम

विधिलिङ्—(Potential Mood)।

एकवचन	त्यजेत	त्यजेः	त्यजेयम्
द्विवचन	त्यजेताम्	त्यजेतम्	त्यजेव
बहुवचन	त्यजेयुः	त्यजेत	त्यजेम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense)।

एकवचन	त्यक्ष्यति	त्यक्ष्यसि	त्यक्ष्यामि
द्विवचन	त्यक्ष्यतः	त्यक्ष्यथः	त्यक्ष्यावः
बहुवचन	त्यक्ष्यन्ति	त्यक्ष्यथ	त्यक्ष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense)।

एकवचन	तत्याज	तत्यजिथ, तत्यक्थ	तत्याज, तत्यज
द्विवचन	तत्यजतुः	तत्यजथुः	तत्यजिव
बहुवचन	तत्यजुः	तत्यज	तत्यजिम

Exercise XXVII.

1. Translate into Sanskrit:—Good students give up *bad Company* (असत्संग). Let them give up their bad habit. We two gave up your bad company. You two should give up your bad habit. These boys will give up my company. The four women gave up all *hope of success* (कार्य्यसिद्धेराशा).

Will you give me up? Does a good student leave his teacher? Did he give up bad company?

2. Correct :—आवां तान् न त्यजन्ति । ते नीचा प्रवृत्तिं त्यज्ञानि । इमे नार्य्यं त्वमत्यजत् । यूयमसत्संगं त्यजेत् । नराः धनाशां न त्यक्षति । ते दुराशां तत्याज । सुशील शिष्याः गुरुं न त्यजेत् ।

हन् धातु—वध करना; मारना (To kill) ।

लट्—वर्त्तमानकाल (Present Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	हन्ति	हन्सि	हन्मि
द्विवचन	हतः	हथः	हन्वः
वहुवचन	घ्नन्ति	हथ	हन्मः

लोट्—अनुज्ञा (Imperative Mood) ।

एकवचन	हन्तु, हतात्	जहि, हतात्	हनानि
द्विवचन	हताम्	हतम्	हनाव
वहुवचन	घ्नन्तु	हत	हनाम

लङ्—अतीतकाल (Past Tense) ।

एकवचन	अहन्	अहन्	अहनम्
द्विवचन	अहताम्	अहतम्	अहन्व
वहुवचन	अघ्नन्	अहत	अहन्म

विधिलिङ्—(Potential Mood) ।

एकवचन	हन्यात्	हन्याः	हन्याम्
द्विवचन	हन्याताम्	हन्यातम्	हन्याव
वहुवचन	हन्युः	हन्यात	हन्याम

लृट्—भविष्यत्काल (Future Tense) ।

एकवचन	हनिष्यति	हनिष्यसि	हनिष्यामि
द्विवचन	हनिष्यतः	हनिष्यथः	हनिष्यावः
वहुवचन	हनिष्यन्ति	हनिष्यथ	हनिष्यामः

लिट्—अतीतकाल (Past Tense) ।

	प्रथमपुरुष	मध्यमपुरुष	उत्तमपुरुष
एकवचन	जघान	जघनिथ, जघन्थ	जघान
द्विवचन	जघ्नतुः	जघ्नथुः	जघ्निव
बहुवचन	जघ्नुः	जघ्न	जघ्निम

Exercise XXVIII.

1. Translate into Sanskrit :—Do not kill any living being. Cruel men kill animals for pleasure. This wicked boy killed the young ones of a bird. You must not kill this worm. They two will not kill this bird. Ram killed Ravan in the battle. Do you kill a bird? Who killed Indrajit? Will they kill any animal? Does the lion kill a small beast for food?

2. Carrects:—वयं किमपि जीवं न हन्ति । भवान् शत्रून जहि । न ते पक्षीणं अहन् । अहं तं न हन्यात् । ते त्वं हनिष्यति । प्रवलाः निर्व्वलान् जघ्न ।

कर्त्तृवाच्य ।

(Active Voice.)

कर्त्तृकारक में प्रथमा विभक्ति और कर्म्मकारक में द्वितीया विभक्ति हो तो उसको कर्त्तृवाच्य-प्रयोग कहते हैं। यथा, कुम्भकारः घटङ्करोति (कुम्भकार घड़ा बनाता है)। देवदत्तः ग्रामङ्गच्छति (देवदत्त गाँव को जाता है) । शिशुः पुस्तकं पठति (वालक पुस्तक पढ़ता है)। अश्वः जलं पिवति (घोड़ा जल पीता है)।

कर्त्तृवाच्य में कर्त्ता का जो वचन होता है, क्रिया में भी वही वचन होता है । अर्थात्, कर्त्ता एकवचनान्त होने से क्रिया में एकवचन होता है; कर्त्ता द्विवचनान्त होने से क्रिया में द्विवचन होता है; कर्त्ता बहुवचनान्त होने से क्रिया में बहुवचन होता है। यथा,

कुम्भकारः घटङ्करोति, कुम्भकारौ घटं कुरुतः, कुम्भकाराः घटं कुर्व्व-न्ति; शिशुः पुस्तकं पठति, शिशू पुस्तकं पठतः, शिशवः पुस्तकं पठन्ति।

कर्म्मवाच्य
(Passive Voice.)

कर्त्तृकारक में तृतीया विभक्ति और कर्म्मकारक में प्रथमा विभक्ति हो तो उसको कर्म्मवाच्य-प्रयोग कहते हैं। यथा, कुम्भकारेण घटः क्रियते* (कुम्हार के द्वारा घड़ा बनाया जाता है), शिष्येण गुरुः पृच्छ्यते † (शिष्य से गुरु पूछे जाते हैं, अर्थात् शिष्य गुरु से पूछता है), मया चन्द्रः दृश्यते (मुझसे चन्द्रमा देखा जाता है, अर्थात् मैं चन्द्रमा को देखता हूँ) ।

कर्त्तृवाच्य में जैसा कर्त्ता के वचन के अनुसार क्रिया का वचन होता है, कर्म्मवाच्य के प्रयोग में वैसा नहीं होता । कर्म्मवाच्य में कर्म का जो पुरुष और जो वचन होता है, क्रिया में भी वही पुरुष और वही वचन होता है। यथा, कुम्भकारेण घटः क्रियते, कुम्भकारेण घटौ क्रियेते, कुम्भकारेण घटाः क्रियन्ते; शिष्येण गुरुः पृच्छ्यते, शिष्येण गुरू पृच्छ्येते, शिष्येण गुरवः पृच्छ्यन्ते । तेन त्वं पृच्छ्यसे, तेन युवां पृच्छ्येथे, तेन यूयं पृच्छ्यध्वे इत्यादि क्रम से।

भाववाच्य (Impersonal Passive Voice) ।

जहाँ कर्त्तृकारक में तृतीया विभक्ति होती है और कर्म्मपद नहीं रहता उसे भाववाच्य-प्रयोग कहते हैं सदा अकर्मक धातु से ही होता है। भाववाच्य की क्रिया कर्म्मवाच्य की क्रिया के सदृश है, परन्तु सदा प्रथम पुरुष के एकवचन में होती है।

---

* कर्म्मवाच्य और भाववाच्य में धातु आत्मनेपदी हो जाता है और लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, इन चार विभक्तियों में धातु के उत्तर "य" का आगम होता है।

† कर्म्मवाच्य और भाववाच्य में "य" का आगम होने से प्रच्छ् धातु के स्थान में पृच्छ्, ग्रह के स्थान में गृह्, यज् के स्थान में इज्, वह् के स्थान में उह्, तथा वद् के स्थान में उद् होता है और दा, धा, मा, गा (गै), हा; था और पा (पानार्थक) धातुओं के "आ" के स्थान में ई होता है।

यथा, मया स्थीयते (मैं स्थित हूँ), आवाभ्यां स्थीयते (हम दोनों स्थित हैं), अस्माभिः स्थीयते (हम सब स्थित हैं)। त्वया स्थीयते, युवाभ्यां स्थीयते, युष्माभिः स्थीयते इत्यादि।

णिजन्त धातु।

(Causative Verbs.)

प्रेरण—अर्थ में धातु के उत्तर "णिच्" प्रत्यय होता है। "णिच्" का केवल "इ" रहता है। णिजन्त धातु प्रायः उभयपदी होते हैं। "णिच्" प्रत्यय के योग से धातुओं के रूप ऐसे होते हैं:—पत् + णिच् = पाति; चल् + णिच् = चालि; वह् + णिच् = वाहि; जन् + णिच् = जनि; दृश् + णिच् = दर्शि; गम् + णिच् = गमि; स्था + णिच् = स्थापि; ज्ञा + णिच् = ज्ञापि; पा + णिच् = पायि, पालि; श्रु + णिच् = श्रावि; कृ + णिच् = कारि; हृ + णिच् = हारि; हन् + णिच् = घाति इत्यादि। णिच् प्रत्यय से जो धातु बनते हैं वे स्वतन्त्र धातु में गिने जाते हैं। णिजन्त धातुओं के रूप भज् धातु के तुल्य होते हैं। यथा, कृ + णिच् = कारि; कारयति, कारयतः कारयन्ति इत्यादि। करोति = करता है (He does), कारयति = कराता है (He causes or makes to do)।

सन्नन्त धातु।

(Desiderative Verbs.)

इच्छा-अर्थ में धातु के उत्तर "सन्" प्रत्यय होता है। "सन्" प्रत्यय का केवल "स" रहता है। "सन्" प्रत्यय से धातु के आकार में परिवर्त्तन होता है। यथा, पा + सन् = पिपास; स्था + सन्=तिष्ठास; ज्ञा+सन्=जिज्ञास; दा + सन् = दिदित्स; रुद् + सन् = रुरुदिष; ग्रह् + सन् = जिघृक्ष; प्रच्छ + सन् = पिपृच्छिष; गम् + सन् = जिगमिष; कृ + सन् = चिकीर्ष; दृश + सन् = दिदृक्ष; श्रु+सन् = शुश्रुष; हन् + सन् = जिघांस इत्यादि।

सन् प्रत्यय से बना हुआ धातु स्वतन्त्र धातुओं में गिना जाता है; परन्तु सन्नन्त धातु मूल धातु के अनुसार परस्मैपदी, आत्मनेपदी अथवा उभयपदी होते हैं। यथा, परस्मैपदी गम्+सन्= जिगमिष धातु, लट्—जिगमिषति, जिगमिषतः, जिगमिषन्ति इत्यादि। गच्छति=जाता है (He goes) जिगमिषति= जाने के लिये इच्छा करता है (He wishes to go)।

यङन्त धातु।

(Frequentative Verbs.)

पौनःपुन्य (वारवार) और अतिशय अर्थ में किसी किसी धातु के उत्तर अर्थात् प्रायः एक स्वरवाले तथा हलादि धातुओं से "यङ्" प्रत्यय होता है। "यङ्" का केवल "य" रहता है। यङन्त धातु आत्मनेपदी होते हैं। यथा, गम्+यङ्=जङ्गम्यते (वारवार जाता है), रुद्+यङ्=रोरुद्यते (वारवार रोता है), कृ+यङ्=चेक्रीयते (वारवार करता है) इत्यादि।

कृदन्त, कृत्-प्रत्यय।

(Verbal Affixes.)

धातु के उत्तर तुम् (तुमुन्), क्त्वा आदि जो प्रत्यय होते हैं उन्हीं को कृत्-प्रत्यय कहते हैं। कृत्-प्रत्यय से जो शब्द बनते हैं, वे प्रायः क्रिया के तुल्य अर्थ प्रकाश करते हैं। कृत्-प्रत्यय अनेक हैं, उनमें से कईएक का विषय संक्षेप में लिखा जाता है—

तुम (तुमुन्)।

(Infinitive Suffix.)

निमित्त अर्थ में धातु के उत्तर तुम् (तुमुन्), प्रत्यय होता है। यथा, दा+तुम्=दातुम् (देने के निमित्त), स्था+तुम्= स्थातुम् (रहने के निमित्त), पा+तुम्=पातुम् (पीने के निमित्त), हन्+तुम्=हन्तुम् (वध करने के लिए), गम्+तुम्=गन्तुम् (जाने के निमित्त), ग्रह्+तुम्=ग्रहीतुम् (ग्रहण करने के निमित्त), कृ+तुम्=कर्त्तुम् (करने के लिये), वच्+ तुम्=वक्तुम् अथवा ब्रू+तुम्=वक्तुम् (कहने के लिये), जि+

तुम्=जेतुम् (जय करने के निमित्त), दृश्+तुम्=द्रष्टुम् (देखने के लिये), चिन्ति+तुम्=चिन्तयितुम् (चिन्ता करने के लिये), भुज्+तुम्=भोक्तुम् (खाने के निमित्त) इत्यादि।

(त्व, क्त्वा)।

अनंतर अर्थ में धातु के उत्तर त्वा प्रत्यय होता है। यथा, कृ+त्वा=कृत्वा (करके, करणानन्तर), जि+त्वा=जित्वा (जीतकर, जय के अनन्तर), गम्+त्वा=गत्वा (जाकर, गमनानन्तर), भुज्+त्वा भुक्त्वा (खाकर, भोजनानन्तर), दृश्+त्वा=दृष्ट्वा (देखकर, दर्शनानन्तर), दा+त्वा=दत्त्वा (देकर, दानानन्तर), पा+त्वा=पीत्वा (पीकर, पानानन्तर); चिन्ति+त्वा=चिन्तयित्वा (चिन्ता करके, चिन्तनानन्तर), वच्+त्वा अथवा ब्रू+त्वा=उक्त्वा (कहकर, कथनानन्तर), ग्रह्+त्वा=गृहीत्वा (लेकर ग्रहणानन्तर) इत्यादि।

यप् (ल्यप्)

यदि धातु के पूर्व्व में उपसर्ग रहे, तो अनन्तर अर्थ में धातु के उत्तर यप् (ल्यप) प्रत्यय में बदल जाता है। यप् (ल्यप्) प्रत्यय का केवल "य" रह जाता है। यथा, आ+दा+यप्=आदाय (ग्रहण करके, ग्रहणानन्तर), आ+गम्+यप्=आगम्य, आगत्य (आकर, आगमनानन्तर), आ+हन्+यप्=आहत्य (मारकर, आघातानन्तर), वि+जि+यप्=विजित्य (जीतकर, जयानन्तर), सं+स्मृ+यप्=संस्मृत्य (स्मरण करके, स्मरणानन्तर), प्र+नम्+यप्=प्रणम्य, प्रणत्य (प्रणाम करके, प्रणामानन्तर)।

तुम्, त्वा और यप् प्रत्ययों से बने हुए शब्द अव्यय हैं; इसलिये इनके उत्तर विभक्ति नहीं होती। वे असमापिका क्रिया हैं।

तव्य, अनीय, य।

भविष्यत्काल में धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य और भाववाच्य में तव्य, अनीय और य, ये तीन प्रत्यय होते हैं। इन प्रत्ययों से

जो शब्द बनते हैं उनके रूप पुलिङ्ग में गज, स्त्रीलिङ्ग में लता, और क्लीवलिङ्ग में फल शब्द के सदृश होते हैं। स्वरान्त धातु से यत् और हलंत धातु से ण्यत् प्रत्यय होता है और दोनों का य भाग अवशिष्ट रहता है, किन्तु य स्वतंत्र प्रत्यय नहीं है।

'तव्य,' 'अनीय,' 'य' प्रत्ययों के योग से कहीं कहीं धातु का आकार ज्यों का त्यों रहता है और कहीं कहीं कुछ बदल जाता है। यथा, दा धातु—तव्य, दातव्यम्; अनीय, दानीयम्; य, देयम्। जि—जेतव्यम्, जयनीयम्, जेयम्। शी—शयितव्यम्, शयनीयम्, शेयम्। श्रु—श्रोतव्यम्, श्रवणीयम्, श्रव्यम्। भू—भवितव्यम्, भवनीयम्, भव्यम्। कृ—कर्त्तव्यम्, करणीयम्, कार्य्यम्। ग्रह्—ग्रहीतव्यम्, ग्रहणीयम्, ग्राह्यम्। गम्—गन्तव्यम्, गमनीयम्, गम्यम्। दृश—द्रष्टव्यम्, दर्शनीयम्, दृश्यम्। वच—वक्तव्यम्, वचनीयम्, वाच्यम्। भुज्—भोक्तव्यम्, भोजनीयम्, भोज्यम्। चिन्ति—चिन्तयितव्यम्, चिन्तनीयम्, चिन्त्यम्। सह—सोढव्यम्, सहनीयम्, सह्यम्।

कर्म्मवाच्य में तव्य, अनीय और य प्रत्यय करने से जो शब्द बनते हैं, वे कर्म्म के विशेषण होते हैं। इसलिये कर्म्मपद में जो लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं वे ही लिङ्ग, विभक्ति और वचन उन शब्दों में भी होते हैं। यथा, पठ् धातु—अनीय, मया ग्रन्थः पठनीयः; मया पत्रिका पठनीया; मया पुस्तकं पठनीयम्। पठनीयः ग्रन्थः, पठनीयेन ग्रन्थेन, पठनीयाय ग्रन्थाय, पठनीयात् ग्रन्थात्, पठनीयस्य, ग्रन्थस्य, पठनीये ग्रन्थे, पठनीययोः ग्रन्थयोः, पठनीयेषु ग्रन्थेषु।

भाववाच्य में तव्य, अनीय और य प्रत्यय करने से जो शब्द बनते हैं, उनके रूप अकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्द की प्रथमा विभक्ति के एकवचन के तुल्य होते हैं। यथा, स्था धातु—तव्य; मया स्थातव्यम् (मैं रहूँगा); क्रीड धातु—तव्य, त्वया क्रीडितव्यम् (तुम खेलोगे); लज्ज् धातु—तव्य; तेन लज्जितव्यम् (वह लज्जित होगा)।

(Affixes forming Sanskrit Present Participles.)

शतृ * और शानच्।

कर्त्तृवाच्य में परस्मैपदी धातु के उत्तर वर्त्तमानकाल में शतृ और आत्मनेपदी धातु के उत्तर वर्त्तमानकाल में शानच् प्रत्यय होता है। "शतृ" का "अत्" और "शानच" का "आन" रहता है। यथा, गम्+शतृ=गच्छत्, स्था+शतृ=तिष्ठत्, दृश्+शतृ=पश्यत्, ज्ञा+शतृ=जानत्, ग्रह्+शतृ=गृह्णत्, कृ+शतृ=कुर्व्वत्, दा+शतृ=ददत्, कृ+शानच्=कुर्व्वाणः, दा+शानच्=ददानः, ब्रू+शानच्=ब्रुवाणः।

कर्त्तृवाच्य में उभयपदी धातु के उत्तर वर्त्तमानकाल में शतृ और शानच् ये दोनों प्रत्यय होते हैं। यथा, कृ+शतृ=कुर्व्वत्, कृ+शानच्=कुर्व्वाणः।

कर्म्मवाच्य में धातु आत्मनेपदी होते हैं, इसलिए कर्म्मवाच्य में धातु के उत्तर वर्त्तमानकाल में केवल शानच् प्रत्यय होता है; और "शानच्" के स्थान में "मान" होता है। यथा, दा+शानच् =दीयमानः, पा+शानच्=पीयमानः, दृश्+शानच्=दृश्यमानः, हन्+शानच्=हन्यमानः।

---

* शतृ प्रत्यय में धातु का रूप लट् की अन्ति विभक्ति के रूप के तुल्य होता है, केवल "अन्ति" के "न्ति" स्थान में "त्" होता है, इतना ही प्रभेद है। तथा, गम्+अन्ति=गच्छन्ति, गम्+शतृ=गच्छत्। यदि पूर्व्वकालिक (अप्रधान) तथा उत्तरकालिक (प्रधान) क्रियाओं के कार्य्य एक ही समय में सम्पन्न होते हों तो पूर्व्वकालिक क्रिया शतृ अथवा शानच् प्रत्यय से बनती है। यथा, स नृत्यन् आयाति (वह नाचता हुआ आता है। यहाँ "नाचना" और "आना" इन दोनों क्रियाओं के कार्य्य एक ही समय में सम्पन्न होते हैं। परन्तु यदि पूर्व्वकालिक क्रिया का कार्य्य उत्तरकालिक क्रिया के कार्य्य के पहले सम्पन्न हो तो पूर्व्वकालिक क्रिया क्त्व का ल्यप् प्रत्यय से बनती है। यथा, स गृहं गत्वा मामपश्यत् (घर जाकर उसने मुझे

शतृ और शानच् प्रत्यय से बने हुए शब्द विशेषण होते हैं, इसलिए ये विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होते हैं। यथा, पश्यन् पुरुषः, पश्यन्तं पुरुषम्, पश्यता पुरुषेण; पश्यन्तौ पुरुषौ, पश्यन्तः पुरुषाः; गच्छन्ती स्त्री, गच्छन्तीं स्त्रियम्, गच्छन्त्या स्त्रियाः; पतत् फलम्, पतता फलेन, पतताां फलानाम् इत्यादि।

(क्तवतु तवत्)।

अतीतकाल में धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में क्तवतु प्रत्यय होता है। क्तवतु प्रत्यय का तवत् रहता है। क्तवतु प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होता है वह विशेषण होता है; इसलिए उसके विशेष्य का जो लिङ्ग, विभक्ति या वचन होता है वही लिङ्ग, विभक्ति या वचन उन शब्दों में भी होता है। इन शब्दों के रूप पुंलिङ्ग, और क्लीबलिङ्ग में श्रीमत् शब्द के तुल्य और स्त्रीलिङ्ग में नदी शब्द के तुल्य होते हैं। यथा, जि धातु+क्तवतु=जितवत्; पुंलिङ्ग, जितवान्, जितवन्तौ, जितवन्तः; क्लीबलिङ्ग, जितवत्, जितवती, जितवन्ति; स्त्रीलिङ्ग, जितवती, जितवत्यौ जितवत्यः। रामो रावणं जितवान् (राम ने रावण को

देखा अर्थात् वह पहले घर गया तब उसने मुझे देखा)। यहाँ जाने का कार्य्य देखने के कार्य्य से पहले सम्पन्न हुआ, इसलिए गम् धातु के उत्तर शतृ न होकर क्त्वा हुआ है। अँगरेज़ी "*Present Participle*" का संस्कृत अनुवाद प्रायः शतृ और शानच् प्रत्ययान्त पद से किया जाता है, किन्तु कभी कभी क्त्वा और ल्यप् प्रत्ययान्त पद से भी करना होता है। यथा, He comes dancing—स नृत्यन् आयाति, See him running—धावन्तं (धावमानं वा) तं पश्य, Going there he said—तत्र गत्वा स उवाच।

किसी किसी धातु के उत्तर "शानच्" के "आन" के स्थान में "मान" होता है। यथा, सेव्+शानच्=सेवमानः, विद्+शानच्=विद्यमानः, मृ+शानच्=म्रियमाणः इत्यादि। आस् धातु के उत्तर "शानच्" के "आन" के स्थान में "ईन" होता है। यथा, आस्+शानच्=आसीनः।

जीता)। श्रु धातु, अहं शास्त्रं श्रुतवान् (मैंने शास्त्र सुना)। कृ धातु, स किं कृतवान् (उसने क्या किया)। इसी प्रकार, स्था धातु, स्थितवान्; दा धातु दत्तवान्; गम् धातु, गतवान्; हन् धातु, हतवान्; ग्रह् धातु, गृहीतवान्; दृश् धातु, दृष्टवान्; ज्ञा धातु, ज्ञातवान्; वच् धातु, अथवा ब्रू धातु उक्तवान्; भुज् धातु, भुक्तवान्; चिन्ति धातु, चिन्तितवान्।

क्त (त)।

अतीतकाल में धातु के उत्तर कर्म्मवाच्य में क्त प्रत्यय होता है। क्त प्रत्यय का त रहता है। जि धातु+क्त=जितः; कृ धातु+क्त=कृतः; ग्रह् धातु+क्त=गृहीतः; दा धातु+क्त=दत्तः; दृश् धातु+क्त=दृष्टः; ज्ञा धातु+क्त=ज्ञातः; श्रु धातु+क्त=श्रुतः; वच् धातु+क्त, अथवा ब्रू धातु+क्त=उक्तः।

कर्म्मवाच्य में क्त प्रत्यय करने पर जो शब्द सिद्ध होता है वह कर्म्म का विशेषण होता है; इसलिये कर्म्म के जो लिङ्गादि होते हैं वे ही लिङ्गादि उन शब्दों के भी होते हैं। क्त प्रत्यय करने से जो शब्द बनते हैं उनके रूप पुंलिङ्ग में गज शब्द के सदृश, क्लीवलिङ्ग में फल शब्द के समान, स्त्रीलिङ्ग में लता शब्द के तुल्य होते हैं। यथा, पठ् धातु+क्त=पठित, तेन ग्रन्थः पठितः (उसने ग्रन्थ पढ़ा)। तेन पत्रिका पठिता (उसने पत्रिका पढ़ी)। तेन पुस्तकं पठितम् (उसने पुस्तक पढ़ी)।

अकर्म्मक धातु के उत्तर और गम, रुह् आदि कईएक सकर्म्मक धातुओं के उत्तर कर्तृवाच्य में भी क्त प्रत्यय होता है। कर्तृवाच्य में क्त प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होता है वह कर्त्ता का विशेषण होता है। यथा, मृ धातु, पुरुषोमृतः (पुरुष मर गया), स्त्री मृता (स्त्री मर गई); अपत्यं मृतम् (सन्तान मर गयी)। भू धातु, भूतः; स्था धातु, स्थितः; भी धातु, भीतः; जागृ धातु, जागरितः; गम् धातु, गतः; स गृहं गतः (वह घर गया); रुह् धातु, रूढः; वानरो वृक्षमारूढः (वानर वृक्ष पर चढ़ गया)।

अकर्म्मक और कर्म की अविवक्षा से जो सकर्म्मक भी अकर्म्मक हैं दोनों धातुओं के उत्तर भाववाच्य में भी क्त प्रत्यय होता है। भाववाच्य में क्त प्रत्यय करने से जो शब्द सिद्ध होते हैं, उनके रूप सदा क्लीबलिङ्ग की प्रथमा विभक्ति के एकवचन के सदृश होते हैं। यथा, मया जितम् (मैंने जीता); तेन कुत्र स्थितम् (वह कहाँ रहा); त्वया दृष्टम् (तुमने देखा); शिशुना रुदितम् (लड़के ने रोदन किया); मया भुक्तम् (मैंने खाया); तेन जागरितम् (वह जागा); चौरेण पलायितम् (चोर भागा)।

क्ति (क्तिन्)।

भाववाच्य में धातु के उत्तर क्ति प्रत्यय होता है। "क्ति" प्रत्यय का "ति" रहता है। क्ति प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं और इनके रूप मति शब्द के सदृश होते हैं। यथा, ख्या + क्ति = ख्यातिः, स्था + क्ति = स्थितिः, नी + क्ति = नीतिः, प्री + क्ति = प्रीतिः, भी + क्ति = भीतिः श्रु + क्ति = श्रुतिः, कृ + क्ति = कृतिः, स्मृ + क्ति = स्मृतिः, शक् + क्ति = शक्तिः, मुच् + क्ति = मुक्तिः, वच् अथवा ब्रू + क्ति = उक्तिः, भज् + क्ति = भक्तिः, युज् + क्ति = युक्तिः, सृज् + क्ति = सृष्टिः बुध् + क्ति = बुद्धिः, मन् + क्ति = मतिः, स्वप् + क्ति = सुप्तिः, गम् + क्ति = गतिः, शम् + क्ति = शान्तिः, दृश् + क्ति = दृष्टिः, वृष् + क्ति = वृष्टिः।

ण्वुल् अथवा णक।

कर्त्तृवाच्य में धातु के उत्तर णक प्रत्यय होता है। "णक" तथा 'ण्वुल" का "अक" रहता है। यथा, नी + णक = नायकः; ऐसे ही—कृ, कारकः; स्मृ, स्मारकः; नश्, नाशकः; पच्, पाचकः; मुच्, मोचकः; हन्, घातकः; दा, दायकः; गा (गै), गायकः; ग्रह्, ग्राहकः; पू, पावकः; जनि, जनकः; पालि, पालकः।

तृच् (तृन्)

कर्त्तृवाच्य में धातु के उत्तर तृच् (तृन्) प्रत्यय होता है। "तृच् (तृन)" का "तृ" रहता है। यथा, दा + तृच् = दातृ—

दाता; ऐसे—मा, मातृ—माता; जि, जेतृ—जेता; नी, नेतृ—नेता; श्रु, श्रोतृ—श्रोता; कृ, कर्त्तृ—कर्त्ता; हृ, हर्त्तृ—हर्त्ता; धा, धातृ—धाता; हन्, हन्तृ—हन्ता; गम्, गन्तृ—गन्ता ।

णिन् (णिनि) ।

कर्त्तृवाच्य में धातु के उत्तर णिन् प्रत्यय होता है। "णिन्" का "इन्" रहता है। यथा, गम् + णिन्=गामिन्—गामी; ऐसे—दा, दायिन्—दायी; या, यायिन्—यायी; स्था, स्थायिन्—स्थायी; कृ, कारिन्—कारी; हन्, घातिन्—घाती; वद्, वादिन्—वादी ।

ल्युट् तथा अन ।

भाववाच्य में धातु के उत्तर अन प्रत्यय होता है। ल्युट् का यु रहता है उसको अन होता है और यह अन प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिङ्ग होता है। यथा, गम् + अन = गमनम्; ऐसे—भुज्, भोजनम्; पत्, पतनम्; भक्ष्, भक्षणम्; तृप्, तर्पणम्; पा, पानम्; दा, दानम्; गा (गै), गानम्; ज्ञा, ज्ञानम्; स्ना, स्नानम्; श्रु, श्रवणम्; कृ, करणम्; मृ, मरणम्; स्मृ, स्मरणम्; दृश्, दर्शनम्; रुद्, रोदनम् ।

किसी किसी धातु के उत्तर कर्त्तृवाच्य में भी अन प्रत्यय होता है या ल्यु इसका यु शेष रहता है उसको अन होता है पाणिनि के अनुसार। और यह अन प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिङ्ग नहीं होता। यथा, नन्द्, नन्दनः; शोभ, शोभनः; सह्, सहनः; तप्, तपनः; क्रुध्, क्रोधनः; मंडि, मंडनः; दह्, दहनः ।

अनट् तथा ल्यु ।

करण तथा अधिकरण अर्थ में धातु के उत्तर अनट् प्रत्यय होता है। "अनट्" का "अन" रहता है। अनट प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिङ्ग होते हैं। यथा, नी + अनट् = नयनम्; ऐसे ही—या, यानम्; भूष, भूषणम्; शी, शयनम्; भू, भवनम्; आस्, आसनम् ।

घञ्, अल

कर्त्तृवाच्य को छोड़कर दूसरे वाच्यों में धातु के उत्तर घञ् और अल् प्रत्यय होता है। "घञ्" और "अल्" का "अ" रहता है।

घञ् और अल् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं; केवल भय, पद, ये दो अल प्रत्ययान्त शब्द क्लीबलिङ्ग हैं; परन्तु पाणिनि के मत से यह दोनों यथाक्रम अच् और घ प्रत्ययान्त हैं । यथा, पच् + घञ् = पाकः; ऐसे ही—त्यज, त्यागः ; नश्, नाशः ; शुच्, शोकः; भुज्, भोगः; वस्, वासः ; दह्, दाहः ; हृ, हारः । जि + अल् = जयः; ऐसे ही—चि, चयः ; भी, भयम्; पाणिनि के मत से यहाँ तीनों में अल ही प्रत्यय होता है और रु, स्तु, भू, इत्यादि उकारान्त धातुओं से अप् प्रत्यय होता है । रु, रवः ; स्तु, स्तवः ; भू, भवः; क्रुध्, क्रोधः ; रुप, रोपः; कुप्, कोपः; बुध्, बोधः ; भिद, भेदः; हृष्, हर्पः ।

समास ।
(Compounds.)

विभक्तिहीन शब्द को नाम कहते हैं । वही नाम विभक्तियुक्त होने से पद कहा जाता है । वृक्ष, गिरि, पशु, भ्रातृ आदि शब्दों में विभक्ति नहीं है, इस अवस्था में इनको नाम कहते हैं । वृक्षः, वृक्षौ, वृक्षाः ; गिरिः, गिरी, गिरयः ; पशुः, पशू, पशवः ; भ्राता, भ्रातरौ, भ्रातरः ; ये सब शब्द विभक्तियुक्त हैं, इसलिये इन शब्दों को नाम न कहकर पद कहते हैं ।

प्रत्येक पद के अन्त में एक एक विभक्ति रहती है । कभी कभी दो तीन पद इकट्ठे हो जाते हैं तो सभी पदों की विभक्ति का लोप हो जाता है और ये सब विभक्तिहीन पद एकत्रित होकर एक शब्द बन जाता है; पश्चात् उसमें नयी विभक्ति दी जाती है। यथा, सुशीलबालकः, पहले सुशीलः बालकः ऐसा रूप था; परन्तु दो पदों को योग करने से सुशील बालकः हुआ । योग होने के कारण सुशीलः और बालकः, इन दोनों पदों की प्रथमा विभक्ति का लोप होने से सुशील बालक ऐसा विभक्तिहीन शब्द हुआ । तब उसमें प्रथमा विभक्ति का योग होने से सुशीलबालकः ऐसा पद हुआ * ।

* एकपदीभावः समासः । लुक् विभक्तः ।

इसी प्रकार दो वा अनेक पदों के एकपदीभाव को अर्थात एकपद होजाने को समास* कहते हैं।

समास छः प्रकार के हैं। कर्म्मधारय, तत्पुरुप, द्वन्द्व, वहुव्रीहि, द्विगु और अव्ययीभाव।

कर्म्मधारय।
(Appositional Compounds.)

विशेषण और विशेष्य पदों का जो समास होता है, उसका नाम कर्म्मधारय है। यथा, उन्नतः तरुः, उन्नततरु; नीलम् उत्पलम्, नीलोत्पलम्; गभीरः कूपः, गभीरकूपः; सुन्दरः पुरुपः, सुन्दरपुरुषः।

यदि विशेषण और विशेष्य स्त्रीलिङ्ग हों तो विशेपण शब्द पुंलिङ्ग के समान हो जाता है, अर्थात् आकार, ईकार आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द के जो चिह्न हैं वे नहीं रहते। यथा, दीर्घा यष्टिः, दीर्घयष्टिः; जीर्णा तरिः, जीर्णतरिः; सती प्रवृत्तिः, सत्प्रवृत्तिः।

जिस कर्म्मधारय समास में मध्यस्थित पद का लोप होता है, उसे मध्यपदलोपी कर्म्मधारय समास कहते हैं। यथा, शाल्मलीनामा तरुः, शाल्मलीतरुः; काष्ठनिर्म्मितम् आसनम्, काष्ठासनम्; कैलासनामको गिरिः कैलासगिरिः इत्यादि।

तत्पुरुप।
(Determinative Compounds.)

पूर्व्वपद द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी, इनमें से किसी विभक्तियुक्त पूर्व्वपद हो, और परपद प्रथमा विभक्तियुक्त हो तो ऐसे दो पदों का जो समास होता है उसको तत्पुरुष समास कहते हैं।

पूर्व्वपद द्वितीया विभक्तियुक्त होने से उसको द्वितीया-तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा, गृहं गतः, गृहगतः; सुखं प्राप्तः, सुखप्राप्तः; कृष्णम् श्रितः, कृष्णश्रितः; विस्मयम् आपन्नः, विस्मयापन्नः।

---

* समासः प्रातिपदिकानि।

पूर्व्वपद तृतीया विभक्तियुक्त होने से, उसको तृतीया तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा, लोभेन जितः, लोभजितः; शीतेन ऋतः, शीतार्त्तः; धनेन हीनः, धनहीनः; जलेन सिक्तः, जलसिक्तः; अग्निना दग्धः, अग्निदग्धः; पित्रा दत्तम्, पितृदत्तम्।

पूर्व्वपद चतुर्थी विभक्तियुक्त होने से, उसको चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा, धनाय लोभः, धनलोभः; यूपाय दारुः, यूपदारुः; गवे हितम्, गोहितम्।

पूर्व्वपद पञ्चमी विभक्तियुक्त होने से, उसको पञ्चमी तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा, व्याघ्रात् भयम्, व्याघ्रभयम्; सर्पात् भीतः, सर्पभीतः; वृक्षात् पतितः वृक्षपतितः; राज्यात् च्युतः, राज्यच्युतः; स्वर्गात् भ्रष्टः, स्वर्गभ्रष्टः; बन्धनात् मुक्तः, बन्धनमुक्तः; विदेशात् आगतः, विदेशागतः।

पूर्व्वपद षष्ठी विभक्तियुक्त होने से, उसको षष्ठी तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा, वृक्षस्य शाखा, वृक्षशाखा; सुखस्य भोगः, सुखभोगः; अर्थस्य नाशः, अर्थनाशः; अग्नेः शिखा, अग्निशिखा; पयसः पानम्, पयःपानम्; राज्ञः पुत्रः, राजपुत्रः; मम गृहम्, मद्गृहम्; नद्याः जलम्, नदीजलम्।

पूर्व्वपद सप्तमी विभक्तियुक्त होने से उसको सप्तमी तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा, जले मग्नः, जलमग्नः शास्त्रे प्रवीणः, शास्त्रप्रवीणः; कविषु श्रेष्ठः, कविश्रेष्ठः; पुरुषेषु उत्तमः, पुरुषोत्तमः; क्रीडायां कुशलः, क्रीडाकुशलः।

सुबन्त पद के साथ नञ् (न=अ, अन् ❀) का जो समास होता है उसे नञ्-तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा, न ब्राह्मणः, अब्राह्मणः; न प्रियः, अप्रियः; न विकृतः, अविकृतः; न सिद्धः, असिद्धः; न उपलम्भः, अनुपलम्भः।

❀ आदि में स्वरयुक्त सुबन्त पद परे रहे तो "नञ्" के स्थान में "अन्" होता है ? और सब जगहों में "अ" होता है।

धातु के साथ उपपद† का जो समास होता है उसको उपपद-तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा, कुम्भं करोति यः, सः कुम्भकारः; तन्तून् वयति यः, सः तन्तुवायः; जले चरति यः, सः जलचरः; शत्रुं हन्तीति, शत्रुघ्नः; जलं ददातीति, जलदः; धर्म्मं जानाति यः, सः धर्म्मज्ञः; अप्सु जातं यत्, तत् अब्जम्; पङ्कात् जातं यत्, तत् पङ्कजम्; पारं गच्छतीति, पारगः इत्यादि।

द्वन्द्व समास।

(Copulative Compounds.)

परस्पर विशेष्य विशेषण नहीं हो इस प्रकार के प्रथमा-विभक्तियुक्त दो अथवा अनेक पदों का जो समास होता है उसका नाम द्वन्द्व समास है। यदि एकवचनान्त दो पदों में द्वन्द्व समास हो तो अन्त का पद द्विवचनान्त होता है और बहुपद समास में बहुवचनान्त होता है। अन्त के शब्द का जो लिङ्ग होता है, द्वन्द्व समास करने से भी वही लिङ्ग रहता है। यथा, रामश्च लक्ष्मणश्च तौ, रामलक्ष्मणौ; भीमश्च अर्ज्जुनश्च तौ, भीमार्ज्जुनौ; नदी च पर्वतश्च तौ, नदीपर्व्वतौ; फलञ्च पुष्पञ्च ते, फलपुष्पे; कन्दश्च मूलञ्च फलञ्च तानि, कन्दमूलफलानि; रूपञ्च रसश्च गन्धश्च स्पर्शश्च शब्दश्च ते, रूपरसगन्धस्पर्शशब्दाः। इसको इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं।

कभी-कभी द्वन्द्व समास करने से अन्त का शब्द कोई लिङ्ग हो पर समस्त शब्द (अर्थात् समासनिष्पन्न शब्द) क्लीबलिङ्ग और एकवचनान्त हो जाता है। इसको समाहार द्वन्द्व कहते हैं।

---

† जिन सुबन्त पदों के परवर्त्ती धातु के उत्तर कृत् प्रत्यय होता है उनको उपपद कहते हैं। कुम्भकारः, यहाँ कुम्भम् इस उपपद के साथ कृ धातु का समास होकर कुम्भकृ हुआ; तब कुम्भकृ+अण्=कुम्भकारः हुआ है; ऐसे ही सब स्थानों में।

यथा, हंसाश्च कोकिलाश्च, हंसकोकिलम्*; पाणी च पादौ च, पाणिपादम्; गावश्च महिषाश्च, गोमहिषम्।

बहुव्रीहि समास।

(Relative or Attributive Compounds.)

जिन पदों का समास किया जाय उन पदों का जो अर्थ है उनका बोध न होकर यदि किसी दूसरी वस्तु या व्यक्ति का बोध हो तो उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। समास करने के समय बहुव्रीहि में यद् शब्द का एक पद अन्त में कहा जाता है। यथा, दीर्घौ बाहू यस्य, सः दीर्घबाहुः (पुरुषः), इस स्थल में दीर्घ दो बाहु न समझ कर दीर्घबाहुविशिष्ट पुरुष का बोध होता है; निर्म्मलं जलं यस्याः, सा निर्म्मलजला (नदी), यहाँ निर्मल जल न समझ कर निर्मल जल सहित नदी का बोध होता है।

यदि दो स्त्रीलिङ्ग पद में बहुव्रीहि समास हो तो पूर्व्वपद प्रायः पुंलिङ्ग हो जाता है अर्थात् स्त्रीलिङ्ग का चिह्न आकार ईकारादि नहीं रहता। यथा, निर्म्मला मतिर्यस्य, स निर्म्मलमतिः; मृद्वी गतिर्यस्य, स मृदुगतिः।

बहुव्रीहि समास करने से जो पद सिद्ध होता है वह प्रायः विशेषण होता है, इसलिए विशेष्य के लिङ्ग, विभक्ति और वचन को प्राप्त होता है।

द्विगु समास।

(Numeral Compounds.)

जिसमें पूर्व्वपद संख्यावाचक शब्द हो और जिसमें समाहार

---

* बहुवचनान्त पशुपक्षिक्षुद्रजन्तुवाचक तथा फलतृणतरुवाचक शब्दों का विकल्प से समाहार होता है। यथा, हंसाश्च कोकिलाश्च, हंसकोकिलम्, पक्षे हंसकोकिलाः; गावश्च महिषाश्च गोमहिषम्, पक्षे गोमहिषाः। पश्वादि और फलादिवाचक शब्द एकवचनान्त अथवा द्विवचनान्त होने से समाहार नहीं होता। यथा, हंसश्च बकश्च तौ हंसबकौ; हंसबकम् नहीं होता।

रहे अर्थात् एक ही समय अनेक वस्तुओं का बोध हो उसको समाहार द्विगु कहते हैं। समाहार भिन्न अन्य अर्थ में भी द्विगु समास होता है। समाहार द्विगु करने से, किसी किसी स्थल में स्त्रीलिङ्ग और ई हो जाता है, किसी किसी स्थल में क्लीवलिङ्ग हो जाता है। यथा 'त्रयाणां लोकानां समाहारः, त्रिलोकी'; इस स्थल में स्त्रीलिङ्ग और ई हुआ है और त्रिलोकी कहने से एक समय में तीन लोकों का बोध होता है। त्रयाणां भुवनानां समाहारः, त्रिभुवनम्।

अव्ययीभाव समास।
(Indeclinable Compounds.)

सामीप्य, वीप्सा, अभाव, पर्य्यन्त, अनतिक्रम आदि अर्थ में जो समास होता है, उसका नाम अव्ययीभाव है। जिन पदों में समास होता है उनमें प्रथम पद प्रायः अव्यय शब्द रहता है। समास करने से अन्त का शब्द यदि अकारान्त हो तो उसका रूप पञ्चमी के सिवाय और सब विभक्तियों में अकारान्त क्लीवलिङ्ग शब्द की प्रथमा विभक्ति के एकवचन के सदृश होता है, परन्तु तृतीया और सप्तमी में दो दो रूप होते हैं। यथा, उपकूलम् उपकूलेन, उपकूले उपकूलम्। इसके सिवाय सब जगह अव्यय शब्द के तुल्य होता है अर्थात् किसी विभक्ति का चिह्न नहीं रहता। यथा, कूलस्य समीपे, उपकूलम्; गृहं गृहं प्रति, प्रतिगृहम्; विघ्नस्य अभावः, निर्विघ्नम्; समुद्रपर्य्यन्तम्, आसमुद्रम्; शक्तिमनतिक्रम्य, यथाशक्ति।

तद्धित-प्रत्यय।
(Nominal Affixes.)

अर्थ विशेष में शब्द के उत्तर त, त्व, वत, मत् आदि प्रत्यय होते हैं, उन प्रत्ययों को तद्धित कहते हैं। तद्धित-प्रत्यय अनेक हैं, उनमें से कईएक का विषय संक्षेप में लिखा जाता है:—

त (तल), त्व।

भाव अर्थ बोध होने से प्रातिपदिक के उत्तर त (तल)

और त्व प्रत्यय होता है। त (तल्) प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग और त्व प्रत्ययान्त शब्द क्लीवलिङ्ग होता है। यथा, प्रभुता, प्रभुत्वम् (प्रभु का भाव); लघुता, लघुत्वम् (लघु का भाव); पशुता, पशुत्वम् (पशु का भाव); खलता, खलत्वम् (खल का भाव)।

इमन् (इमनि) वा (इमनिच्)।

भाव अर्थ बोध होने से गुणवाचक प्रातिपदिक के उत्तर इमन् (इमनि) प्रत्यय भी होता है। यथा, नील का भाव—नीलिमा, नीलत्वम्, नीलता। लघु का भाव—लघिमा, लघुत्वम्, लघुता। गुरु का भाव—गरिमा, गुरुत्वम्, गुरुता। ऐसे ही मृदु—म्रदिमा, मृदुत्वम्, मृदुता। दृढ—द्रढिमा, दृढत्वम्, दृढता। प्रिय—प्रेमा, प्रियत्वम्, प्रियता। महत्—महिमा, महत्त्वम्, महत्ता। दीर्घ—द्राघिमा, दीर्घत्वम्, दीर्घता। इमन् प्रत्ययान्त शब्द पुंलिङ्ग होते हैं।

वत् (वतिच्) वा वति।

सादृश्य अर्थ बोध होने से प्रातिपदिक के उत्तर वत् (वतिच) होता है। यह वत् (वतिच्) प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है। यथा, चन्द्रवत् (चन्द्र के सदृश); पितृवत् (पिता के सदृश); मातृवत् (माता के सदृश); पुत्रवत् (पुत्र के सदृश); गुरुवत (गुरु के सदृश)।

मत् (मतुप्)।

जिसका अथवा जिसमें है, इस अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर मत् (मतुप्) होता है। यथा, जिसकी बुद्धि है, बुद्धिमान्; जिसकी श्री है, श्रीमान्; ऐसे, धीमान्; मतिमान्; अंशुमान्। अग्नि जिसमें है, अग्निमान्; ऐसे वायुमान्, नदीमान्।

अवर्णान्त* तथा अ, म उपधावाले और तकारान्त, ककारान्तादि कईएक प्रातिपदिक के उत्तर मत् (मतुप्) के

* अकारान्त और आकारान्त।

म के स्थान में व होता है । यथा, ज्ञानवान्, बलवान्, विद्यावान्, दयावान्, तडित्वान्, आत्मवान्, लक्ष्मीवान् इत्यादि ।

इन् (इनि) ।

जिसका अथवा जिसमें है, इस अर्थ में एक से अधिक स्वर-विशिष्ट अकारान्त शब्द के उत्तर विकल्प से इन् होता है । इन् होने से अन्त्य स्वर का लोप होता है । यथा, जिसका ज्ञान है—ज्ञानी, ज्ञानवान्; जिसका गुण है—गुणी, गुणवान्; जिसका धन है—धनी, धनवान् ।

विन् (विनि) ।

जिसका अथवा जिसमें है, इस अर्थ में अस्-भागान्त प्रातिपदिक के उत्तर विन् (विनि) होता है । यथा, यशस्—यशस्वी, तेजस्—तेजस्वी, तपस्—तपस्वी, पयस—पयस्वी । स्रज्, माया और मेधा शब्द के उत्तर भी विन् होता है । यथा, स्रज्—स्रग्वी, माया—मायावी, मेधा—मेधावी ।

तर् (तरप्), ईयस् (ईयसुन्) ।

दो में से एक का उत्कर्ष बोध होने से प्रातिपदिक के उत्तर तर् (तरप्) और ईयस् (ईयसुन्) होता है । यथा, दो के मध्य में दृढ, दृढतरः, द्रढीयान्; दो के मध्य में गुरु, गुरुतरः, गरीयान्; दो के मध्य में मृदु, मृदुतरः, म्रदीयान् ।

तम (तमप्), इष्ठ (इष्ठन्) ।

अनेकों में से एक का उत्कर्ष बोध होने से प्रातिपदिक के उत्तर तम (तमप्) और इष्ठ (इष्ठन्) होता है । यथा, अनेकों में दृढ, दृढतमः, द्रढिष्ठः; अनेकों में गुरु, गुरुतमः; गरिष्ठः; अनेकों में मृदु, मृदुतमः, म्रदिष्ठः ।

मय (मयट्) ।

विकार, अवयव व्याप्ति और प्राधान्य अर्थ बोध होने से

प्रातिपदिक के उत्तर मय (मयट्) होता है। यथा, स्वर्ण का विकार, स्वर्णमयम्; रजत का विकार, रजतमयम्; लौह का विकार, लौहमयम्; मृद् का विकार, मृन्मयम्। धूम से व्याप्त, धूममयम्; जल से व्याप्त, जलमयम्; रोग से व्याप्त, रोगमयम्। दारु जिसका अवयव, दारुमयम्; काष्ठ जिसका अवयव, काष्ठमयम्; ऊर्णा जिसमें प्रधान है अथवा ऊर्णा जिसमें व्याप्त है, ऊर्णामयम्।

धा (धाच्)।

प्रकार अर्थ बोध होने से संख्यावाचक प्रातिपदिक के उत्तर धा (धाच्) होता है। धा प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है। यथा, एक प्रकार, एकधा; द्विप्रकार, द्विधा; त्रि प्रकार, त्रिधा; चतुः प्रकार, चतुर्धा। नकारान्त शब्द के उत्तर धा प्रत्यय होने से शब्द के अन्तस्थित नकार का लोप होता है। यथा, पञ्च (पञ्चन्) प्रकार पञ्चधा; नव (नवन्) प्रकार, नवधा।

था (थाल्)।

प्रकार अर्थ बोध होने से सर्व्वनाम को तृतीया विभक्ति के स्थान में था (थाल्) होता है। यथा, अन्येन प्रकारेण, अन्यथा; सर्व्वैः प्रकारैः, सर्व्वथा; इतरेण प्रकारेण, इतरथा; उभयेन प्रकारेण, उभयथा; येन प्रकारेण, यथा; तेन प्रकारेण, तथा। कथम् (केन प्रकारेण) और इत्थम् (अनेन वा एतेन प्रकारेण) ये दो पद निपातन से सिद्ध होते हैं।

तस् (तसिल्)।

पञ्चमी और कहीं सप्तमी विभक्ति के स्थान में भी विकल्प से तस् (तसिल्) होता है। यथा, पञ्चमी—गृहात्, गृहतः; ग्रामात्, ग्रामतः; उभयस्मात्, उभयतः; एकस्मात्, एकतः; यस्मात्, यतः; तस्मात्, ततः; एतस्मात्, अतः; कस्मात्; कुतः; अस्मात्, इतः। सप्तमी—अग्रे, अग्रतः; आदौ, आदितः; अन्ते, अन्ततः।

त्र (त्रल्) ।

सर्व्वनाम प्रातिपदिक की सप्तमी विभक्ति के स्थान में विकल्प से त्र (त्रल्) होता है । यथा, सर्व्वस्मिन्, सर्व्वत्र; अन्यस्मिन्, अन्यत्र; एकस्मिन्, एकत्र; परस्मिन्, परत्र; उभयस्मिन्, उभयत्र; एतस्मिन्, अत्र; यस्मिन्, यत्र; तस्मिन्, तत्र; कस्मिन्, कुत्र; अस्मिन्, अत्र, इह ।

दा ।

कालार्थ बोध होने से कईएक सर्व्वनाम शब्द की सप्तमी विभक्ति के स्थान में दा होता है । यथा, एकस्मिन् काले, एकदा; सर्व्वस्मिन् काले, सदा, सर्व्वदा; कस्मिन् काले, कदा; यस्मिन् काले, यदा; तस्मिन् काले, तदा ।

तन (तनप्) वा ट्यु (ट्युल्) ।

उत्पत्ति अथवा घटना अर्थ बोध होने से कालवाचक अव्यय शब्द के उत्तर तन (तनप्) होता है । यथा, अद्य उत्पन्नम्, अद्यतनम्; ऐसे ही—सायम्, सायन्तनम्; पुरा, पुरातनम्; चिरम्, चिरन्तनम्; अधुना, अधुनातनम्; इदानीम्, इदानीन्तनम्; तदानीम्, तदानीन्तनम्; प्राक्, प्राक्तनः ।

चित्, चन ।

विभक्त्यन्त किम् शब्द के उत्तर अनिश्चय अर्थ में चित् और चन प्रत्यय होता है । यथा, कः—कश्चित्, कश्चन; किम्—किञ्चित्, किञ्चन, का—काचित्, काचन; के—केचित्, केचन; केनचित्, कस्मैचित्, कस्यचित्, केषाञ्चित्, कयाचित्, कस्याश्चित्; कासाञ्चित्; कुतश्चित्, कुतश्चन क्वचित्; क्वचन; कुत्रचित्, कुत्रचन ।

च्वि ।

कृ, भू और अस धातु के योग में प्रातिपदिक के उत्तर

अभूततद्भाव* अर्थ में च्वि प्रत्यय संपद्यते क्रिया के कर्त्ता से होता है। "च्वि" का कुछ नहीं रहता। यथा, अशुक्लं शुक्लं करोति, तत् संपद्यते शुक्लीकरोति; अलघुः लघुः भवति, लघूभवति; अशुक्लः शुक्लः स्यात्, शुक्लीस्यात्।

सात् (सातिच), (साति)।

देय और परिणत अर्थ में प्रातिपदिक के उत्तर सात् (सातिच्) होता है। यथा, विप्रसात्, जलसात्, भस्मसात्, अग्निसात्, भूमिसात्, धूलिसात्। सात् प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होते हैं।

(अणादि) णिणादि अपत्य-प्रत्यय †

अपत्य अर्थ बोध होने से प्रातिपदिक के उत्तर णिण (इ), णायनण् (आयन), ण्यण (य), णण् (अ), णेयण् (एय), णीयण् (ईय), णिकण् (इक) प्रभृति प्रत्यय होते हैं। यथा, दशरथस्यापत्यं, दाशरथिः; सुमित्राया अपत्यं, सौमित्रिः। वदरस्यापत्यं, वादरायणः। पुलस्तेरपत्यं, पौलस्त्यः; दितेरपत्यं, दैत्यः; अदितेरपत्यं, आदित्यः। पृथायाः अपत्यं, पार्थः; कुशिकस्यापत्यं, कौशिकः; भृगोरपत्यं, भार्गवः; रघोरपत्यं, राघवः। गङ्गाया अपत्यं, गाङ्गेयः; विनताया अपत्यं, वैनतेयः; सरमाया अपत्यं, सारमेयः; कुन्त्या अपत्यं, कौन्तेयः। स्वसुरपत्यं, स्वस्रीयः। रेवत्या अपत्यं, रैवतिकः।

अपत्य भिन्न अन्य अर्थों में भी ये सब प्रत्यय होते हैं। यथा व्याकरणं वेत्ति अधीते वा, वैयाकरणः; ऋषिणा प्रोक्तं, आर्षम्; कायेन कृतं, कायिकम्; शिवोऽस्य देवता, शैवः; भिक्षाणां समूहः, भैक्षम्; मथुरायां भवः माथुरः; सभायां साधुः, सभ्यः; शिवस्येदं, शैवम्; सुवर्णस्य विकारः, सौवर्णः; तपोऽस्य शीलः, तापसः; राममधिकृत्य कृतं, रामायणम्; यज्ञाय हितं, यज्ञीयम् इत्यादि।

---

* अभूत का तद्भाव अर्थात् जो जैसा न था वह वैसा हुआ। जैसा, जो वस्तु शुक्ल न थी वह शुक्ल हुई।

† पाणिनि मत में यह प्रत्यय भिन्न हैं। यथा, इञ् फक् ण्य वा यय, अण्, ढक्, घ ठक्, यह हैं।

सरल-संस्कृत-पाठाः * ।

(Easy Lessons in Sanskrit.)

प्रथमः पाठः ।

अश्वो धावति । गौः शब्दायते । सूर्य्यस्तपति । चन्द्र उदेति । वायुर्वाति । नदी वहति । फलं पतति । पत्रं चलति । पीडा वर्द्धते । बालको रोदिति । वृष्टिर्भवति । मेघो गर्ज्जति । पुष्पं शोभते । नटो नृत्यति । गायको गायति । शिशुः क्रीडति । युवा हसति । वृद्धो निद्राति । चौरः पलायते ।

द्वितीयः पाठः ।

स ग्रामं गच्छति । अहं चन्द्रं पश्यामि । पिता पुत्रमाह्वयति । पुत्रः पितरं प्रणमति । गुरुः शिष्यमध्यापयति । शिष्यो गुरुं पृच्छति । शिशुः शय्यायां शेते । राजा प्रजाः पालयति । स इहागमिष्यति । यूयं कुत्र गमिष्यथ ? तत्राहं गमिष्यामि । त्वं कथं रोदिषि ? बीजादङ्कुरो जायते । अश्वमारुह्य गच्छति । तन्तुवायो वस्त्रं वयति । गोपो दुग्धं दोग्धि । गौः शष्पाण्यत्ति । विद्या ददाति विनयं ।

तृतीयः पाठः ।

भृत्यः प्रभोराज्ञां पालयति । प्रभुर्भृत्याय वेतनं ददाति । बालको यत्नेन विद्यामर्ज्जयति । स क्लेशं सोढुं शक्नोति । दशरथः पुत्रशोकेन प्राणांस्तत्याज । रामः समुद्रे सेतुं बबन्ध । ग्रीष्मकाले रविरतितीक्ष्णो भवति । शरदि नभोमण्डलं निर्म्मलं भवति । बोपदेवो मुग्धबोधं व्याकरणं प्रणीतवान् । पक्षिणो रात्रौ वृक्ष-शाखायां निवसन्ति । साधवः सर्व्वभूतेषु दयां कुर्व्वन्ति । कालिदासो बहूनि काव्यानि रचितवान् । अर्ज्जुनो बाहुबलेन

---

* Translate all these Lessons into English.

पृथिवीमजयत् । युधिष्ठिरः सदा सत्यमुवाच । उद्योगी पुरुषः लक्ष्मीमुपैति । कापुरुषा एव दैवमवलम्बन्ते ।

चतुर्थः पाठः ।

पाटलिपुत्रनगरे चन्द्रगुप्तो नाम राजा बभूव । चाणक्यश्चन्द्रगुप्तस्य नरपतेरमात्य आसीत् । परशुरामः पृथिवीं निःक्षत्रियामकरोत् । धृतराष्ट्रो जन्मान्ध आसीत्, तेन स राज्यं न प्राप । रामः पितुरादेशात् सीतया लक्ष्मणेन च सह वनं जगाम । भीमो गदाघातेन दुर्य्योधनस्यऊरुद्वभञ्ज । चन्द्रं दृष्ट्वा मनसि महान् हर्षो जायते । आकाशे रजन्यामसंख्यानि नक्षत्राणि दृश्यन्ते । रात्रौ प्रभातायां पूर्व्वस्यां दिशि सूर्य्यः प्रकाशते । वसन्तागमे तरुषु लतासु च नवपल्लवानि कुसुमानि च जायन्ते ।

पञ्चमः पाठः ।

यो बाल्ये विद्यां नोपार्ज्जयति, स चिराय मूर्खोभवति । यो दयालुर्भवति स दीनेभ्यो धनं ददाति । यः कृपणो भवति, स आत्मानमपि वञ्चयते । यो बन्धुवाक्यं न शृणोति, स विपदमाप्नोति । पण्डिताः शास्त्रालोचनया कालं यापयन्ति । मूर्खा निद्रयाकलहेन च समयमतिवाहयन्ति । यः शठेषु विश्वसिति, स आत्मनो मृत्युमाह्वयति । यो विपदि सहायो भवति, स एव यथार्थबन्धुः । यो दुर्ज्जनेन सह मैत्रीं करोति, स पदे पदे विपदमाप्नोति । यस्य कुलं शीलं च न ज्ञायते, न तस्मिन् सहसा विश्वसनीयम् । यत्नेन विना किमपि न सिध्यति, तस्मात् सर्व्वेषु कार्य्येषु यत्नः करणीयः ।

षष्ठः पाठः ।

सदा सत्यं ब्रूयात् । सर्व्वे सत्यवादिनमाद्रियन्ते, तस्य वचसि विश्वासं कुर्व्वन्ति च । यो हि मिथ्यावादी भवति, न कोऽपि तस्मिन् विश्वसिति । सदा प्रियं ब्रूयात् । प्रियवादी सर्व्वस्य प्रियो भवति ।

विद्याहिपरसंधनम् । यस्यविद्याधनमस्ति, ससदा सुखेन

कालं नयति । श्रमेण यत्नेन च विना विद्या न भवति; तस्माद् विद्यालाभाय श्रमो यत्नश्च विधेयः । विद्यां विना वृथा जीवनम् ।

आलस्यं सर्व्वेषां दोषाणामाकरः । अलसा विद्यामुपार्ज्जयितुं न शक्नुवन्ति न च धनं लभन्ते । अलसानां चिरमेव दुःखम् । तस्मादालस्यं परित्यजेत् ।

माता पितरौ पुत्रार्थं बहून् क्लेशान् सहेते । तयोर्नित्यं प्रियं कुर्य्यात् । कायेन मनसा वाचा तयोर्हितं चिन्तयेत् । तयो सततं भक्तिमान् भवेत् । प्राणात्ययेऽपि तयोरवमानना न कार्य्या । न च तयोरनुमतिं विना किञ्चित् कर्म्म कर्त्तव्यम् ।

सप्तमः पाठः ।

अतिभोजनं रोगमूलमायुःक्षयकरञ्च । तस्मादतिभोजनं परिहरेत् । योऽस्मानध्यापयति, सोऽस्माकं परमो गुरुः, स हि पितृवत् पूजनीयः । विद्यादाता, जन्मदाता द्वावेव समानौ, सम्मानीयौ च । क्रोधं यत्नेन वर्ज्जयेत् । क्रोधवशो न परुषं भाषेत नापि प्रहरेत् । क्रोधो हि महान् शत्रुः । सर्व्वं परवशं दुःखम् । सर्व्वमात्मवशं सुखम् । एतदेव सुखदुःखयोर्लक्षणम् । परहिंसायां परापकारे च बुद्धिर्न कार्य्या । तयोः समं पापं नास्ति । यथाशक्ति परेषामुपकारं कुर्य्यात् । परोपकारो हि परमोधर्म्मः । अहङ्कारं परिहरेत् । नाहङ्कारात् परो रिपुः । सन्तुष्टस्य सदा सुखम् । य आत्मनः सुखमन्विच्छेत्, स सन्तोषमवलम्बेत । सन्तोषमूलं हि सुखम् ।

परिशिष्ट।

वर्ण-निर्णय (The Alphabet)।

(अतिरिक्त)

अइउण् ॥ १ ऋलृक् ॥ २ एओङ् ॥ ३ ऐऔच् ॥ ४ हयवरट् ॥ ५ लण् ॥ ६ ञमङणनम् ॥ ७ झभञ् ॥ ८ घढधष् ॥ ९ जबगडदश् ॥ १० खफछठथचटतव् ॥ ११ कपय् ॥ १२ शषसर् ॥ १३ हल् ॥ १४ ॥ संस्कृत वर्णमाला के लिए ये चौदह माहेश्वर सूत्र हैं। इनमें से पहले चार सूत्र अच् (स्वरवर्ण) के हैं और बाक़ी दस सूत्र हल् (व्यञ्जनवर्ण) के हैं। हरएक सूत्र के अन्त में जो एक एक हल वर्ण है संज्ञा गणना के समय उसे छोड़ दिया जाता है। जैसे, अण् से ण् को,छोड़ कर अ इ उ, अक् से ण् , तथा क् को छोड़ कर अ इ उ ऋ लृ, एङ् से ङ् को छोड़ कर ए ओ, एच् से ङ् तथा च् को छोड़ कर ए ओ ऐ औ समझे जाते हैं, और ऐसे ही अच् से सभी स्वरवर्ण, तथा हल् से सभी व्यञ्जनवर्ण समझे जाते हैं। हकारादि में जो अकार है वह उच्चारण की सुविधा के लिए है। अण् अक् इत्यादि को प्रत्याहार कहते हैं। अक् प्रत्याहार से अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ तथा लृ समझना चाहिए।

वैयाकरण लोग अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ, इन आठ स्वरों के उच्चारण की विशेषता को प्लुत-संज्ञा देकर ह्रस्वस्वर, दीर्घस्वर के ऐसा आठ प्लुतस्वर मानते हैं। इसलिए स्वर की संख्या इक्कीस होती है; और प्लुत ऌ तथा दीर्घ ॡ मान लेने से स्वरवर्ण की संख्या कुल तेईस होती है, परन्तु पाणिनि के अनुसार ॡ दीर्घ नहीं होता। "दूराह्वाने च गाने च रोदने च प्लुतो मतः।" दूर से पुकारने, गीत गाने और रोने के कामों में प्लुतस्वर का उपयोग होता है। ह्रस्वस्वर के उच्चारण में जो समय लगता है, दीर्घस्वर के उच्चारण में उसका दूना, और प्लुत स्वर के उच्चारण में उसका तिगुना समय लगता है। ह्रस्वस्वर के उच्चारण के समय को मात्रा (*unit*) कहते हैं। इसलिये ह्रस्वस्वर एक मात्रा का, दीर्घस्वर दो मात्रा का, और प्लुतस्वर तीन मात्रा का होता है, (एकमात्रो भवेद् ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते। त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनञ्चार्द्धमात्रकम्)। प्लुतस्वर लिखने की रीति ऐसी है—यथा, अ३, इ३, उ३ इत्यादि। साहित्य आदि में इसका प्रयोग बहुत ही कम होता है।

उच्चारण के प्रयत्न के अनुसार वर्गों के प्रथम और द्वितीय वर्ण तथा श ष स श्वास वा अघोष-वर्ण (*Surds or Hard letters*) कहे जाते हैं।

वर्गों के तृतीय, चतुर्थ और पञ्चमवर्ण तथा य् र् ल् व् ह्, नाद वा घोषवर्ण (*Sonants* or *Soft letters,*) कहे जाते हैं। वर्गों के द्वितीय और चतुर्थवर्ण अर्थात् ख (kh), घ (gh); छ (chh), झ (jh); ठ (th), ढ (dh); थ (th), ध (dh); फ (ph), भ (bh); इनको सोष्म (वायुप्रधान) वर्ण कहते हैं। स्वरवर्ण, वर्गों के प्रथम, तृतीय और पञ्चमवर्ण तथा य् र् ल् व्, अल्पप्राण-वर्ण (*Non-aspirates* or *Slightly-aspirated letters*) हैं। वर्गों के द्वितीय और चतुर्थवर्ण तथा श् ष् स् ह्, महाप्राण-वर्ण (*Aspirates* or *Long-breathed letters*) हैं।

परिभाषा (Definitions)।

(अतिरिक्त)

प्रकृति (Radicals):—क्रियावाचक, वस्तुवाचक किंवा वस्तु के विशेषण-वाचक को अर्थात् पद के मूलभाग को प्रकृति कहते हैं। प्रकृति दो प्रकार की हैं—धातु और प्रातिपदिक। धातु (Verbal roots):—"भूवादयो धातवः।" जिससे क्रिया समझी जाती है उसे धातु कहते हैं। यथा, भू, स्था, गम्, दृश् इत्यादि। प्रातिपदिक (Nominal Stem):—"अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।" धातु, प्रत्यय तथा प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थयुक्त शब्दों को वा विभक्ति रहित मूल शब्दों को अर्थात् जो वस्तु-वाचक वा वस्तुओं के विशेषण-वाचक होते हैं, उन्हें प्रातिपदिक कहते हैं। वस्तु-वाचक—चन्द्र, सूर्य्य, तरु, लता, जल, वायु, गृह इत्यादि। वस्तुओं के विशेषण-वाचक—दृढ, स्थिर, प्रबल, नूतन, पुरातन, मन्द, सुन्दर इत्यादि। प्रत्यय (Affix, Suffix, Postfix):—धातु और प्रातिपदिकों के उत्तर जो लगाये जाते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं—विभक्ति, कृत्, तद्धित, स्त्री-प्रत्यय और धात्ववयव। विभक्ति (Inflections):—धातुओं के उत्तर ति, तस्, अन्ति आदि तथा प्रातिपदिकों के उत्तर : (सु), औ, अः (जस्) आदि जो सब प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें विभक्ति कहते हैं। कृत् (Primary Affixes or Verbal Suffixes):—धातुओं के उत्तर तव्य, य, तृ, त, त्वा आदि जो सब प्रत्यय होते हैं, उन्हें कृत् कहते हैं। तद्धित (Secondary Affixes or Suffixes to bases):—प्रातिपदिकों के उत्तर अ, य आदि और तिङन्त पदों के उत्तर कल्प आदि जो सब प्रत्यय होते हैं, उन्हें तद्धित कहते हैं। स्त्री-प्रत्यय (Femi-

nine Suffixes):—स्त्रीलिङ्ग में आ, ई आदि जो सब प्रत्यय होते हैं वे स्त्रीप्रत्यय हैं। धात्ववयव (Parts of Roots):—धातुओं के उत्तर इ, स आदि तथा प्रातिपदिकों के उत्तर य, काम्य आदि जो सब प्रत्यय होते हैं, उन्हें धात्ववयव कहते हैं। पद (Inflected words):—"सुप्तिङन्तं पदम्।" धातु तथा प्रातिपदिक विभक्तियुक्त होने से उन्हें पद कहते हैं। आदेश (Substitutes) प्रकृति और प्रत्ययों का जो रूप-परिवर्त्तन (स्वरूप का बदला) होता है उसे आदेश कहते हैं। यथा, वृद्ध शब्द के स्थान में ज्य, स्था-धातु के स्थान में तिष्ठ, य-विभक्ति के स्थान में इ, अन्-विभक्ति के स्थान में उः इत्यादि। गुण (अदेङ्गुणः)—स्वर का गुण बोलने से यह समझना चाहिये कि, इ ई के स्थान में ए, उ ऊ के स्थान में ओ, ऋ ॠ के स्थान में अर्, ऌ के स्थान में अल् होता है। वृद्धि (वृद्धिरादैच्)—स्वर की वृद्धि बोलने से यह समझना चाहिये कि अ के स्थान में आ, इ ई के स्थान में ऐ, उ ऊ के स्थान में औ, ऋ ॠ के स्थान में आर् होता है। लघु और गुरु (ह्रस्वं लघुः, संयोगे गुरुः, दीर्घञ्च)—ह्रस्वस्वर को लघु और दीर्घस्वर को गुरु कहते हैं। युक्ताक्षर के पूर्ववर्त्ती ह्रस्वस्वर को भी गुरु मान लिया जाता है। उपसर्ग (Prepositional Prefixes):—"उपसर्गाः क्रियायोगे"— क्रिया के साथ योग होने से प्र, परा, अप, सम् आदि बाईस शब्दों को उपसर्ग कहते हैं। वाक्य (Sentence) उस सुबन्त और तिङन्त पद-समष्टि को कहते हैं जिससे एक सम्पूर्ण मनोभाव प्रकट होता हो। सवर्ण (तुल्यास्यं प्रयत्नं सवर्णम्)—एक ही स्थान और समान प्रयत्न से उच्चारित वर्णों की सवर्ण-संज्ञा है। यथा, अ आ; इ ई; उ ऊ; ऋ ॠ; ये एक दूसरे का सवर्ण है। ऋ और ऌ एक ही स्थान से उच्चारित न होने पर भी विशेष कार्य्यवश सवर्ण समझे जाते हैं। एक ही स्थान से उच्चारित वर्गीय व्यञ्जनवर्ण भी एक दूसरे से सवर्ण हैं। टि (अचोऽन्त्यादि टिः) स्वरों में से जो अन्त्य (शेष) उसको लेकर सब वर्ण की टि-संज्ञा होती है। उपधा (अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा) अन्त्य-वर्ण के पूर्व-वर्ण को उपधा कहते हैं।

सन्धि।

(अतिरिक्त)

"परः सन्निकर्षः संहिता।" वर्णों की अत्यन्त निकटता की संहिता संज्ञा होती है, अर्थात् दो वर्ण परस्पर अत्यन्त निकटस्थ होने से मिल जाते

हैं उसी मिलने को सन्धि कहते हैं । "संहितैकपदे नित्या नित्या धातूपसर्गयोः । नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते । " (१) एक पद में सन्धि सदा करनी चाहिये (जैसे, ने+अनम्=नयनम्, हरे+ए=हरये इत्यादि)। (२) धातु के साथ उपसर्ग की सन्धि अवश्य होती है (जैसे, अनु+अभवत्=अन्वभवत्, प्र+एजते=प्रेजते इत्यादि)। (३) समास में भी सन्धि अवश्य करनी है (जैसे, भीमश्च अर्जुनश्च तौ भीमार्ज्जुनौ, त्रीणि अम्बकानि यस्य स त्र्यम्बकः)। अर्थात् इन तीन जगहों में सन्धि नहीं करने से ग़लती होती है; किन्तु वाक्यों में सन्धि करनी नहीं करनी इच्छाधीन है; (जैसे; सन्धि न करने से—नलः नाम नृपतिः आसीत्, इति उक्त्वा; सन्धि करने से—नलो नाम नृपतिरासीत्, इत्युक्त्वा इत्यादि)। इच्छाधीन स्थलों में भी जहाँ तक होसके सन्धि करना ही अच्छा है।

स्वर सन्धि ।

(अतिरिक्त) ।

१ । प्र, वत्सतर, कम्बल, वसन, ऋण और दश, इन शब्दों के अकार के परे ऋण शब्द का ऋ रहे तो दोनों मिलकर आर् होता है । यथा, प्र+ऋणम्=प्रार्णम्, ऋण+ऋणम्=ऋणार्णम् (Debt for paying off another debt), वसन+ऋणम् = वसनार्णम्, दश+ऋणम् = दशार्णम् (Name of a country) इत्यादि ।

२ । धातु का ए अथवा ओ परे रहने से उपसर्ग के अ और आ का लोप होता है; ए वा ओ उपसर्ग में मिल जाता है । यथा, प्र+एजते=प्रेजते, उप+एषते=उपेषते, परा+एखति=परेखति, आ+एटति=एटति, उप+ओषति=उपोषति, अव+ओहति=अवोहति, परा+ओखति=परोखति । एध् और इ (to go) धातुओं का ए परे रहने से उपसर्ग के अ और आ का लोप नहीं होता । यथा, उप+एधते=उपैधते, परा+एधते=परैधते, अव+एति=अवैति, आ+एति=ऐति, उप+एति=उपैति । किन्तु लोट् (अनुज्ञा) के मध्यम पुरुष का ए परे रहने से उपसर्ग के अ और आ का लोप होता है । तथा, अव+एहि=अवेहि, उप+एहि=उपेहि ।

३ । उपसर्ग के अ अथवा आ के परे धातु का ऋ रहे तो दोनों मिलकर आर् होता है । आ उपसर्ग में युक्त होता है और र् परवर्ण के मस्तक पर जाता है । यथा, अप+ऋच्छति=अपार्च्छति, अव+ऋणोति=अवार्णोति, प्र+ऋजते=प्रार्जते, परा+ऋषति=परार्षति, प्र+ऋच्छति=प्रार्च्छति ।

(सन्धि-निषेध)।

४। (१) ओकारान्त अथवा एकस्वरमात्र अव्यय शब्द की सन्धि नहीं होती। यथा, अहो-अपेहि, अहो अपेहि; अहो-आगमिष्यति, अहो आगमिष्यति; अ-अद्यापि, अ अद्यापि; आ-एवम्, आ एवम्; उ-उत्तिष्ठ, उ उत्तिष्ठ; ए-एवमेतत्, ए एवमेतत्; औ-आगम्यताम्, औ आगम्यताम्। किन्तु सीमा, व्याप्ति और ईषदर्थ बोध होने से या क्रिया के साथ योग होने से आ इस अव्यय शब्द की सन्धि होती है। यथा, सीमा—आ+अध्ययनात्=आध्ययनात् (अध्ययनपर्यन्तम्)। व्याप्ति—आ+एकदेशात्=एकदेशात्=(एक देशं व्याप्य)। ईषदर्थ—आ+आलोचितम्=आलोचितम् (ईषत् आलोचितम्) क्रिया के साथ योग—आ+इहि=एहि।

(२) द्विवचननिष्पन्न ईकारान्त, ऊकारान्त और एकारान्त पदों की सन्धि नहीं होती। यथा, कवी-इमौ, कवी इमौ; गिरी-एतौ, गिरी एतौ; साधू-इमौ, साधू इमौ; वन्धू-आगतौ, वन्धू आगतौ; लते-एते, लते एते; विद्ये-इमे, विद्ये इमे; शयाते-अर्भकौ, शयाते अर्भकौ; शयावहे-आवाम्, शयावहे आवाम्; याचेते-अर्थम्, याचेते अर्थम्।

(३) अदस् शब्द के ईकारान्त और ऊकारान्त पदों की सन्धि नहीं होती। यथा, अमी-अश्वाः अमी अश्वाः; अमी-इषवः, अमी इषवः; अमू-अर्भकौ, अमू अर्भकौ।

व्यञ्जन-सन्धि।

(अतिरिक्त)।

१। श्, स् अथवा ह् परे रहने से पद के मध्यस्थित न् के स्थान में अनुस्वार होता है। यथा, दन्+शनम्=दंशनम्, अन्+शते=अंशते, मीमान्+सते=मीमांसते, जिघान्+सति=जिघांसति, रन्+हते=रंहते, बृन्+हितम्= बृंहितम्।

२। स् परे रहने से पद के मध्यस्थित म् के स्थान में अनुस्वार होता है। यथा, रम्+स्यते=रंस्यते, सङ्क्रम्+स्यते=सङ्क्रंस्यते, अयम्+सीत्=अयंसीत्।

३। जिस वर्ग का वर्ण परे रहता है पद के मध्य में स्थित न् के स्थान में उस वर्ग का पञ्चमवर्ण होता है। यथा, आशन्+कते=आशङ्कते, वन्+चयति=वञ्चयति, वन्+टयति=वण्टयति, कन्+पते=कम्पते।

४। "अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।" यदि त परे हो तो पद के मध्यस्थित म् के स्थान में न् होता है। यथा, गम्+ता=गन्ता, गम्+तव्यम्=गन्तव्यम्, शाम्+तम्=शान्तम्, दाम्+तः=दान्तः।

५। "उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य।" उत् उपसर्ग के परस्थित स्था और स्तम्भ् धातु के सकार का लोप होता है। यथा, उत्+स्थानम्=उत्थानम्, उत्+स्थितिः=उत्थितिः, उत्+स्तम्भनम्=उत्तम्भनम्।

६। "खरि च।" वर्ग का प्रथम या द्वितीय वर्ण अथवा श, ष, स परे रहने से वर्ग के तृतीय और चतुर्थ वर्ण के स्थान में उस वर्ग का प्रथम वर्ण होता है। यथा, विपद्+कालः=विपत्कालः, क्षुद् + क्षामः=क्षुत्क्षामः, समिध् +सु=समित्सु इत्यादि।

७। वर्ग का तृतीय अथवा चतुर्थ वर्ण परे रहने से वर्ग के चतुर्थ वर्ण के स्थान में उस वर्ग का तृतीय वर्ण होता है। यथा, क्षुध्+बोधः=क्षुद्बोधः।

८। "समः सुटि।" कृ धातु अथवा कृ धातु से बने हुए शब्द परे होवें तो सम् शब्द के "म्" के स्थान में अनुस्वार होता है और अनुस्वार के परे "स्" का आगम होता है। यथा, सम्+कृतः=संस्कृतः, सम्+कारः= संस्कारः; सम्+करणम्=संस्करणम्, सम्+कर्त्ता=संस्कर्त्ता।

विसर्गसन्धि (अतिरिक्त)।

१। क, ख, प, फ परे रहने से निः, आविः, वहिः, दुः, प्रादुः और चतुः इन शब्दों के विसर्ग के स्थान में मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, निः+कामः= निष्कामः, निः+खेदः=निष्खेदः, निः+पीड़ितः=निष्पीड़ितः, निः+फलः= निष्फलः, आविः+कृतम्=आविष्कृतम्, वहिः+कृतः=वहिष्कृतः, दुः+करम् =दुष्करम्, प्रादुः+कृतम्=प्रादुष्कृतम्, चतुः+कोणम्=चतुष्कोणम्, चतुः +पथम्=चतुष्पथम्।

२। क, ख, प, फ परे रहने से हविः, सर्पिः, वर्हिः, अर्चिः, रोचिः, शोचिः, आयुः, धनुः, चक्षुः, वपुः, यजुः इत्यादि के विसर्ग के स्थान में विकल्प से मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, हविः+पतति=हविष्पतति, हविः पतति; सर्पिः+पिबति=सर्पिष्पिबति, सर्पिः पिबति; आयुः+करोति=आयुष्क-रोति, आयुः करोति; धनुः+करोति=धनुष्करोति, धनुः करोति। समास में नित्य मूर्द्धन्य ष् होता है। यथा, हविः+पानम्=हविष्पानम्; सर्पिः +पात्रम्=सर्पिष्पात्रम्; आयुः+कामः=आयुष्कामः; धनुः+पाणिः= धनुष्पाणिः। भ्रातुः+पुत्रः=भ्रातुष्पुत्रः; यहाँ समास न होने पर विसर्ग के स्थान में ष् होता है।

३। तकारादि तद्धित प्रत्यय परे रहने से इ और उ के परस्थित विसर्ग के स्थान में ष् और त् के स्थान में ट् होता है। यथा, अर्चिः+त्वम्= अर्चिष्ट्वम्, चतुः+तयम्=चतुष्टयम्।

४। कृ धातु परे रहने से नमः, पुरः और तिरः, इन तीन शब्दों के विसर्ग के स्थान में दन्त्य स् होता है। यथा, नमः+कारः=नमस्कारः, नमः+कृत्य=नमस्कृत्य, पुरः+कारः=पुरस्कारः, पुरः+कृत्यः=पुरस्कृत्यः, तिरः+कारः=तिरस्कारः, तिरः+करणी=तिरस्करणी।

५। कर, कार, कान्त, काम, कुम्भ, कुशा, कर्णी और पात्र शब्द परे रहने से अ के परस्थित विसर्ग के स्थान में स् होता है। यथा, श्रेयः+करः=श्रेयस्करः, पयः+कारः=पयस्कारः, अयः+कान्तः=अयस्कान्तः, मनः+कामः=मनस्कामः, अयः+कुम्भः=अयस्कुम्भः, पयः+पात्रम्=पयस्पात्रम्, अपः+कुशा=अपस्कुशा, अपः+कर्णी=अपस्कर्णी।

६। निम्नलिखित पदों की सन्धि में विसर्ग के स्थान में स् होता है। यथा, तमः+काण्डः=तमस्काण्डः, मेदः+पिण्डः=मेदस्पिण्डः, भाः+करः=भास्करः, अहः+करः=अहस्करः, वाचः+पतिः=वाचस्पतिः, दिवः+पतिः=दिवस्पतिः, अयः+कीलः=अयस्कीलः, अधः+पदम्=अधस्पदम्, शिरः+पदम्=शिरस्पदम्।

णत्वविधान (अतिरिक्त)

१। न भिन्न तवर्ग, प और म संयुक्त "न", "ण" नहीं होता। यथा, कृन्तति, ग्रन्थनम्, वृन्दः, रन्धनम्, तृम्पति, क्षुम्नाति।

२। यदि एक पद में ऋ, ॠ, र, ष और दूसरे पद में "न" हो तो वह "न", "ण" नहीं होता। यथा, नृयानम्, ऋषयानम्, रघुनन्दनः, गिरिनन्दिनी, त्रिनयनः इत्यादि। किन्तु—(क) अन्य पदस्थित "न" विभक्ति के स्थान में जात, विभक्तियुक्त अथवा स्त्रीलिङ्ग "ई" प्रत्यय से मिलित हो तो विकल्प से "ण" होता है। यथा, प्रभावेण, प्रभावेन; नगरयायिणा, नगरयायिना; विषपायिणी, विषपायिनी। (ख) परपद एकस्वरविशिष्ट अथवा कवर्गयुक्त हो तो "न" के स्थान में नित्य "ण" होता है। यथा, प्रमुणा, पुनर्भूणाम्, वृत्रहणः, श्रीकामेण, दुर्गमेण, गृहगामिणा, धर्म्मकामाणाम्, दोषभागिणा, शुष्कगोमयेण, परिपाकेण, नगरगामिणी, इत्यादि। परन्तु पक्, युवन्, अहन् तथा भगिनी, कामिनी, यूनी आदि कई एक शब्दों का "न", "ण" नहीं होता। यथा, परिपक्केन, नृयुवानौ, चारुयूना, दीर्घाह्ना, पितृभगिनी, हरकामिनी, हरभामिनी, घोरयामिनी, क्षत्रियपूनी।

३। द्विस्वर अथवा त्रिस्वर विशिष्ट ओषधि (शस्य पक जाने से सूख जाते हैं ऐसे उद्भिद्) वाचक शब्दों के परे वन शब्द का न विकल्प से ण हो जाता है। यथा, दूर्भवणम्, दूर्भवनम्; हरिद्रावणम्, हरिद्रावनम्; केसरवणम्, केसरवनम्; वदरीवणम्, वदरीवनम्। परन्तु शर, इक्षु, प्लक्ष-

आम्र, खदिर, इन शब्दों के परे वन शब्द का न सदा ण हो जाता है। यथा, शरवणम्, आम्रवणम् इत्यादि।

४। प्र, निर्, अन्तर्, अग्रे, इन शब्दों के परस्थित वन शब्द का न, ण हो जाता है। यथा, प्रवणम्, निर्वणम्, अन्तर्वणम्, अग्रेवणम्।

५। अन्य पदस्थित र आदि के परवर्त्ती पान शब्द का न विकल्प से ण हो जाता है। यथा, क्षीरपाणम्, क्षीरपानम्; विषपाणम्, विषपानम्; कषायपाणम्, कषायपानम्।

६। वयस् अर्थ बोध होने से त्रि और चतुर् शब्दों के परस्थित हायन शब्द का न, ण हो जाता है। यथा, त्रिहायणः वत्सः, चतुर्हायणी गौः।

७। प्र, पूर्व, अपर् आदि शब्दों के परस्थित अह्न शब्द के न के स्थान में ण होता है। यथा, प्राह्णः, पूर्वाह्णः, अपराह्णः।

८। पर, पार, उत्तर, चान्द्र, नारा आदि शब्दों के परस्थित अयन शब्द के न के स्थान में ण होता है। यथा, परायणम्, पारायणम्, उत्तरायणम्, चान्द्रायणम्, नारायणः।

९। अग्र और ग्राम के परस्थित नी शब्द का न, ण हो जाता है। यथा, अग्रणीः, ग्रामणीः।

१०। शूर्प शब्द के परस्थित नख शब्द के और प्र, द्रु, खर, खुर, वार्ध्री शब्दों के परस्थित नस् शब्द के भी न के स्थान में ण होता है। यथा, शूर्पणखा, प्रणसः, द्रुणसः, खरणसः, खुरणसः, खरणाः, खुरणाः इत्यादि।

११। गिरिनदी प्रभृति का न विकल्प से ण होता है। यथा, गिरिणदी, गिरिनदी; स्वर्णदी, स्वर्नदी; गिरिणितम्बः, गिरिनितम्बः इत्यादि।

१२। पूर्व्वपद के अन्त में ष् रहने से परपद के न के स्थान में ण नहीं होता। यथा, निष्पानम्, दुष्पानम्, निष्कामेन।

१३। प्र, परा, परि, निर्, इन चार उपसर्ग और अन्तर् शब्द के परस्थित नद्, नम्, नश्, नी, हन् प्रभृति धातुओं का न, ण हो जाता है। यथा, प्रणदति, प्रणामः, परिणामः, प्रणश्यति, परिणाशः, अन्तर्णाशः, प्रणयः, परिणयः, निर्णयः, प्रहणनम्, पराहणनम्। परन्तु नश् धातु के श् के स्थान के ष् और हन् धातु के ह के स्थान में घ होने से न, ण नहीं होता। यथा, प्रनष्टः, परिनष्टः, निर्नष्टः, प्रघ्नन्तिः, शत्रुघ्नः।

१४। कुछ शब्दों में स्वभावतः "ण" होता है। यथा, अणु, फणि, मणि, बाण, गुण, गण इत्यादि—

अस्-भागान्त—पयस् (Milk, Water)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
सम्बोधन	पयः	पयसी	पयांसि

और तृतीयादि सब विभक्तियों में वेधस् शब्द के सदृश रूप होता है। सब अस्-भागान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों * के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

इस्-भागान्त—हविस् (Clarified butter)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हविः	हविषी	हवींषि
द्वितीया	हविः	हविषी	हवींषि
तृतीया	हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः
चतुर्थी	हविषे	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
पञ्चमी	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः
षष्ठी	हविषः	हविषोः	हविषाम्
सप्तमी	हविषि	हविषोः	हविःषु
सम्बोधन	हविः	हविषी	हवींषि

सब इस्-भागान्त क्लीवलिङ्ग शब्दों † के रूप इसी प्रकार के होते हैं।

उस्-भागान्त—धनुस् (Bow)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुर्भ्याम्	धनुर्भ्यः

---

* अम्भस्, अयस्, आगस्, सरस्, उरस्, चेतस्, छन्दस्, तमस्, मनस्, यशस्, रजस्, वक्षस्, वयस्, तपस् इत्यादि।

† ज्योतिस्, सर्पिस्, अर्चिस्, रोचिस्, शोचिस् इत्यादि।

पुष्पं पुष्करबाष्पशष्पशुषिरं तुष्कं तुरुष्कौषधे ।
मुष्कं गोष्पदपौरुषे परुषमित्येते तथा चापरे ॥

शब्दरूप (अतिरिक्त) ।

स्वरान्त-पुंलिङ्ग शब्द ।

अकारान्त—अल्प (Little), द्वितीय (Second), तृतीय (Third) ।

अल्प शब्द का रूप गज शब्द के तुल्य है केवल प्रथमा के बहुवचन में अल्पे, अल्पा, ये दो पद होते हैं, इतना ही प्रभेद है । प्रथम, चरम, अर्द्ध, कतिपय, नेम, द्वय, त्रय, द्वितय, त्रितय, चतुष्टय आदि शब्दों के रूप अल्प शब्द के सदृश हैं ।

द्वितीय और तृतीय शब्दों के रूप भी गज शब्द के सदृश हैं, केवल चतुर्थी, पञ्चमी और सप्तमी के एकवचन में कुछ विशेष हैं । यथा—

	चतुर्थी	पञ्चमी	सप्तमी
द्वितीय	द्वितीयस्मै द्वितीयाय	द्वितीयस्मात् द्वितीयात्	द्वितीयस्मिन् द्वितीये
तृतीय	तृतीयस्मै तृतीयाय	तृतीयस्मात् तृतीयात्	तृतीयस्मिन् तृतीये

वि, साय और संख्यावाचक शब्दों के साथ अहन् शब्द का समास होने पर समासोत्पन्न अह्नभागान्त शब्दों के सप्तमी के एकवचन में तीन तीन पद होते हैं । यथा, (वि+अह्न) व्यह्न-व्यह्नि, व्यहनि, व्यह्ने; (साय+अह्न) सायाह्न—सायाह्नि, सायाहनि, सायाह्ने; (द्वि+अह्न) द्व्यह्न—द्व्यह्नि, द्व्यहनि, द्व्यह्ने । अकारान्त पाद, दन्त आदि कई एक शब्दों के रूप में भी विशेषता है । यथा—

पाद (Leg, Foot) । प्रथमा—पादः, पादौ, पादाः । द्वितीया—पादम्, पादौ, पादान् पदः । तृतीया—पादेन पदा, पादाभ्याम् पद्भ्याम्, पादैः पद्भिः । चतुर्थी—पादाय पदे, पादाभ्याम् पद्भ्याम्, पादेभ्यः पद्भ्यः । पञ्चमी—पादात् पदः, पादाभ्याम् पद्भ्याम्, पादेभ्यः पद्भ्यः । षष्ठी—पादस्य पदः, पादयोः पदोः, पादानाम् पदाम् । सप्तमी—पादे पदि, पादयोः पदोः, पादेषु पत्सु । सम्बोधन—पाद, पादौ, पादाः ।

दन्त (Tooth) । प्रथमा—दन्तः, दन्तौ, दन्ताः । द्वितीया—दन्तम्, दन्तौ, दन्तान् दतः । तृतीया—दन्तेन दता, दन्ताभ्याम् दद्भ्याम्, दन्तैः

दद्भिः। चतुर्थी—दन्ताय दते, दन्ताभ्याम् दद्भ्याम्, दन्तेभ्यः दद्भ्यः।
पञ्चमी—दन्तात् दतः, दन्ताभ्याम् दद्भ्याम्, दन्तेभ्यः दद्भ्यः। षष्ठी—
दन्तस्य दतः, दन्तयोः दतोः, दन्तानाम् दताम्। सप्तमी—दन्ते दति,
दन्तयोः दतोः, दन्तेषु दत्सु। सम्बोधन—दन्त, दन्तौ, दन्ताः।

मास (Month)। प्रथमा—मासः, मासौ, मासाः। द्वितीया—मासम्,
मासौ, मासान् मासः। तृतीया—मासेन मासा, मासाभ्याम् माभ्याम्,
मासैः माभिः। चतुर्थी—मासाय मासे, मासाभ्याम् माभ्याम्, मासेभ्यः
माभ्यः। पञ्चमी—मासात् मासः, मासाभ्याम् माभ्याम्, मासेभ्यः माभ्यः।
षष्ठी—मासस्य मासः, मासयोः मासोः, मासानाम् मासाम्। सप्तमी—
मासे मासि, मासयोः मासोः, मासेषु मास्सु। सम्बोधन—मास, मासौ,
मासाः।

यूष (Soup, Broth)। प्रथमा—यूषः, यूषौ, यूषाः। द्वितीया—यूषम्,
यूषौ, यूषान् यूष्णः। तृतीया—यूषेण यूष्णा, यूषाभ्याम् यूषभ्याम्, यूषैः
यूषभिः। चतुर्थी—यूषाय यूष्णे, यूषाभ्याम् यूषभ्याम्, यूषेभ्यः यूषभ्यः।
पञ्चमी—यूषात् यूष्णः, यूषाभ्याम्, यूषभ्याम्, यूषेभ्यः यूषभ्यः। षष्ठी—
यूषस्य यूष्णः, यूषयोः यूष्णोः, यूषाणाम् यूष्णाम्। सप्तमी—यूषे यूष्णि
यूषणि, यूषयोः यूष्णोः, यूषेषु यूषसु। सम्बोधन—यूष, यूषौ, यूषाः।

शसादि विभक्तियाँ परे रहने से पाद, दन्त मास और यूष शब्दों के
स्थान में विकल्प से क्रमानुसार पद्, दत्, मास् और यूषन् आदेश होता
है। इसलिए इन शब्दों के रूप एकवार गज शब्द के ऐसे होते हैं और
एक वार व्यञ्जनान्त शब्दों के ऐसे होते हैं।

निर्ज (र्ज) र (A god)। शब्द। प्रथमा—निर्जरः, निर्जरौ निर्जरसौ,
निर्जराः निर्जरसः। द्वितीया—निर्जरम् निर्जरसम्, निर्जरौ निर्जरसौ,
निर्जरान् निर्जरसः। तृतीया—निर्जरेण निर्जरसा, निर्जराभ्याम्, निर्जरैः
निर्जरसैः। चतुर्थी—निर्जराय निर्जरसे, निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः। पञ्चमी—
निर्जरात् निर्जरसः, निर्जराभ्याम् निर्जरेभ्यः। षष्ठी—निर्जरस्य निर्जरसः,
निर्जरयोः निर्जरसोः, निर्जराणाम् निर्जरसाम्। सप्तमी—निर्जरे निर्जरसि,
निर्जरयोः निर्जरसोः निर्जरेषु। सम्बोधन—निर्जर, निर्जरौ निर्जरसौ,
निर्जराः निर्जरसः।

किसी किसी वैयाकरण के अनुसार तृतीया के एकवचन में निर्जरसा
न होकर निर्जरसिना होता है और पञ्चमी के एकवचन में निर्जरसः न
होकर निर्जरसात् होता है।

स्वरादि विभक्ति परे रहने से निर्जर शब्द विकल्प से निर्जरस् होता है। इसलिए इसका एक रूप गज शब्द के ऐसा होता है और केवल स्वरादि विभक्तियों में वेघस् शब्द के ऐसे भी होते हैं।

आकारान्त—हाहा (Name of a Gandharva) ।

प्रथमा—हाहाः, हाहौ, हाहाः । द्वितीया—हाहाम्, हाहौ, हाहान् । तृतीया—हाहा, हाहाभ्याम्, हाहाभिः । चतुर्थी—हाहै, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः । पञ्चमी—हाहाः, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः । षष्ठी—हाहाः, हाहोः, हाहाम् । सप्तमी—हाहे, हाहोः, हाहासु । सम्बोधन—हाहौः, हाहौ, हाहाः।

धातु निष्पन्न भिन्न सब पुंलिङ्ग आकारान्त शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं। यहाँ हाहा अव्युत्पन्न गन्धर्व्व-वाचक शब्द है। किन्तु हा शब्द जहातीति हाहा (हा+क्विप्) शब्द का रूप विश्वपा के तुल्य है। ब्राह्मण-वाचक आ शब्द का रूप किसी किसी के मत में गन्धर्व्व-वाचक हाहा के ऐसा और किसी किसी के मत में विश्वपा के ऐसा होता है।

ईकारान्त ।

सेनानी (The leader of an army, A general) ।

प्रथमा—सेनानीः, सेनान्यौ, सेनान्यः । द्वितीया—सेनान्यम्, सेनान्यौ, सेनान्यः । तृतीया—सेनान्या, सेनानीभ्याम्, सेनानीभिः । चतुर्थी—सेनान्ये, सेनानीभ्याम्, सेनानीभ्यः । पञ्चमी—सेनान्यः, सेनानीभ्याम्, सेनानीभ्यः । षष्ठी—सेनान्यः, सेनान्योः, सेनान्याम् । सप्तमी—सेनान्याम्, सेनान्योः, सेनानीषु । सम्बोधन—सेनानीः, सेनान्यौ, सेनान्यः ।

अग्रणी, ग्रामणी प्रभृति शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं। प्रधी (प्रकृष्ट ध्यानकारी) आदि कईएक शब्दों के रूप सेनानी शब्द के तुल्य होते हैं, केवल सप्तमी के एकवचन में प्रध्यि ऐसा पद होता है, इतना ही विशेष है। वातप्रमी (antelope) आदि कईएक शब्दों के रूप सेनानी शब्द के सदृश हैं, केवल द्वितीया के एकवचन में वातप्रमीम् बहुवचन में वातप्रमीन् और सप्तमी के एकवचन में वातप्रमी ऐसे पद होते हैं, इतना ही प्रभेद है। ययी (a horse) और पपी (the sun) शब्दों के रूप वातप्रमी के ऐसे ही हैं। प्रकृष्ट बुद्धि विशिष्ट (Pre-eminently intelligent) अर्थ में प्रधी शब्द के रूप वातप्रमी के तुल्य हैं, जैसे चतुर्थी के एकवचन में प्रध्यै, पञ्चमी के एकवचन में प्रध्याः, षष्ठी के एकवचन में प्रध्याः, बहुवचन में प्रधीनाम्, सप्तमी एकवचन

में प्रध्याम् और सम्बोधन के एकवचन में प्रधी ऐसे रूप होते हैं, इतनी ही विशेषता है।

क्रोष्टु (Jackal) शब्द। प्रथमा—क्रोष्टा, क्रोष्टारौ, क्रोष्टारः। द्वितीया—क्रोष्टारम्, क्रोष्टारौ, क्रोष्टून्। तृतीया—क्रोष्टुना क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभिः। चतुर्थी—क्रोष्टवे क्रोष्ट्रे, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः। पञ्चमी—क्रोष्टोः क्रोष्टुः, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः। षष्ठी—क्रोष्टोः क्रोष्टुः, क्रोष्ट्वोः क्रोष्ट्रोः, क्रोष्टूनाम्। सप्तमी—क्रोष्टौ क्रोष्टरि, क्रोष्ट्वोः क्रोष्ट्रोः, क्रोष्टुषु। सम्बोधन—क्रोष्टो, क्रोष्टारौ, क्रोष्टारः।

मुग्धबोध के अनुसार द्वितीया बहुवचन में क्रोष्टॄन् भी होता है। किन्तु पाणिनि के अनुसार केवल क्रोष्टून् होता है।

ऊकारान्त सुलू (A good cutter)।

प्रथमा—सुलूः, सुल्वौ, सुल्वः। द्वितीया—सुल्वम्, सुल्वौ, सुल्वः। तृतीया—सुल्वा, सुलूभ्याम्, सुलूभिः। चतुर्थी—सुल्वे, सुलूभ्याम्, सुलूभ्यः। पञ्चमी—सुल्वः, सुलूभ्याम्, सुलूभ्यः। षष्ठी—सुल्वः, सुल्वोः, सुल्वाम्। सप्तमी—सुल्वि, सुल्वोः, सुलूषु। सम्बोधन—सुलूः, सुल्वौ, सुल्वः।

खलपू (Sweeper), वर्षाभू (Frog), करभू (Finger nail), कारा-भू, दृन्भू (Snake) प्रभृति शब्दों के भी ऐसे ही रूप होते हैं। हूहू (एक गन्धर्व का नाम) शब्द का रूप सुलू शब्द के तुल्य होता है, केवल द्वितीया के एकवचन में हूहूम् और बहुवचन में हूहून् ऐसे पद होते हैं, इतना ही प्रभेद है।

एकारान्त से "सह इना कामेन वर्त्तते," (One with desire) शब्द। प्रथमा—सेः, सयौ, सयः। द्वितीया—सयम्, सयौ, सयः। तृतीया—सया, सेभ्याम्, सेभिः। चतुर्थी—सये, सेभ्याम्; सेभ्यः। पञ्चमी—सेः, सेभ्याम्, सेभ्यः। षष्ठी—सेः, सयोः, सयाम्। सप्तमी—सयि, सयोः, सेषु। सम्बोधन—से, सयौ, सयः। एकारान्त पुंलिङ्ग शब्द बहुत ही कम हैं।

ऐकारान्त रै (Wealth, Riches) शब्द। प्रथमा—राः, रायौ, रायः। द्वितीया—रायम्, रायौ, रायः। तृतीया—राया, राभ्याम्, राभिः। चतुर्थी—राये, राभ्याम्, राभ्यः। पञ्चमी—रायः, राभ्याम्, राभ्यः। षष्ठी—रायः, रायोः, रायाम्। सप्तमी—रायि, रायोः, रासु। सम्बोधन—राः, रायौ, रायः।

स्वरान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

आकारान्त—द्वितीया, तृतीया, जरा।

द्वितीया और तृतीया शब्दों के रूप लता शब्द के तुल्य हैं, केवल चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के एकवचन में कुछ विशेष होते हैं। यथा—

	चतुर्थी	पञ्चमी	षष्ठी	सप्तमी
द्वितीया	द्वितीयस्यै, द्वितीयायै	द्वितीयस्याः, द्वितीयायाः	द्वितीयस्याः, द्वितीयायाः	द्वितीयस्याम्, द्वितीयायाम्

(तृतीया शब्द के रूप द्वितीया शब्द के समान हैं)

जरा (Old age, General debility)।

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जरा	जरसौ*, जरे	जरसः, जराः
द्वितीया	जरसम्, जराम्	जरसौ*, जरे	जरसः, जराः
तृतीया	जरसा, जरया	जराभ्याम्	जराभिः
चतुर्थी	जरसे, जरायै	जराभ्याम्	जराभ्यः
पञ्चमी	जरसः, जरायाः	जराभ्याम्	जराभ्यः
षष्ठी	जरसः, जरायाः	जरसोः, जरयोः	जरसाम्, जराणाम्
सप्तमी	जरसि, जरायाम्	जरसोः, जरयोः	जरासु
सम्बोधन	जरे	जरसौ*, जरे	जरसः, जराः

* किसी किसी वैयाकरण के अनुसार जरसौ न होकर जरसी होता है।

निशा (Night) शब्द। प्रथमा—निशा, निशे, निशाः। द्वितीया—निशाम्, निशे, निशाः निशः। तृतीया—निशया निशा, निशाभ्याम् निड्भ्याम्, निशाभिः निड्भिः। चतुर्थी—निशायै निशे, निशाभ्याम् निड्भ्याम्, निशाभ्यः निड्भ्यः। पञ्चमी—निशायाः निशः, निशाभ्याम् निड्भ्याम्, निशाभ्यः निड्भ्यः। षष्ठी—निशायाः निशः, निशयोः निशोः, निशानाम् निशाम्। सप्तमी—निशायाम् निशि, निशयोः निशोः, निशासु निट्सु निट्त्सु। सम्बोधन—निशे, निशे, निशाः।

मतान्तर में निज्भ्याम्, निज्भिः, निज्भ्यः, निच्षु ऐसे पद भी होते हैं।

नासिका (Nose) शब्द। प्रथमा—नासिका, नासिके, नासिकाः। द्वितीया—नासिकाम्, नासिके, नासिकाः नसः। तृतीया—नासिकया

नसा, नासिकाभ्याम् नोभ्याम्, नासिकाभिः नोभिः। चतुर्थी—नासिकायै नसे, नासिकाभ्याम् नोभ्याम्, नासिकाभ्यः नोभ्यः। पञ्चमी—नासिकायाः नसः, नासिकाभ्याम् नोभ्याम्, नासिकाभ्यः नोभ्यः। षष्ठी—नासिकायाः नसः, नासिकयोः नसोः, नासिकानाम् नसाम्। सप्तमी—नासिकायाम् नसि, नासिकयोः नसोः, नासिकासु नःसु नस्सु। सम्बोधन—नासिके, नासिके, नासिकाः।

पृतना (Army) शब्द। प्रथमा—पृतना, पृतने, पृतनाः। द्वितीया—पृतनाम्, पृतने, पृतनाः पृतः। तृतीया—पृतनया पृता, पृतनाभ्याम् पृद्भ्याम्, पृतनाभिः पृद्भिः। चतुर्थी—पृतनायै पृते, पृतनाभ्याम् पृद्भ्याम्, पृतनाभ्यः पृद्भ्यः। पञ्चमी—पृतनायाः पृतः, पृतनाभ्याम् पृद्भ्याम्, पृतनाभ्यः पृद्भ्यः। षष्ठी—पृतनायाः पृतः, पृतनयोः पृतोः, पृतनानाम् पृताम्। सप्तमी—पृतनायाम् पृति, पृतनयोः पृतोः, पृतनासु पृत्सु। सम्बोधन—पृतने, पृतने, प्रतनाः।

जरा आदि शब्दों के एक रूप ठीक लता शब्द के तुल्य हैं, दूसरे रूप में कहीं कहीं विशेषता है।

स्वरान्त-क्लीवलिङ्ग (नपुंसक लिङ्ग) शब्द।

अजर (One not getting old) शब्द। प्रथमा—अजरम्, अजरे अजरसी, अजराणि अजरांसि। द्वितीया—अजरम् अजरसम्, अजरे अजरसी, अजराणि अजरांसि, और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग निर्जर शब्द के तुल्य है। मुग्धबोध के अनुसार प्रथमा के एकवचन में अजरसम् भी होता है।

शीर्ष (Head, Summit) शब्द। पाणिनि के अनुसार सभी विभक्तियों में फल शब्द के सदृश किन्तु मुग्धबोध के अनुसार प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में फल शब्द के और दूसरी विभक्तियों में पुंलिङ्ग यूष शब्द के तुल्य है।

हृदय (Heart) शब्द। प्रथमा—हृदयम्, हृदये, हृदयानि। द्वितीया—हृदयम्, हृदये, हृदयानि हृन्दि। तृतीया—हृदयेन हृदा, हृदयाभ्याम् हृद्भ्याम्, हृदयैः हृद्भिः। चतुर्थी—हृदयाय हृदे, हृदयाभ्याम् हृद्भ्याम्, हृदयेभ्यः हृद्भ्यः। पञ्चमी—हृदयात् हृदः, हृदयाभ्याम् हृद्भ्याम्, हृदयेभ्यः हृद्भ्यः। षष्ठी—हृदयस्य हृदः, हृदययोः हृदोः, हृदयानाम् हृदाम्। सप्तमी—हृदये हृदि, हृदययोः हृदोः, हृदयेषु हृत्सु। सम्बोधन—हृदय, हृदये, हृदयानि।

उदक (Water) शब्द। प्रथमा—उदकम्, उदके, उदकानि। द्वितीया—उदकम्, उदके, उदकानि उदानि। तृतीया—उदकेन, उदना, उदकाभ्याम् उदभ्याम्, उदकैः उद्भिः। चतुर्थी—उदकाय उदने, उदकाभ्याम् उदभ्याम्, उदकेभ्यः उदभ्यः। पञ्चमी—उदकात् उदनः, उदकाभ्याम् उदभ्याम्, उदकेभ्यः उदभ्यः। षष्ठी—उदकस्य उदनः; उदकयोः उदनोः, उदकानाम् उदनाम्। सप्तमी—उदके उदनि उदनि, उदकयोः उदनोः, उदकेषु उदसु। सम्बोधन—उदक, उदके, उदकानि।

आसन (Seat) शब्द। प्रथमा—आसनम्, आसने, आसनानि। द्वितीया—आसनम्, आसने, आसनानि आसानि। तृतीया—आसनेन आस्ना, आसनाभ्याम् आसभ्याम्, आसनैः आसभिः। चतुर्थी—आसनाय आस्ने, आसनाभ्याम् आसभ्याम्, आसनेभ्यः आसभ्यः। पञ्चमी—आसनात् आस्नः, आसनाभ्याम् आसभ्याम्, आसनेभ्यः आसभ्यः। षष्ठी—आसनस्य आस्नः, आसनयोः आस्नोः, आसनानाम् आस्नाम्। सप्तमी—आसने आस्नि आसनि, आसनयोः आस्नोः, आसनेषु आससु। सम्बोधन—आसन, आसने, आसनानि।

आस्य (Mouth) शब्द का रूप फल शब्द के ऐसा है, किन्तु सिद्धान्त-कौमुदी के अनुसार शसादि विभक्तियों में आस्य शब्द के स्थान में आसन् आदेश होकर आसन शब्द के विकल्प रूप के पद भी सब होते हैं।

मांस (Flesh) शब्द। प्रथमा—मांसम्, मांसे, मांसानि। द्वितीया—मांसम्, मांसे, मांसानि मांसि। तृतीया—मांसेन मांसा, मांसाभ्याम् मान्भ्याम्, मांसैः मान्भिः। चतुर्थी—मांसाय मांसे, मांसाभ्याम् मान्भ्याम्, मांसेभ्यः मान्भ्यः। पञ्चमी—मांसात् मांसः, मांसाभ्याम् मान्भ्याम्, मांसेभ्यः मान्भ्यः। षष्ठी—मांसस्य मांसः, मांसयोः मांसोः, मांसानाम् मांसाम्। सप्तमी—मांसे मांसि, मांसयोः मांसोः, मांसेषु मान्सु मान्त्सु। सम्बोधन—मांस, मांसे, मांसानि।

सानु (Peak, Summit, Ridge) शब्द। प्रथमा—सानु, सानुनी, सानूनि। द्वितीया—सानु, सानुनी, सानूनि स्नूनि। तृतीया—सानुना स्नुना, सानुभ्याम् स्नुभ्याम्, सानुभिः स्नुभिः। चतुर्थी—सानुने स्नुने, सानुभ्याम् स्नुभ्याम्, सानुभ्यः स्नुभ्यः। पञ्चमी—सानुनः, स्नुनः, सानुभ्याम् स्नुभ्याम्, सानुभ्यः स्नुभ्यः। षष्ठी—सानुनः स्नुनः, सानुनोः स्नुनोः, सानूनाम् स्नूनाम्। सप्तमी सानुनि स्नुनि, सानुनोः स्नुनोः, सानुषु स्नुषु। सम्बोधन—सानो सानु, सानुनी, सानूनि।

दीर्घस्वरान्त क्लीबलिङ्ग शब्द ह्रस्वस्वरान्त हो जाते हैं और उनके रूप ह्रस्वस्वरान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के ऐसे होते हैं। इसलिए क्लीवलिङ्ग आकारान्त शब्द अकारान्त ईकारान्त, शब्द इकारान्त, ऊकारान्त शब्द उकारान्त और विशेष विधान के अनुसार एकारान्त तथा ऐकारान्त शब्द इकारान्त और ओकारान्त तथा औकारान्त शब्द उकारान्त हो जाते हैं। यथा, श्रीपा=श्रीप (रूप फल शब्द के सदृश); सुधी=सुधि (रूप वारि शब्द के तुल्य केवल तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी तथा सप्तमी के एकवचन में यथाक्रम सुधिया, सुधिये, सुधियः, सुधियः, सुधियि और षष्ठी तथा सप्तमी के द्विवचन में सुधियोः और षष्ठी के बहुवचन में सुधियाम् ऐसे विकल्प रूप भी होते हैं, इतनी ही विशेषता है। प्रधी शब्द के रूप सुधी शब्द के तुल्य ही हैं केवल तृतीया के एकवचन में विकल्प रूप प्रध्या प्रधिना होता है, इतना ही अन्तर है। सुरै=सुरि (रूप वारि शब्द के ऐसा); प्रद्यो (Leading to good heaven, *i. e.*, Virtue)=प्रद्यु (रूप मधु शब्द के तुल्य); सुनौ (Having good boats)=(सुनु रूप मधु शब्द के सदृश) किसी किसी वैयाकरण के अनुसार सुधी आदि शब्दों के रूप क्लीवलिङ्ग इकारान्त तथा उकारान्त विशेषण शब्द अनादि और स्वादु के ऐसे होते हैं। प्ररै (Exceedingly wealthy)=प्ररि के रूप में अनादि के रूप से कुछ विशेषता है। यथा, प्रथमा तथा द्वितीया—प्ररि, प्ररिणी, प्ररीणि। तृतीया—प्ररिणा प्ररायाा, प्रराभ्याम्, प्रराभिः। चतुर्थी—प्ररिणे, प्ररायें, प्रराभ्याम्, प्रराभ्यः। पञ्चमी—प्ररिणः प्ररायः, प्रराभ्याम्, प्रराभ्यः। षष्ठी—प्ररिणः प्ररायः, प्ररिणोः प्ररायोः, प्ररीणाम् प्ररायाम्। सप्तमी—प्ररिणि प्ररायि, प्ररिणोः प्ररायोः, प्ररासु। सम्बोधन—प्ररे प्ररि, प्ररिणी, प्ररीणि। पाणिनि के मत में प्ररि के रूप विकल्प रहित वारि के सदृश होते हैं। दूसरे नहीं होते।

दीक्षित के अनुसार षष्ठी के बहुवचन में केवल प्ररीणाम् होता है। प्रद्यो=प्रद्यु के रूप स्वादु के ऐसे हैं केवल तृतीया के एकवचन में प्रद्यवा और षष्ठी के बहुवचन में प्रद्यवाम् ये विकल्प रूपी भी होते हैं। सुनौ=सुनु के रूप मधु शब्द के तुल्य है केवल तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी तथा सप्तमी के एकवचन में विकल्प रूप यथाक्रम सुनावा, सुनावे, सुनावः, सुनावः, सुनावि और षष्ठी तथा सप्तमी के द्विवचन में सुनावोः और षष्ठी के बहुवचन में सुनावाम् भी होते हैं और इतनी ही विशेषता है। पाणिनि के मत में ये रूप नहीं होते केवल मधु के सदृश एक ही होते हैं।

व्यञ्जनान्त पुंलिङ्ग शब्द।

ककारान्त—सर्व्वशक् (Almighty) शब्द। प्रथमा—सर्व्वशक् सर्व्वशग्, सर्व्वशकौ, सर्व्वशकः। द्वितीया—सर्व्वशकम्, सर्व्वशकौ, सर्व्वशकः। तृतीया—सर्व्वशका, सर्व्वशग्भ्याम्, सर्व्वशग्भिः। चतुर्थी—सर्व्वशके, सर्व्वशग्भ्याम्, सर्व्वशग्भ्यः। पञ्चमी—सर्व्वशकः, सर्व्वशग्भ्याम्, सर्व्वशग्भ्यः। षष्ठी—सर्व्वशकः, सर्व्वशकोः, सर्व्वशकाम्। सप्तमी—सर्व्वशकि, सर्व्वशकोः, सर्व्वशक्षु। सम्बोधन—सर्व्वशक् सर्व्वशग्, सर्व्वशकौ, सर्व्वशकः।

खकारान्त—चित्रलिख् (Painter)। प्रथमा—चित्रलिक् चित्रलिग्, चित्रलिखौ, चित्रलिखः। द्वितीया—चित्रलिखम्, चित्रलिखौ, चित्रलिखः। तृतीया—चित्रलिखा, चित्रलिग्भ्याम्, चित्रलिग्भिः। चतुर्थी—चित्रलिखे, चित्रलिग्भ्याम्, चित्रलिग्भ्यः। पञ्चमी—चित्रलिखः, चित्रलिग्भ्याम्, चित्रलिग्भ्यः। षष्ठी—चित्रलिखः, चित्रलिखोः, चित्रलिखाम्। सप्तमी—चित्रलिखि, चित्रलिखोः, चित्रलिक्षु। सम्बोधन—चित्रलिक् चित्रलिग्, चित्रलिखौ, चित्रलिखः।

चकारान्त—प्राच् (East, Eastern)। प्रथमा—प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः। द्वितीया—प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः। सम्बोधन—प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः।

और सब विभक्तियों में जलमुच् शब्द के तुल्य रूप हैं।

प्रत्यच् (West, Western)। प्रथमा—प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः। द्वितीया—प्रत्यञ्चम्, प्रत्यञ्चौ, प्रतीचः। तृतीया—प्रतीचा, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भिः। चतुर्थी—प्रतीचे, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः। पञ्चमी—प्रतीचः, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः। षष्ठी—प्रतीचः, प्रतीचोः, प्रतीचाम्। सप्तमी—प्रतीचि, प्रतीचोः, प्रत्यक्षु। सम्बोधन—प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः।

सध्र्यच् (सह+अञ्च+क्विप्), सम्यच्, अदद्र्यच् आदि शब्दों के रूप प्रत्यच् शब्द के तुल्य हैं। सध्र्यङ्=सहगामी।

अन्वच् (One who follows)। प्रथमा—अन्वङ्, अन्वञ्चौ, अन्वञ्चः। द्वितीया—अन्वञ्चम्, अन्वञ्चौ, अनूचः। तृतीया—अनूचा, अन्वग्भ्याम्, अन्वग्भिः। चतुर्थी—अनूचे, अन्वग्भ्याम्, अन्वग्भ्यः। पञ्चमी—अनूचः, अन्वग्भ्याम्, अन्वग्भ्यः। षष्ठी—अनूचः, अनूचोः, अनूचाम्। सप्तमी—अनूचि, अनूचोः, अन्वक्षु। सम्बोधन—अन्वङ्, अन्वञ्चौ, अन्वञ्चः।

विष्वच् (All-pervading) शब्द के रूप अन्वच् शब्द के तुल्य हैं। अदमुयच् शब्द। प्रथमा—अदमुयङ्, अदमुयञ्चौ, अदमुयञ्चः। द्वितीया—अदमुयञ्चम्, अदमुयञ्चौ, अदमुईचः। तृतीया—अदमुईचा, अदमुयग्भ्याम्.

अदमुयग्भिः इत्यादि। अमुमुयच् शब्द का रूप भी ऐसा ही होता है। द्वितीया के बहुवचन में अमुमुईचः; तृतीया के एकवचन में अमुमुईचा इत्यादि होता है। सुवृश्च् शब्द। प्रथमा—सुवृट्, सुवृश्चौ, सुवृश्चः। द्वितीया—सुवृश्चम्, सुवृश्चौ, सुवृश्चः। तृतीया—सुवृश्चा, सुवृड्भ्याम्, सुवृड्भिः इत्यादि सप्तमी के बहुवचन में सुवृट्सु होता है।

तिर्य्यच् (A beast or bird, moving tortuously)। प्रथमा—तिर्य्यङ्, तिर्य्यञ्चौ, तिर्य्यञ्चः। द्वितीया—तिर्य्यञ्चम्, तिर्य्यञ्चौ, तिरश्चः। तृतीया—तिरश्चा, तिर्य्यग्भ्याम्, तिर्य्यग्भिः। चतुर्थी—तिरश्चे, तिर्य्यग्भ्याम्, तिर्य्यग्भ्यः। पञ्चमी—तिरश्चः, तिर्य्यग्भ्याम्, तिर्य्यग्भ्यः। षष्ठी—तिरश्चः, तिरश्चोः, तिरश्चाम्। सप्तमी—तिरश्चि, तिरश्चोः, तिर्य्यक्षु। सम्बोधन—तिर्य्यङ्, तिर्य्यञ्चौ, तिर्य्यञ्चः।

उदच् (North, Northern)। प्रथमा—उदङ्, उदञ्चौ, उदञ्चः। द्वितीया—उदञ्चम्, उदञ्चौ, उदीचः। तृतीया—उदीचा, उदग्भ्याम्, उदग्भिः। चतुर्थी—उदीचे, उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः। पञ्चमी—उदीचः, उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः। षष्ठी—उदीचः, उदीचोः, उदीचाम्। सप्तमी—उदीचि, उदीचोः, उदक्षु। सम्बोधन—उदङ्, उदञ्चौ, उदञ्चः।

प्राञ्च् (One who worships)। प्रथमा—प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः। द्वितीया—प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः। तृतीया—प्राञ्चा, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भिः। चतुर्थी—प्राञ्चे, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भ्यः। पञ्चमी—प्राञ्चः, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भ्यः। षष्ठी—प्राञ्चः, प्राञ्चोः, प्राञ्चाम्। सप्तमी—प्राञ्चि, प्राञ्चोः, प्राङ्षु। सम्बोधन—प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः।

प्रत्यञ्च्, उदञ्च्, तिर्य्यञ्च्, क्रुञ्च् इत्यादि शब्दों के रूप प्राञ्च् शब्द के तुल्य हैं। सभी चकारान्त पुंलिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग में ईकारान्त होजाते हैं।

जकारान्त—खन्ज् (Lame, Limping)। प्रथमा—खन्, खञ्जौ, खञ्जः। द्वितीया—खञ्जम्, खञ्जौ, खञ्जः। तृतीया—खञ्जा, खन्भ्याम्, खन्भिः। चतुर्थी—खञ्जे, खन्भ्याम्, खन्भ्यः। पञ्चमी—खञ्जः, खन्भ्याम्, खन्भ्यः। षष्ठी—खञ्जः, खञ्जोः, खञ्जाम्। सप्तमी—खञ्जि, खञ्जोः, खन्सु। सम्बोधन—खन्, खञ्जौ, खञ्जः।

भृस्ज् (Frying)। प्रथमा—भृट्, भृज्जौ, भृज्जः। द्वितीया—भृज्जम्, भृज्जौ, भृज्जः। तृतीया—भृज्जा, भृड्भ्याम्, भृड्भिः। चतुर्थी—भृज्जे, भृड्भ्याम्, भृड्भ्यः। पञ्चमी—भृज्जः, भृड्भ्याम्, भृड्भ्यः। षष्ठी—भृज्जः, भृज्जोः, भृज्जाम्। सप्तमी—भृज्जि, भृज्जोः, भृट्सु। सम्बोधन—भृट्, भृज्जौ, भृज्जः।

अवयाज् (Badly sacrificing) । प्रथमा—अवयाः, अवयाजौ, अवयाजः । द्वितीया—अवयाजम्, अवयाजौ, अवयाजः । तृतीया—अवयाजा, अवयोभ्याम्, अवयोभिः । चतुर्थी—अवयाजे, अवयोभ्याम्, अवयोभ्यः । पञ्चमी—अवयाजः, अवयोभ्याम्, अवयोभ्यः । षष्ठी—अवयाजः, अवयाजोः, अवयाजाम् । सप्तमी—अवयाजि, अवयाजोः, अवयःसु (अवयस्सु) । सम्बोधन—अवयाः अवयः, अवयाजौ, अवयाजः ।

दकारान्त—सुपाद् (Having beautiful feet) । प्रथमा—सुपात् सुपाद्, सुपादौ, सुपादः । द्वितीया—सुपादम्, सुपादौ, सुपदः । तृतीया—सुपदा, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भिः । चतुर्थी—सुपदे, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भ्यः । पञ्चमी—सुपदः, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भ्यः । षष्ठी—सुपदः, सुपदोः, सुपदाम् । सप्तमी—सुपदि, सुपदोः, सुपात्सु । सम्बोधन—सुपात् सुपाद्, सुपादौ, सुपादः । द्विपाद्, त्रिपाद्, चतुष्पाद्, व्याघ्रपाद् आदि पाद्-भागान्त समास-निष्पन्न शब्दों के रूप ऐसे ही होते हैं।

पकारान्त—गुप् (One who protects) । प्रथमा—गुप् गुब्, गुपौ, गुपः । द्वितीया—गुपम्, गुपौ, गुपः । तृतीया—गुपा, गुब्भ्याम्, गुब्भिः । चतुर्थी—गुपे, गुब्भ्याम्, गुब्भ्यः । पञ्चमी—गुपः गुब्भ्याम्, गुब्भ्यः । षष्ठी—गुपः, गुपोः, गुपाम् । सप्तमी—गुपि, गुपोः, गुप्सु । सम्बोधन—गुप् गुब्, गुपौ, गुपः ।

मकारान्त प्रशाम् (Tranquil) । प्रथमा—प्रशान्, प्रशामौ, प्रशामः । द्वितीया—प्रशामम्, प्रशामौ, प्रशामः । तृतीया—प्रशामा, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भिः । चतुर्थी—प्रशामे, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः । पञ्चमी—प्रशामः, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः । षष्ठी—प्रशामः, प्रशामोः, प्रशामाम् । सप्तमी—प्रशामि, प्रशामोः, प्रशान्सु । सम्बोधन—प्रशान्, प्रशामौ, प्रशामः ।

षकारान्त—दोष् (An arm) । प्रथमा—दोः, दोषौ, दोषः । द्वितीया—दोषम्, दोषौ, दोषः दोष्णः । तृतीया—दोषा दोष्णा, दोर्भ्याम् दोषभ्याम्, दोर्भिः दोषभिः । चतुर्थी—दोषे दोष्णे, दोर्भ्याम् दोषभ्याम्, दोर्भ्यः दोषभ्यः । पञ्चमी—दोषः दोष्णः, दोर्भ्याम् दोषभ्याम्, दोर्भ्यः दोषभ्यः । षष्ठी—दोषः दोष्णः, दोषोः दोष्णोः, दोषाम् दोष्णाम् । सप्तमी—दोषि दोष्णि दोषणि, दोषोः दोष्णोः, दोःषु दोषसु । सम्बोधन—दोः, दोषौ, दोषः ।

सजुष् (Helping) । प्रथमा—सजूः, सजुषौ, सजुषः । द्वितीया—सजुषम्, सजुषौ, सजुषः । तृतीया—सजुषा, सजूर्भ्याम्, सजूर्भिः । चतुर्थी—सजुषे, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः । पञ्चमी—सजुषः, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः । षष्ठी—

सजुषः, सजुषोः, सजुषाम्। सप्तमी—सजुषि, सजुषोः, सजूःषु। सम्बोधन—सजूः, सजुषौ, सजुषः।

पिपठिष (Wishing to read) शब्द के रूप सजुष् शब्द के ऐसे होते हैं केवल सजुष् के रूप में जहाँ उ और ऊ हैं, पिपठिष् के रूप में वहाँ यथाक्रम इ और ई होते हैं, इतनी ही विशेषता है। यथा, पिपठीः, पिपठिषा, पिपठीर्भिः, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भ्यः पिपठीःषु पिपठीष्षु इत्यादि।

पिपक्ष् (Wishing to cook)। प्रथमा तथा सम्बोधन—पिपक् पिपग्, पिपक्षौ, पिपक्षः। द्वितीया—पिपक्षम्, पिपक्षौ, पिपक्षः। तृतीया—पिपक्षा, पिपग्भ्याम्, पिपग्भिः। चतुर्थी—पिपक्षे, पिपग्भ्याम्, पिपग्भ्यः। पञ्चमी—पिपक्षः, पिपग्भ्याम्, पिपग्भ्यः। षष्ठी—पिपक्षः, पिपक्षोः, पिपक्षाम्, सप्तमी—पिपक्षि, पिपक्षोः पिपक्षु।

गोरक्ष्, विवक्ष्, दिधक्ष् आदि सब क्षकारान्त शब्दों के रूप ऐसे होते हैं। विविक्ष्, लिलिक्ष्, तक्ष्, भक्ष्, आदि शब्दों के रूप भी पिपक्ष् के ऐसे हैं केवल प्रथमा और सम्बोधन के एकवचन में क्ष् के स्थान में ट् और ड् होता है, तथा तृतीया, चतुर्थी और पञ्चमी के द्विवचन और बहुवचन में क्ष् के स्थान में ड् होता है और सप्तमी के बहुवचन में क्ष् के स्थान में ट् होता है, इतनी ही विशेषता है। यथा, विविट्, विविड्, विविड्भ्याम्, विविड्भिः, विविड्भ्यः, विविट्सु इत्यादि।

व्यञ्जनादि विभक्ति सु, भ्याम्, भिस्, भ्यस्, और सुप् परे रहने से शब्द के अन्त में स्थित क्ष् के अन्तर्गत क् ष् वा ढ् के स्थान में जाता हो तो उस क का लोप होता है, अन्यत्र क्ष् के अन्तर्गत ष् का लोप होता है।

शकारान्त—पुरोडाश् (Sacrificial food or oblation)। प्रथमा—पुरोडाः, पुरोडाशौ, पुरोडाशः। द्वितीया—पुरोडाशम्, पुरोडाशौ, पुरोडाशः। तृतीया—पुरोडाशा, पुरोडोभ्याम्, पुरोडोभिः। चतुर्थी—पुरोडाशे, पुरोडोभ्याम्, पुरोडोभ्यः। पञ्चमी—पुरोडाशः, पुरोडोभ्याम्, पुरोडोभ्यः। षष्ठी—पुरोडाशः, पुरोडाशोः, पुरोडाशाम्। सप्तमी—पुरोडाशि, पुरोडाशोः, पुरोडःसु। सम्बोधन—पुरोडाः पुरोडः, पुरोडाशौ, पुरोडाशः।

हकारान्त अनुडुह् (An ox)। प्रथमा—अनड्वान्, अनड्वाहौ, अनड्वाहः। द्वितीया—अनड्वाहम्, अनड्वाहौ, अनडुहः। तृतीया—अनडुहा, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भिः। चतुर्थी—अनडुहे, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः। पञ्चमी—अनडुहः, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः। षष्ठी—अनडुहः, अनडुहोः, अनडुहाम्। सप्तमी—अनडुहि, अनडुहोः, अनडुत्सु। सम्बोधन—अनड्वन्, अनड्वाहौ, अनड्वाहः।

व्यञ्जनान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

शकारान्त—नश् (Destruction)। प्रथमा तथा सम्बोधन—नक् नग् नट् नड्, नशौ, नशः। द्वितीया—नशम्, नशौ, नशः। तृतीया—नशा, नग्भ्याम् नड्भ्याम्, नग्भिः नड्भिः। चतुर्थी—नशे, नग्भ्याम् नड्भ्याम्, नग्भ्यः नड्भ्यः। पञ्चमी—नशः, नग्भ्याम् नड्भ्याम्, नग्भ्यः नड्भ्यः। षष्ठी—नशः, नशोः, नशाम्। सप्तमी—नशि, नशोः, नक्षु नट्सु नट्त्सु।

सकारान्त—आशिस् (Blessing)। प्रथमा-आशीः, आशिषौ, आशिषः। द्वितीया—आशिषम्, आशिषौ, आशिषः। तृतीया—आशिषा, आशीर्भ्याम्, आशीर्भिः। चतुर्थी—आशिषे, आशीर्भ्याम्, आशीर्भ्यः। पञ्चमी—आशिषः, आशीर्भ्याम्, आशीर्भ्यः। षष्ठी—आशिषः, आशिषोः, आशिषाम्। सप्तमी—आशिषि, आशिषोः, आशीःषु। सम्बोधन—आशीः, आशिषौ, आशिषः।

हकारान्त—उपानह् (Shoe)। प्रथमा—उपानत् उपानद्, उपानहौ, उपानहः। द्वितीया—उपानहम्, उपानहौ, उपानहः। तृतीया—उपानहा, उपानद्भ्याम्, उपानद्भिः। चतुर्थी—उपानहे, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः। पञ्चमी—उपानहः, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः। षष्ठी—उपानहः, उपानहोः, उपानहाम्। सप्तमी—उपानहि, उपानहोः, उपानत्सु। सम्बोधन—उपानत् उपानद्, उपानहौ, उपानहः।

व्यञ्जनान्त क्लीवलिङ्ग शब्द।

चकारान्त—प्राच् (East, Eastern)। प्रथमा—प्राक्, प्राची, प्राञ्चि। द्वितीया—प्राक्, प्राची, प्राञ्चि। सम्बोधन—प्राक्, प्राची, प्राञ्चि।

और सब विभक्तियों में जलमुच् शब्द के तुल्य हैं।

प्रत्यच्—(West, Western)। प्रथमा—प्रत्यक्, प्रतीची, प्रत्यञ्चि। द्वितीया—प्रत्यक्, प्रतीची, प्रत्यञ्चि। सम्बोधन—प्रत्यक्, प्रतीची, प्रत्यञ्चि।

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश है।

तिर्य्यच् (Moving tortuously)। प्रथमा—तिर्य्यक्, तिरश्ची, तिर्य्यञ्चि। द्वितीया—तिर्य्यक्, तिरश्ची, तिर्य्यञ्चि। सम्बोधन—तिर्य्यक्, तिरश्ची, तिर्य्यञ्चि।

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश है।

उदच्—(North, Northern)। प्रथमा—उदक्, उदीची, उदञ्चि। द्वितीया—उदक्, उदीची, उदञ्चि। सम्बोधन—उदक्, उदीची, उदञ्चि।

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग के सदृश है।

जकारान्त—असृज्। (Blood)। प्रथमा—असृक्, असृजी, असृञ्जि। द्वितीया—असृक, असृजी, असृञ्जि। सम्बोधन—असृक्, असृजी, असृञ्जि।

और सब विभक्तियों में पुंलिङ्ग वणिज् शब्द के समान रूप होते हैं। प्रायः सब जकारान्त क्लीबलिङ्ग शब्दों के रूप ऐसे ही हैं।

तकारान्त—गच्छत् (Going)। प्रथमा—गच्छत्, गच्छन्ती, गच्छन्ति। द्वितीया—गच्छत्, गच्छन्ती, गच्छन्ति। सम्बोधन—गच्छत्, गच्छन्ती, गच्छन्ति।

इच्छत् (Wishing)। प्रथमा—इच्छत्, इच्छती इच्छन्ती, इच्छन्ति। द्वितीया—इच्छत्, इच्छती, इच्छन्ती, इच्छन्ति। सम्बोधन—इच्छत्, इच्छती इच्छन्ती, इच्छन्ति।

ददत् (Giving)। प्रथमा—ददत्, ददती, ददन्ति ददति। द्वितीया—ददत्, ददती, ददन्ति ददति। सम्बोधन—ददत्, ददती, ददन्ति ददति।

और सब विभक्तियों में इन शब्दों के रूप गायत् शब्द के तुल्य हैं। बहुत से अत् प्रत्ययान्त शब्दों के रूप श्रीमत् शब्द के सदृश हैं। भ्वादिगणीय और दिवादिगणीय धातु के उत्तर अत् प्रत्यय से बने हुए शब्दों के रूप गच्छत् शब्द के समान हैं। तुदादिगणीय और आकारान्त अदादिगणीय धातु के उत्तर अत् प्रत्यय से निष्पन्न शब्दों के रूप इच्छत् शब्द के तुल्य हैं। अभ्यस्त धातु के उत्तर अत् प्रत्यय से बने हुए शब्दों के रूप ददत् शब्द के ऐसे हैं।

दकारान्त—हृद् (Heart)। प्रथमा—हृत् हृद्, हृदी, हृन्दि। द्वितीया—हृत् हृद्, हृदी, हृन्दि। सम्बोधन—हृत् हृद्, हृदी, हृन्दि।

और सब विभक्तियों में सुहृद् शब्द के रूप ऐसे होते हैं।

संख्यावाचक शब्द (Cardinal numerals)।

१। एक शब्द एकवचनान्त, द्वि, द्विवचनान्त और त्रि शब्द से लेकर अष्टादशन् शब्द तक बहुवचनान्त हैं।

२। एक, द्वि, त्रि और चतुर्, इन शब्दों के लिङ्ग परवर्ती विशेष्य के लिङ्ग के अनुसार होते हैं। यथा, एकः पुरुषः, एका नारी, एकं फलम्; द्वौ बालकौ, द्वे स्त्रियौ, द्वे फले; त्रयः पुरुषाः, तिस्रः नार्य्यः, त्रीणि फलानि; चत्वारः पुमांसः, चतस्रः स्त्रियः, चत्वारि फलानि।

३। पञ्चन् शब्द से लेकर अष्टादशन् शब्द तक सभी शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में एक ही प्रकार के हैं। यथा, पञ्च पुरुषाः, पञ्च स्त्रियः, पञ्च फलानि इत्यादि।

४। एकोनविंशति (Nineteen) से लेकर नवनवति (Ninety-nine तक सब संख्यावाचक शब्द सदा एकवचन में व्यवहृत होते हैं।

यथा, विंशतिः पुरुषाः, त्रिंशत् स्त्रियः, चत्वारिंशत् शिशवः, षष्टिर्वृक्षाः, अशीतिः सरांसि । नवतिः पत्राणि इत्यादि ।

५ । शत, सहस्र इत्यादि शब्द नित्य क्लीवलिङ्ग के एकवचन में प्रयोग किये जाते हैं । यथा, शतं पुरुषाः, शतं लताः, सहस्रं फलानि इत्यादि ।

६ । विंशति, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति आदि शब्दों के रूप स्त्रीलिङ्ग मति शब्द के सदृश होते हैं । त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, आदि शब्दों के रूप तकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के ऐसे होते हैं । शत, सहस्र आदि शब्दों के रूप क्लीबलिंग फल शब्द के तुल्य हैं ।

अव्यय शब्द ।

(अतिरिक्त)

१ । कुछ अव्यय शब्द और उनके अँगरेज़ी अर्थ यहाँ दिये जाते हैं, यथा—

स्वर् (Heaven); अन्तरा (Between); पुनर् (Again); प्रातर् (In the morning); उच्चैस् (Loudly, High); नीचैस् (Slowly, low); शनैस् (Slowly); अलम् (Enough); विना, ऋते, अन्तरेण (Except, Without); आरात्, निकषा, समया, समीपम् (Near); चेत्, यदि (If); कच्चित्, कच्चन (What if); यथा (As, Namely); तथा (So); तथाहि (As for instance); खलु (Certainly); किल (Verily, Indeed); युगपत् (At once); पृथक् (Separately); दिवा (By day); सायम् (In the evening); नक्तम् (By night); मनाक्, ईषत् (A little); जोषम्, तूष्णीम् (Silently); बहिस् (Outside); अन्तर् (Inside); स्वयम् (One's self); सहसा (Suddenly); सुष्ठु, सम्यक् (Well); उपांशु (Secretly); मृषा, मिथ्या (Falsely, In vain); मुधा, वृथा (In vain); पुरा (Formerly); मिथो, मिथस् (Secretly, Mutually); अद्य (To-day); ह्यस्, पूर्वेद्युस् (Yesterday); श्वस्, परेद्युस् (To-morrow); प्रायस् (Mostly, Often); मुहुस् (Often, Repeatedly); सह, सार्द्धम्, साकम् (With); यत्, यतस् (Since); तत्, ततस् (Therefore); इति (Thus); न, नो, मा (Not); तु, किन्तु (But); हि (Since, Because); समम् (Equally); धिक् (Fie); अधस्, अधस्तात् (Below, Down); अथ (Then, Afterwards, Now); अथकिम् (Yes); वा, अथवा (Or); एव (Indeed, Only); ध्रुवम्, नूनम् (Certainly); एवम् (Then, So); शश्वत् (Always); भूयस् (Exceedingly, Repeatedly); च (And); इव

(As, Like); हा, अहो, हन्त (Alas ! Ah !); नाम (By name, Indeed); साम्प्रतम् (Proper); यावत् (As long as); तावत् (Till, Then); सकृत् (Once); सपदि (At once); भृशम् (Greatly); द्राक् (Quickly), दिष्ट्या (Luckily); चिरम्, चिरेण, चिराय, चिरात्, चिरस्य (A long time); कथम् (How); कर्हि (When); तर्हि (Then); प्राक् (Before); हे, भोः, अयि, अये, अरे, रे (Used in address); नु, ननु, अपि (Used in question); ननु (Surely).

२। उपसर्ग। प्र (Forth, Forward, Well, Very); परा (Away, Back, Opposed to); अप् (Away, off, opposite to); सम् (Together, Thoroughly); नि (Down, in, Opposed to); अव् (Down, off); अनु (After, Along); निर् (Out of, Forth, Without); दुर् (Bad); वि (Apart, Away); अधि (Over, above); सु (Well); उत् (Up, On, Out); परि (Round, About, On, Every side); प्रति (Again, Back, In opposition to); अभि (To, Of wards); अति (Over, Beyond); अपि (Near to, On); उप् (Near to, Under);- आ (To, Towards, A little)।

अव्, अपि, इन दोनों उपसर्गों के आदिस्थित अकार का विकल्प से लोप होता है। यथा, वगाहः, अवगाहः, वगाहते, अवगाहते, वगाह्य, अवगाह्य; पिधानम्, अपिधानम्; पिहितम्, अपिहितम्।

वष्टि भागुरिरल्लोपमवाप्योरुपसर्गयोः।
आपञ्चैव हलन्तानां यथा वाचा निशा दिशा॥

तिङन्त-प्रकरण (अतिरिक्त)।

धातु विभाग। भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनक्रयादिचुरादयः॥

संस्कृत के सब धातु दश गणों में विभक्त हैं। यथा, भ्वादि (First conjugation), अदादि (Second conjugation), ह्वादि (Third conjugation), दिवादि (Fourth conjugation) स्वादि (Fifth conjugation), तुदादि (Sixth conjugation) रुधादि (Seventh conjugation), तनादि (Eighth conjugation), क्रयादि (Ninth conjugation), चुरादि (Tenth conjugation)।

धातुरूप (अतिरिक्त)।

अद् (खाना, to eat) अदादिगणीय, परस्मैपदी। लट् प्र० पु०—

अत्ति, अत्तः, अदन्ति; म० पु०—अत्सि, अत्थः, अत्थ; उ० पु०—अद्मि, अद्वः, अद्मः। लोट्, प्र० पु०—अत्तु अत्तात्, अत्ताम्, अदन्तु; म० पु०—अद्धि अत्तात्, अत्तम्, अत्त; उ० पु०—अदानि, अदाव, अदाम। लङ्, प्र० पु०—आदत्, आत्ताम्, आदन्; म० पु०—आदः, आत्तम्, आत्त; उ० पु०—आदम्, आद्व, आद्म। विधिलिङ्, प्र० पु०—अद्यात्, अद्याताम्, अद्युः; म० पु०—अद्याः, अद्यातम्, अद्यात; उ० पु०—अद्याम्, अद्याव, अद्याम। लृट्, प्र० पु०—अत्स्यति, अत्स्यतः, अत्स्यन्ति; म० पु०—अत्स्यसि, अत्स्यथः, अत्स्यथ; उ० पु०—अत्स्यामि, अत्स्यावः, अत्स्यामः। लिट्, प्र० पु०—आद, आदतुः, आदुः; म०पु०—आदिथ, आदथुः, आद; उ०पु०—आद, आदिव, आदिम। लिट् में अद्-धातु के स्थान में घस् आदेश होकर प्र० पु०—जघास, जक्षतुः, जक्षुः; म० पु०—जघसिथ, जक्षथुः, जक्ष; उ० पु०—जघास जघस, जक्षिव, जक्षिम। ऐसे रूप भी होते हैं। अद्+क्त=जग्धः, अन्नम्, घासः। अद्+क्त्वा=जग्ध्वा। अद्+तुमुन्=अत्तुम्।

लभ् (लाभ करना, पाना, to gain, to get, to have) भ्वादिगणीय, आत्मनेपदी। लट्, प्र० पु०—लभते, लभेते, लभन्ते; म० पु०—लभसे, लभेथे, लभध्वे; उ० पु०—लभे, लभावहे, लभामहे। लोट्, प्र० पु०—लभताम्, लभेताम्, लभन्ताम्; म० पु०—लभस्व, लभेथाम्, लभध्वम्; उ० पु०—लभै, लभावहै, लभामहै। लङ्, प्र० पु०—अलभत, अलभेताम्, अलभन्त; म० पु०—अलभथाः, अलभेथाम्, अलभध्वम्; उ० पु०—अलभे, अलभावहि, अलभामहि। विधिलिङ्, प्र० पु०—लभेत, लभेयाताम्, लभेरन्; म० पु०—लभेथाः, लभेयाथाम्, लभेध्वम्; उ० पु०—लभेय लभेवहि, लभेमहि। लृट्, प्र० पु०—लप्स्यते, लप्स्येते, लप्स्यन्ते; म० पु०—लप्स्यसे, लप्स्येथे, लप्स्यध्वे; उ० पु०—लप्स्ये, लप्स्यावहे, लप्स्यामहे। लिट्, प्र० पु०—लेभे, लेभाते, लेभिरे; म० पु०—लेभिषे, लेभाथे, लेभिध्वे; उ० पु०—लेभे, लेभिवहे, लेभिमहे।

नी (ले जाना, to lead, to carry off) भ्वादिगणीय, [illegible]भय पदी। लट्—परस्मैपद; प्र० पु०—नयति, नयतः, नयन्[illegible] नयथः, नयथ; उ० पु०—नयामि, नया[illegible]; म० पु०—नयसि, [illegible], नयामः। आत्मनेपद; प्र० पु०—नयते, नयेते, नयन्ते; म० पु०—नयसे, नयेथे, नयध्वे; उ० पु०—नये, नयावहे, नयामहे। लोट्—[illegible]० पद, प्र० पु०—नयतु नयतात्, नयताम्, नयन्तु; म० पु०—[illegible] नयतात्, नयतम्, नयत; उ० पु०—नयानि, नयाव, नयाम। आ० पद, प्र० पु०—नयताम्, नयेताम्, नयन्ताम्; म० पु०—नयस्व, नयेथाम्,

नयध्वम्; उ० पु०—नयै, नयावहै, नयामहै। लङ्—प० पद, प्र० पु०—अनयत्, अनयताम्, अनयन्; म० पु०—अनयः, अनयतम्, अनयत; उ० पु०—अनयम्, अनयाव, अनयाम। आ० पद, प्र० पु०—अनयत, अनयेताम्, अनयन्त; म० पु०—अनयथाः, अनयेथाम्, अनयध्वम्; उ० पु०—अनये, अनयावहि, अनयामहि। विधिलिङ्—प० पद, प्र० पु०—नयेत्, नयेताम्, नयेयुः; म०पु०—नयेः, नयेतम्, नयेत; उ० पु०—नयेयम्, नयेव, नयेम। आ० पद, प्र० पु०—नयेत, नयेयाताम्, नयेरन्; म० पु०—नयेथाः, नयेयाथाम्, नयेध्वम्; उ० पु०—नयेय, नयेवहि, नयेमहि। लृट्—प० पद, प्र० पु०—नेष्यति, नेष्यतः, नेष्यन्ति; म० पु०—नेष्यसि, नेष्यथः, नेष्यथ; उ० पु०—नेष्यामि, नेष्यावः, नेष्यामः। आ० पद, प्र० पु०—नेष्यते, नेष्येते, नेष्यन्ते; म० पु०—नेष्यसे, नेष्येथे, नेष्यध्वे; उ० पु०—नेष्ये, नेष्यावहे, नेष्यामहे। लिट्—प० पद, प्र० पु०—निनाय, निन्यतुः, निन्युः; म० पु०—निनयिथ निनेथ, निन्यथुः, निन्य; उ० पु०—निनाय निनय, निन्यिव, निन्यिम। आ०पद, प्र०पु०—निन्ये, निन्याते, निन्यिरे; म० पु०—निन्यिषे, निन्याथे, निन्यिढ्वे निन्यिध्वे; उ० पु०—निन्ये, निन्यिवहे, निन्यिमहे।

गै (गाना, to sing) भ्वादिगणीय, परस्मैपदी। लट्, प्र० पु०—गायति, गायतः, गायन्ति; म० पु०—गायसि, गायथः, गायथ; उ० पु०—गायामि, गायावः, गायामः। लोट्, प्र० पु०—गायतु गायतात्, गायताम्, गायन्तु; म० पु०—गाय गायतात्, गायतम्, गायत; उ० पु०—गायानि, गायाव, गायाम। लङ्, प्र०पु०—अगायत्, अगायताम्, अगायन्; म० पु०—अगायः, अगायतम्, अगायत; उ० पु०—अगायम्, अगायाव, अगायाम, विधिलिङ्, प्र० पु०—गायेत्, गायेताम्, गायेयुः; म० पु०—गायेः, गायेतम्। गायेत; उ० पु०—गायेयम्, गायेव, गायेम। लृट्, प्र० पु०—गास्यति, गास्यतः, गास्यन्ति; म० पु०—गास्यसि, गास्यथः, गास्यथ; उ० पु०—गास्यामि, गास्यावः, गास्यामः। लिट्, प्र० पु०—जगौ, जगतुः, जगुः; म० पु०—जगिथ जगाथ, जगथुः, जग; उ० पु०—जगौ, जगिव, जगिम।

क्षम् (क्षमा करना, to forgive) भ्वादि, आत्मनेपदी। लट्, प्र०पु०—क्षमते, क्षमेते, क्षमन्ते; म० पु०—क्षमसे, क्षमेथे, क्षमध्वे; उ० पु०—क्षमे, क्षमावहे, क्षमामहे। लोट्, प्र०पु०—क्षमताम्, क्षमेताम्, क्षमन्ताम्; म०पु०—क्षमस्व, क्षमेथाम्, क्षमध्वम्; उ० पु०—क्षमै, क्षमावहै, क्षमामहै। लङ्, प्र० पु०—अक्षमत, अक्षमेताम्, अक्षमन्त; म० पु०—अक्षमथाः, अक्षमेथाम्, अक्षमध्वम्; उ० पु०—अक्षमे, अक्षमावहि, अक्षमामहि। विधिलिङ्

प्र० पु०—क्षमेत, क्षमेयाताम्, क्षमेरन्; म० पु०—क्षमेथाः, क्षमेयाथाम्, क्षमेध्वम्; उ० पु०—क्षमेय, क्षमेवहि, क्षमेमहि। लृट्, प्र० पु०—क्षमिष्यते क्षंस्यते, क्षमिष्येते क्षंस्येते, क्षमिष्यन्ते क्षंस्यन्ते; म० पु०—क्षमिष्यसे क्षंस्यसे, क्षमिष्येथे क्षंस्येथे, क्षमिष्यध्वे; क्षंस्यध्वे; उ० पु०—क्षमिष्ये-क्षंस्ये, क्षमिष्यावहे क्षंस्यावहे, क्षमिष्यामहे क्षंस्यामहे। लिट् प्र० पु०—चक्षमे, चक्षमाते, चक्षमिरे; म० पु०—चक्षमिषे चक्षंसे, चक्षमाथे, चक्षमिध्वे चक्षंध्वे; उ० पु०—चक्षमे, चक्षमिवहे चक्षण्वहे, चक्षमिमहे चक्षण्महे।

धातुरूपादर्श

कुछ प्रचलित धातु (रूप—लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लृट्, लिट् के क्रम से)।

अङ्क—भ्वादि, आ० पदी— to mark. अङ्कते। अङ्कताम्। आङ्कत। अङ्केत। अङ्किष्यते। आनङ्के।

अञ्च्—भ्वादि, प० पदी to worship. अञ्चति। अञ्चतु। आञ्चत्। अञ्चेत्। अञ्चिष्यति। आनञ्च, आनञ्चतुः, आनञ्चुः; आनञ्चिथ, आनञ्चथुः, आनञ्चः; आनञ्च, आनञ्चिव, आनञ्चिम।

अट्—भ्वादि, प० पदी— to go, to roam. अटति। अटतु। आटत्। अटेत्। अटिष्यति। आट, आटतुः, आटुः; आटिथ, आटथुः, आट इत्यादि।

अद् तथा अस्—अदादि, प० पदी। पुस्तक में देखो।

अर्च्—भ्वा० प०—to worship. अर्चति। अर्चतु। आर्चत्। अर्चेत्। अर्चिष्यति। आनर्च। चुरादि, प० पदी—अर्चयति। अर्चयतु। आर्चयत्। अर्चयेत्। अर्चयिष्यति। अर्चयाञ्चकार-अर्चयामास-अर्चयाम्बभूव।

अर्ज्—भ्वा० प०—to earn, to procure. अर्जति। अर्जतु। आर्जत्। अर्जेत्। अर्जिष्यति। आनर्ज। चुरादि, प०—अर्जयति इत्यादि like अर्च् चुरादि।

अर्ह्—भ्वा० प०—to deserve, to worship. अर्हति। अर्हतु। आर्हत्। अर्हेत्। अर्हिष्यत। आनर्ह।

अव्—भ्वा० प०—to protect. अवति। अवतु। आवत्। अवेत्। अविष्यति। आव, आवतुः; आवुः; आविथ इत्यादि।

आप्—स्वादि, प० पदी—to obtain. See प्र+आप् in the book.

इ—अदादि प० पदी—to go. लट्—एति, इतः, यन्ति; एषि, इथः, इथ; एमि, इवः, इमः। लोट्—एतु, इताम्, यन्तु; इहि, इतम्, इत; अयानि, अयाव, अयाम। लङ्—ऐत्, ऐताम्, आयन्; ऐः ऐतम्, ऐत; आयम्, ऐव,

ऐम । विधिलिङ्—इयात्, इयाताम्, इयुः, इयाः, इयातम्, इयात; इयाम्, इयाव, इयाम । लृट्—एष्यति, एष्यतः, एष्यन्ति इत्यादि । लिट्—इयाय, ईयतुः, ईयुः; इययिथ-इयेथ, ईयथुः, ईय; इयाय-इयय, ईयिव, ईयिम । उत्+इ (to rise)—उदेति इत्यादि । अभि+इ (to obtain) । अभि+उत्+इ (to prosper) । अप+इ (to go away) । अभि+उप+इ (to arrive) । प्रति+इ (to trust) । अधि+इ (to read) आत्मनेपदी—अधीते, अधीयाते, अधीयते, अधीषे, अधीयाथे, अधीध्वे; अधीये, अधीवहे, अधीमहे । अधीताम् इत्यादि । अध्यैत इत्यादि । अधीयीत इत्यादि । अध्येष्यते इत्यादि । अधिजगे इत्यादि ।

इष्—तुदादि, प० पदी—to wish. See the book.

ईक्ष्—भ्वादि, आ० पदी—to see, to look at. ईक्षते । ईक्षताम् । ऐक्षत । ईक्षेत । ईक्षिष्यते । ईक्षाञ्चक्रे-ईक्षाम्बभूव-ईक्षामास । अप+ईक्ष् (to expcet), अभि+ईक्ष् (to gaze at) अव+ईक्ष् (to inspect); उत्+ईक्ष् (to expect, to await); निर्+ईक्ष् (to see); परि+ईक्ष् (to examine); सम्+ईक्ष् (to compare); प्रति+ईक्ष् (to expect); प्र+ईक्ष (to see); उप+ईक्ष् (to neglect, to abandon) ।

ईह—भ्वादि, आ० प०—to aim at, to try. ईहते । ईहताम् । ऐहत । ईहेत । ईहिष्यते । ईहाञ्चक्रे-ईहाम्बभूव-ईहामास ।

ऋध्—दिवादि, प० प०—to prosper, to please. ऋध्यति । ऋध्यतु । आर्ध्यत् । ऋध्येत् । अर्धिष्यति । आनर्ध, आनृधतुः, अनृधुः; आनर्धिथ ।

कथ्—चुरादि प० प०—to tell. कथयति । कथयतु । अकथयत् । कथयेत् । कथयिष्यति । कथयामास ।

कम्प्—भ्वादि, आ० प०—to shake; to tremble. कम्पते । कम्पताम् । अकम्पत । कम्पेत । कम्पिष्यते । चकम्पे ।

काङ्क्ष्—भ्वादि, प० प०—to desire, to wish. काङ्क्षति । काङ्क्षतु । अकाङ्क्षत् । काङ्क्षेत् । काङ्क्षिष्यति । चकाङ्क्ष, चकाङ्क्षिथ इत्यादि ।

काश्—भ्वादि, आ० प०—to shine. काशते । काशताम् । अकाशत । काशेत । काशिष्यते । चकाशे ।

कास्—भ्वादि, आ० प०—to cough. कासते । कासताम् । अकासत । कासेत । कासिष्यते । चकासे-कासाञ्चक्रे ।

कुप्—दिवादि प० प०—to be angry. कुप्यति । कुप्यतु । अकुप्यत् ।

कुप्येत्। कोपिष्यति। चुकोप, चुकुपतुः, चुकुपुः; चुकोपिथ, चुकुपथुः, चुकुप; चुकोप, चुकुपिव, चुकुपिम।

कूज्—भ्वादि, प० प०—to make an inarticulate sound, to coo. कूजति। कूजतु। अकूजत्। कूजेत्। कूजिष्यति। चुकूज।

कृ—तनादि, उ० प०—to do. See the book.

कृत्—तुदादि, प० प०—to cut. कृन्तति। कृन्ततु। अकृन्तत्। कृन्तेत् कर्त्स्यति-कर्तिष्यति। चकर्त्त, चकृततुः चकृतुः; चकर्तिथ इत्यादि।

कृष्—भ्वादि, प० प०—to draw, to pull, to plough. कर्षति। कर्षतु। अकर्षत्। कर्षेत्। कर्क्ष्यति-क्रक्ष्यति। चकर्ष, चकृषतुः, चकृषुः; चकर्षिथ इत्यादि। अप+कृष् (to draw down) अव+कृष् (to draw out) आ+कृष् (to attract); उत्+कृष् (to raise, to draw up); सम्+कृष् (to draw together) सङ्कर्षति इत्यादि; सम्+नि+कृष् (to draw near) सन्निकर्षति इत्यादि।

क्रन्द्—भ्वादि, प० प०—to cry, to weep. क्रन्दति। क्रन्दतु। अक्रन्दत्। क्रन्देत्। क्रन्दिष्यति। चक्रन्द; चक्रन्दिथ इत्यादि।

क्रम्—भ्वादि, प० प०—to step, to walk, क्रामति-क्राम्यति। क्रामतु-क्राम्यतु, अक्रामत्-अक्राम्यत्, क्रामेत्-क्राम्येत्, क्रमिष्यति, चक्राम, चक्रमतुः, चक्रमुः; चक्रमिथ, चक्रमथुः, चक्रम; चक्राम-चक्रम, चक्रमिव, चक्रमिम। "वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः" वृत्ति unobstruction, सर्ग energy, तायन increase इन अर्थों में क्रम्-धातु केवल आ० पदी होता है। इन तीनों अर्थों में ही उप तथा परा पूर्वक क्रम-धातु केवल आ० पदी होता है। इन तीनों अर्थों में ही उप तथा परा पूर्वक क्रम-धातु केवल आ० प० होता है किन्तु उप+क्रम् (to begin) उपक्रामति, परा+क्रम (to display prowess)। For this root see my Hindi Edition of Vyakaran Kaumudi II & III, 246-248, rules 328-332 with foot notes.

क्री—क्र्यादि, उ० प०—to purchase. क्रीणाति, क्रीणीतः, क्रीणन्ति, क्रीणासि, क्रीणीथः, क्रीणीथ; क्रीणामि, क्रीणीवः, क्रीणीमः। क्रीणीते, क्रीणाते, क्रीणते; क्रीणीषे, क्रीणाथे, क्रीणीध्वे; क्रीणे, क्रीणीवहे, क्रीणीमहे। क्रीणातु, क्रीणीताम्। अक्रीणात्, अक्रीणीत। क्रीणीयात्, क्रीणीत। क्रेष्यति, क्रेष्यते। चिक्राय, चिक्रियतुः, चिक्रियुः चिक्रयिथ-चिक्रेथ, चिक्रियथुः, चिक्रिय; चिक्राय-चिक्रय, चिक्रियिव, चिक्रियिम। चिक्रिये, चिक्रियाते इत्यादि।

क्रीड्—भ्वादि, प० प०— to play. क्रीडति। क्रीडतु। अक्रीडत्। क्रीडेत्। क्रीडिष्यति। चिक्रीड।

क्षर् (to flow), क्षल् (to wash—भ्वादि, प० प०—क्षरति, क्षलति इत्यादि; क्षरिष्यति, क्षलिष्यति; चक्षार, चक्षाल। क्षल् (to wash) चुरादि, प० प०—क्षालयति इत्यादि।

क्षि (to decay)—भ्वा० प० प०—क्षयति। क्षयतु। अक्षयत्। क्षयेत्। क्षेष्यति। चिक्षाय, चिक्षियतुः; चिक्षयिथ-चिक्षेथ, चिक्षिय; चिक्षाय, चिक्षियिव इत्यादि।

क्षिप् (to throw) दिवादि, प० प०—क्षिप्यति। क्षिप्यतु। अक्षिप्यत्। क्षिप्येत्। क्षेप्स्यति। चिक्षेप।

क्षुभ् (to disturb) भ्वादि, आ० प०—क्षोभते। क्षोभताम्। अक्षोभत्। क्षोभेत। क्षोभिष्यते। चुक्षुभे।

खण्ड् (to break)—चुरादि, प० प०—खण्डयति। खण्डयतु। अखण्डयत्। खण्डयेत्। खण्डयिष्यति। खण्डयामास।

खन् (to dig)—भ्वादि, उ० प०—खनति, खनते। खनतु, खनताम्। अखनत्, अखनत। खनेत्, खनेत। खनिष्यति, खनिष्यते। चखान, चख्नतुः, चखनिथ; चखान-चखन; चख्निव इत्यादि। चख्ने, चख्निषे, चख्निध्वे; चख्निवहे इत्यादि।

खाद् (to eat)—भ्वादि, प० प०—खादति। खादतु। अखादत्। खादेत्। खादिष्यति। चखाद; चखादिथ इत्यादि।

गण् (to count) चुरादि, प० प०—गणयति। गणयतु। अगणयत्। अगणत्। गणयेत्। गणयिष्यति। गणयामास।

गद् (to speak, to say)—भ्वादि, प० प०—गदति। गदतु। अगदत्। गदेत्। गदिष्यति। जगाद।

गम् (to go)—भ्वादि, प० प० and ग्रह् (to take) क्र्यादि, उ० प० See book.

गर्ज् (to roar)—भ्वादि, प० प०—गर्जति। गर्जतु। अगर्जत्। गर्जेत्। गर्जिष्यति। जगर्ज।

गाह् (to bathe, to dive into)—भ्वादि, आ० प०—गाहते। गाहताम्। अगाहत। गाहेत। गाहिष्यते-घाक्ष्यते। जगाहे, जगाहिषे-जघाक्षे, जगाहिध्वे-जघाढ्वे, जगाहिवहे-जगाह्वहे, जगाहिमहे-जगाह्महे इत्यादि।

गॄ (to devour, to swallow) तुदादि, प० प०—गिरति-गिलति। गिरतु गिलतु। अगिरत्-अगिलत्। गिरेत्-गिलेत्। गरिष्यति-गरीष्यति-गलिष्यति-गलीष्यति। जगार-जगाल, जगरतु जगलतुः, जगरुः—जगलुः; जगरिथ-जगलिथ इत्यादि।

गै (to sing)—भ्वादि, प० प०—गायति। गायतु। अगायत्। गायेत्। गास्यति। जगौ, जगतुः, जगुः, जगिथ-जगाथ, जगथुः, जग, जगौ, जगिव, जगिम।

ग्रस् (to swallow, to eat)—भ्वादि, आ० प०—ग्रसते। ग्रसताम्। अग्रसत। ग्रसेत। ग्रसिष्यते। जग्रसे।

घट् (to happen)—भ्वादि, आ० प०—घटते। घटताम्। अघटत। घटेत। घटिष्यते। जघटे। चुरादि, प० प०—(to collect, to gather) घटयति इत्यादि। लृट्—घटयिष्यति। लिट्—घटयामास इत्यादि।

घुष् (to sound, to declare)—भ्वादि, प० प०—घोषति। घोषतु। अघोषत्। घोषेत्। घोषिष्यति। जुघोष। चुरादि, प० प०—to proclaim aloud. घोषयति। घोषयतु। अघोषयत्। घोषयेत्। घोषयिष्यति। घोषयामास-घोषयाञ्चकार-घोषयाम्बभूव-घोषयाञ्चक्रे।

घ्रा (to smell)—भ्वादि, प० प०—जिघ्रति। जिघ्रतु। अजिघ्रत्। जिघ्रेत्। घ्रास्यति। जघ्रौ, जघ्रतुः, जघ्रुः; जघ्रिथ-जघ्राथ इत्यादि।

चर् (to walk)—भ्वादि, प० प०—चरति। चरतु। अचरत्। चरेत्। चरिष्यति। चचार। आ+चर् (to behave, to practise a duty), अनु+चर् (to attend, to follow); अति+आ+चर् (to transgress) अत्याचरति; परि+चर् (to serve); वि+अभि+चर् (to go astray) व्यभिचरति; सम्+चर् (to accompany) सञ्चरति, (to ride upon) रथेन-सञ्चरते; सम्+आ+चर् (to perform) समाचरति।

चल् (काँपना, to shake, चलना to walk, to move) भ्वादि, प० प०—चलति। चलतु। अचलत्। चलेत्। चलिष्यति। चचाल।

चर्व् (to chew) भ्वादि, प० प०—चर्वति। चर्वतु। अचर्वत्। चर्वेत्। चर्विष्यति। चचर्व।

चि (to collect) स्वादि, उ० प०—चिनोति-चिनुते। चिनोतु-चिनुताम्। अचिनोत्-अचिनुत। चिनुयात्-चिन्वीत। चेष्यति-चेष्यते। चिकाय-चिचाय, चिक्ये-चिच्ये।

चिन्त् (to think) चुरादि, प० प०—चिन्तयति। चिन्तयतु। अचिन्तयत्। चिन्तयेत्। चिन्तयिष्यति-चिन्तिष्यति। चिन्तयामास इत्यादि।

चुम्ब् (to kiss) भ्वादि, प० प०—चुम्बति। चुम्बतु। अचुम्बत्। चुम्बेत्। चुम्बिष्यति। चुचुम्ब।

चुर् (to steal, to rob) चुरादि, उ० प०—चोरयति-ते। चोरयतु-ताम्। अचोरयत्-त। चोरयेत्-त। चोरयिष्यति-ते। चोरयामास-चोरयाञ्चकार-चोरयाम्बभूव-चोरयाञ्चक्रे।

चेष्ट् (to try, to make efforts) भ्वादि, आ० प०—चेष्टते। चेष्टताम्। अचेष्टत। चेष्टेत। चेष्टिष्यते। चिचेष्टे।

जन् (to be born) दिवादि, आ० प०—जायते। जायताम्। अजायत। जायेत। जनिष्यते। जज्ञे।

जप् (to mutter, to repeat in mind) भ्वादि, प० प०—जपति। जपतु। अजपत्। जपेत्। जपिष्यति। जजाप, जेपतुः, जेपुः इत्यादि।

जि (to conquer) भ्वादि, प० प०—जयति। जयतु। अजयत्। जयेत्। जेष्यति। जिगाय-जिग्यतुः, जिग्युः; जिगयिथ-जिगेथ, जिग्यथुः, जिग्य; जिगाय, जिग्यिव, जिग्यिम।

जीव् (to live) भ्वादि, प० प०—जीवति। जीवतु। अजीवत्। जीवेत्। जीविष्यति। जिजीव।

जॄ (to grow old) दिवादि, प० प०—जीर्यति जीर्यतु। अजीर्यत्-जीर्येत्। जरिष्यति-जरीष्यति। जजार, जजरतुः जेरतुः, जजरुः-जेरुः; जजरिथ-जेरिथ, जजरथुः-जेरथुः, जजर-जेर; जजार-जजर, जजरिव-जेरिव, जजरिम-जेरिम।

ज्ञा (to know) क्र्यादि, उ० प०—for परस्मैपद see the book. आ० प०—लट्—जानीते, जानाते, जानते; जानीषे, जानाथे, जानीध्वे; जाने, जानीवहे, जानीमहे। लोट्—जानीताम्, जानाताम्, जानताम्; जानीष्व, जानाथाम्, जानीध्वम्; जानै, जानावहै, जानामहै। लङ्—अजानीत, अजानाताम्, अजानत; अजानीथाः; अजानाथाम्, अजानी-

ध्वम्, अजानि, अजानीवहि, अजानीमहि । विधिलिङ्—जानीत, जानीयाताम् इत्यादि । लृट्—ज्ञास्यते, ज्ञास्येते इत्यादि । लिट्—जज्ञे, जज्ञाते, जज्ञिरे; जज्ञिषे, जज्ञाथे, जज्ञिध्वे; जज्ञे, जज्ञिवहे, जज्ञिमहे । अनु+ज्ञा (to assent, to order); अप+ज्ञा (to conceal); अव+ज्ञा (to disrespect); परि+ज्ञा (to asertain); प्र+ज्ञा (to know well); वि+ज्ञा (to discriminate); सम्+ज्ञा (to recollect) प्रति+ज्ञा and अभि+ज्ञा (to recognise) ।

ज्वल् (to burn, to glow) भ्वादि, प० प० ज्वलति । ज्वलतु । अज्वलत् । ज्वलेत् । ज्वलिष्यति । जज्वाल; जज्वलतुः, जज्वलुः; जज्वलिथ इत्यादि ।

तप् (to shine, to heat) भ्वादि, प० प०—तपति । तपतु । अतपत् । तपेत् । तप्स्यति । तताप, तेपतुः, तेपुः; तेपिथ-ततप्थ, तेपथुः, तेप; तताप, तेपिव, तेपिम । परि+तप् (to repent); सम्+तप् (to be sorrowful); अनु+तप् (to repent, to regret) आ० पा०—अनुतपते ।

तुष् (to be satisfied or pleased) दिवादि, प० प०—तुष्यति । तुष्यतु । अतुष्यत । तुष्येत् । तोक्ष्यति । तुतोष, तुतुषतुः, तुतुषुः; तुतोषिथ इत्यादि ।

तॄ (to cross) भ्वादि, प० प०—तरति । तरतु । अतरत् । तरेत् । तरिष्यति-तरीष्यति । ततार, तेरतुः तेरुः; तेरिथ, तेरथुः, तेर; ततार, तेरिव, तेरिम । अव+तॄ (to come down, to descend); आ+तॄ (to cross by a boat); निर्+तॄ (to obtain salvation) निस्तरति; वि+तॄ (to give away); सम्+तॄ (to swim); उद्+तॄ (to answer, to pass over) उत्तरति ।

त्यज् (to give up, to leave, to abandon) भ्वादि, प० प०—See the book.

त्रै (to protect) भ्वादि, आ० प०—त्रायते । त्रायताम् । अत्रायत । त्रायेत । त्रास्यते । तत्रे, तत्राते, तत्रिरे, तत्रिषे इत्यादि ।

त्वर् (to hurry, to hasten) भ्वादि, आ० प०—त्वरते । त्वरताम् । अत्वरत । त्वरेत । त्वरिष्यते । तत्वरे, तत्वराते, तत्वरिरे; तत्वरिषे इत्यादि ।

दण्ड् (to punish) चुरादि, प० प०-दण्डयति । दण्डयतु । अदण्डयत् । दण्डयेत् । दण्डयिष्यति दण्डयामास इत्यादि ।

दन्श् (to bite, to sting) भ्वादि, प० प०—दशति । दशतु । अदशत् । दशेत् । दंक्ष्यति । ददंश ।

दय् (to pity) भ्वादि, आ० प०—दयते । दयताम् । अदयत । दयेत । दयिष्यते । दयाञ्चक्रे इत्यादि ।

दह् (to burn, to pain) भ्वादि, प० प०—दहति । दहतु । अदहत् । दहेत् । धक्ष्यति । ददाह, देहतुः, देहुः, देहिथ-ददग्ध इत्यादि ।

दा (to give) ह्वादि, उ० प०—Given in the book. भ्वादि, प० प०—यच्छति । यच्छतु । अयच्छत् । यच्छेत् । दास्यति । ददौ ।

दृश् (to see) भ्वादि, प० प०—See the book.

धाव् (to run, to wash, to flow) भ्वादि, उ० प०—धावति-ते । धावतु-ताम् । अधावत्-त । धावेत्-त । धाविष्यति-ते । दधाव; दधाविथ । इत्यादि; दधावे इत्यादि ।

धृ (to hold, to bear) भ्वादि, उ० प०—धरति-ते, धरतु-ताम् । अधरत्-त । धरेत्-त । धरिष्यति-ते । दधार, दध्रतुः, दध्रुः; दधर्थ इत्यादि; दध्रे, दध्राते, दध्रिरे; दध्रिषे इत्यादि ।

धे (to suck) भ्वादि, प० प०—धयति । धयतु । अधयत् । धयेत् । धास्यति । दधौ, दधतुः, दधुः; दधिथ इत्यादि ।

ध्यै (to ponder over, to meditate, to think of) भ्वादि, प० प०—ध्यायति । ध्यायतु । अध्यायत् । ध्यायेत् । ध्यास्यति । दध्यौ । दध्यतुः, दध्युः; दध्यिथ इत्यादि ।

नट् (to dance, to act) भ्वादि, प० प०—नटति । नटतु । अनटत् । नटेत् । नटिष्यति । ननाट ।

नन्द् (to be pleased, to rejoice) भ्वादि, प० प०—नन्दति । नन्दतु । अनन्दत् । नन्देत् । नन्दिष्यति । ननन्द । अभि+नन्द् (to welcome).

नम् (to salute, to bend) भ्वादि, प० प०—नमति । नमतु । अनमत् । नमेत् । नंस्यति । ननाम, नेमतुः, नेमुः नेमिथ-ननन्थ इत्यादि ।

नश् (to perish) दिवादि, प० प०—नश्यति । नश्यतु । अनश्यत् । नश्येत् । नशिष्यति-नङ्क्ष्यति । ननाश, नेशतुः, नेशुः; नेशिथ-ननंष्ठ, नेशथुः, नेश; ननाश-ननश, नेशिव-नेश्व, नेशिम-नेश्म ।

निन्द् (to blame) भ्वादि, प० प०—निन्दति । निन्दतु । अनिन्दत् । निन्देत्; निन्दिष्यति । निनिन्द ।

नी (to lead, to carry off, to settle) भ्वा०, उ० प०—See the book. अनु+नी (to entreat); अप+नी (to remove); अभि+नी (to indicate by signs); आ+नी (to bring); उद्+नी (to raise up) उन्नयति-ते; उप+नी (to approach, to invest with the sacred thread); दुर्+नी (to behave wickedly); निर्+नी (to obtain, to ascertain) निर्णयति; परि+नी (to marry); प्र+नी (to love); वि+नी (to be humble or modest); वि+अप+नी (to remove) व्यपनयति; सम्+नी (to collect).

पच् (to cook, to digest, to bake) भ्वादि, उ० प०—पचति-ते। पचतु-ताम्। अपचत्-त। पचेत्-त। पक्ष्यति-ते। पपाच, पेचतुः, पेचिथ, पपक्थ इत्यादि।

पठ् (to read) भ्वादि, प० प०—पठति। पठतु। अपठत्। पठेत्। पठिष्यति। पपाठ, पेठतुः, पेठिथ इत्यादि।

पत् (to fall, to alight, to fly) भ्वादि, प० प०—See the book. अति+पत् (to surpass); अभि+पत्; and अव+पत् (to descend); आ+पत् (to come); उत्+पत् (to ascend); नि+पत् (to happen, to fall down) परि+पत् (to go fast); प्र+नि+पत् (to salute); सम+पत् (to go with); सम्+उत्+पत् (to fly).

पा (to drink) भ्वादि, प० प०, प्रच्छ् (to ask) तुदादि, प० प०—See the book.

पूज् (to adore) चुरादि, प० प०—पूजयति। पूजियतु। अपूजयत्। पूजयेत्। पूजयिष्यति। पूजयामास।

बाध् (to oppress, to torment, to thwart) भ्वादि, आ० प०—बाधते। बाधताम्। अबाधत। बाधेत। बाधियष्ते। बबाधे।

बुध् (to know) भ्वादि, उ० प०—बोधति-ते। बोधतु-ताम्। अबोधत्-त। बोधेत्-त। भोत्स्यति-ते। बुबोध, बुबुधे।

ब्रू (to speak) अदादि, उ० प०, भक्ष् (to eat) चुरादि, प० प०, भू (to be, to exist) भ्वादि, प० प०—See the book.

भज् (to share, to worship, to honour) भ्वादि, उ० प०—भजति-ते। भजतु-ताम्। अभजत्-त। भजेत्-त; भक्ष्यति-ते। बभाज, भेजे।

भर्त्स् (to abuse, to menace or threaten) चुरादि, आ० प०—भर्त्सयते। भर्त्सयताम्। अभर्त्सयत। भर्त्सयेत। भर्त्सयिष्यते। भर्त्सयाञ्चक्रे।

भाष् (to say, to speak) भ्वादि, आ० प०—भाषते। भाषताम्। अभाषत। भाषेत। भाषिष्यते। बभाषे, बभाषिरे, बभाषिषे इत्यादि।

भिक्ष् (to beg) भ्वादि, आ० प०—भिक्षते। भिक्षताम्। अभिक्षत। भिक्षेत। भिक्षिष्यते। बिभिक्षे।

भृ (to fill, to nourish) भ्वादि, उ० प०—भरति-ते। भरतु-ताम्। अभरत्-त। भरेत्-त। भरिष्यति-ते। बभार-बभ्रे (like कृ)।

भ्रंश् (to fall, to decline) भ्वादि, आ० प०—भ्रंशते। भ्रंशताम्। अभ्रंशत। भ्रंशेत। भ्रंशिष्यते। बभ्रंशे। भ्रंस् (to fall down) भ्वादि, आ० प० like भ्रंश्।

भ्रम् (to roam) भ्वादि, प० प०—भ्रमति। भ्रमतु। अभ्रमत्। भ्रमेत्। भ्रमिष्यति। बभ्राम।

मण्ड् (to decorate, to adorn) भ्वादि, प० प०—मण्डति। मण्डतु। अमण्डत्। मण्डेत्। मण्डिष्यति। ममण्ड। चुरादि, प० प०—मण्डयति इत्यादि।

मुण्ड् (to shave) भ्वादि, प० प०—मुण्डति। मुण्डतु। अमुण्डत्। मुण्डेत्। मुण्डिष्यति। मुमुण्ड।

मुद् (to rejoice, to be glad) भ्वादि, आ० प०—मोदते। मोदताम्, अमोदत। मोदेत। मोदिष्यते। मुमुदे।

मृ (to die, to perish) तुदादि, आ० प०—म्रियते। म्रियताम्। अम्रियत। म्रियेत। प० प० in लृट् and लिट्। मरिष्यति। ममार, मम्रतुः, मम्रुः; ममर्थ, मम्रथुः, मम्र; ममार, मम्रिव, मम्रिम।

यज् (to sacrifice) भ्वादि, उ० प०—यजति-ते। यजतु-ताम्। अयजत्-त। यजेत्-त। यक्ष्यति-ते। इयाज-ईजे।

यत् (to try, to strive after, to labour) भ्वादि, आ० प०—यतते। यतताम्। अयतत। यतेत। यतिष्यते। येते। येताते, येतिरे; येतिषे इत्यादि।

याच् (to beg) भ्वादि, उ० प०—याचति-ते। याचतु-ताम्। अयाचत्-त। याचेत्-त। याचिष्यति-ते। ययाच-चे।

रक्ष् (to protect) भ्वादि, प० प०—रक्षति। रक्षतु। अरक्षत्। रक्षेत्। रक्षिष्यति। ररक्ष।

रुद् (to cry, to weep) अदादि, प० प०—See the book.

रुह (to grow, to increase, to rise) भ्वादि, प० प०—रोहति। रोहतु। अरोहत। रोहेत्। रोक्ष्यति। रुरोह, रुरुहतुः, रुरोहिथ इत्यादि।